RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 MAY 2019

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

▶▶ अंक-11 (मासिक) ▶▶ वर्ष - 14 ▶▶ मई 2019 ▶▶ मूल्य 20/-

श्री माहेश्वरी टाईम्स

गणगौर विशेषांक

गौर-गौर गोमती...

गणगौर से की अखण्ड सौभाग्य की कामना

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हुआ अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन

लौहार्गल धाम में बनेगा भव्य मंदिर

पंजीयन प्रारंभ

श्री माहेश्वरी मेलापक

श्री माहेश्वरी मेलापक-2019 का प्रकाशन शीघ्र

JCKM

SHRI JAICHANDLAL KARWA MAHESHWARI HOSTEL DELHI

UPSC CIVIL SERVICES

JCKM HOSTEL BOYS

JCKM HOSTEL GRILS

FACILITIES

- Boys Hostel - 18 triple sharing rooms for 54 students
- Girls Hostel - 14 double sharing rooms for 28 students
- All AC Rooms with attached bath, beds, cabinet & study table
- Centrally located with 5-10 min access to Metro Station
- Vegetarian mess serving home like meals
- Modern amenities like Wifi, Library & Study Room, Power Backup, Laundry
- Lift & Seminar Hall at Boys Hostel
- Safe & Secure with CCTV, Biometric Access, Security Guard
- Scholarship & Financial Assistance

ADMISSION OPEN

Email to admission@jckmhostel.com OR
Whatsapp to 9871568822 with
your Name/ Town/ Mobile No/ Email ID
to receive Application Form.
Call **9313017966 / 9871568822** for details

1 - 2 JUNE 2019
GRAND INAUGURATION

Nand Kishore Karwa (Chairman)	Kishan Gopal Somani (Managing Trustee)	Rajendra Kabra (Secretary)	Brij Mohan Rathi (Treasurer)

A B MAHESHWARI EDUCATIONAL TRUST

www.jckmhostel.com; info@jckmhostel.com

JCKM HOSTEL FOR BOYS
22, Balraj Khanna Marg, West Patel Nagar,
New Delhi 110008

JCKM HOSTEL FOR GIRLS
1/1, Faiz/Rohtak Road Crossing, Karol Bagh,
New Delhi 110005

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-11 मई 2019 वर्ष-14

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

अतिथि सम्पादक
डॉ. सौ. सूरज माहेश्वरी, जोधपुर

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

विचार क्रान्ति

दुर्योधन का अंतिम-संदेश!

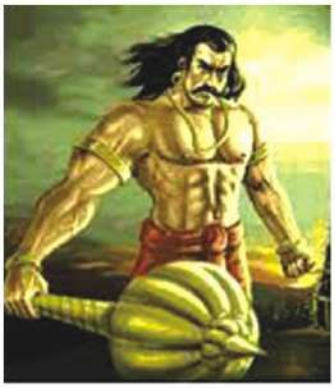

यह समस्या आजकल अधिकांश घरों में देखी जा सकती है। नए युग में नई पीढ़ी के नए बच्चे प्रायः स्वयंभू-से बन रहे है। वे सही निर्णय करें तब तो शुभ है किंतु अधिक छूट और अनदेखी में कुसंगत में पड़कर गलत राह निकल पड़े तो घर के बड़ों को तत्काल समझाना चाहिए। इसलिए कि जो माता-पिता सही समय पर समझाइश देने से चूक जाते हैं वे बाद में पछताते हैं। जो सन्तान समय रहते बुजुर्गों की अनुभव से भरी बातों की अनसुनी करती है वह आगे चलकर उन्हीं हितकारी उपदेशों का स्मरण कर हाथ मलती है। महाभारत में दुर्योधन और धृतराष्ट्र इसके साक्षात उदाहरण हैं।

महाभारत युद्ध के अंतिम दिन सूर्यास्त से पहले ही कौरवों की समूची ग्यारह अक्षोहिणी सेना का विनाश हो गया था। बचे तीन कौरव महारथी कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा पहले ही रणभूमि से भाग चुके थे। पाण्डवों के सेनापति धृष्टद्युम्न ने देखा रणभूमि में कौरव राज दुर्योधन अकेला हो गया था। 'एकाकी भरतश्रेष्ठ ततो दुर्योधनो नृपः!'

समरभूमि में अपने किसी सहायक को न देखकर दुर्योधन अपने मरे हुए घोड़ों को वहीं छोड़कर भय के मारे पूर्व दिशा की ओर भाग चला।

वेदव्यास लिखते हैं, 'वह पैदल थोड़ी ही दूर चला होगा कि उसे' सस्मार वचनं क्षत्तुर्धर्मशीलस्य धीमतः!' धर्मशील बुद्धिमान विदुरजी की पूर्वकाल में कही हुई बातें याद आने लगी। दुर्योधन ने पहली बार मन में माना कि क्षत्रियों के इस महासंहार को महाज्ञानी विदुरजी ने पहले ही देख और समझ लिया था। जब एक कोस पैदल चल लेने पर दुर्योधन ने रणभूमि से हस्तिनापुर की दिशा में जाते सूत संजय को देखा तो फूट-फूटकर रो पड़ा।

उसने संजय का हाथ पकड़ा और बारम्बार लम्बी सांसें खींचते हुए अपने पिता धृतराष्ट्र के लिए अंतिम संदेश दिया। बोला कि हे संजय! मेरे प्रज्ञाचक्षु पिता से कहना 'मेरा सब छीन गया है। मेरे सारे सम्बन्धियों का नाश हो गया। अतः अब मेरी जीने की इच्छा समाप्त हो गई है। मैं कल फिर युद्ध करूँगा। उसमें या तो अपने शत्रुओं को मार डालूँगा या फिर रणभूमि में अपने प्राणों का त्याग कर क्षत्रिय धर्म का निर्वहन करूँगा।'

इतना कह संजय से विदा ले दुर्योधन घायलावस्था के कारण विश्राम कर फिर युद्ध करने के इरादे से सरोवर में जा छुपा। युद्ध के अठाहरवें दिन देर शाम संजय हस्तिनापुर पहुँचा और दुर्योधन का 'अंतिम-संदेश' जस का तस धृतराष्ट्र को सुना दिया। तब अंधे राजन् दुःख से अत्यंत व्याकुल होकर बिलख पड़े। कहने लगे 'मेरा जो पुत्र सम्पूर्ण जगत का नाथ था, वहीं अनाथ की भाँति एकमात्र गदा लिए युद्धस्थल में पैदल खड़ा था। इसे भाग्य के सिवा और क्या कहा जा सकता है? 'अहो दुःखं महत् प्राप्तं पुत्रेण मम संजय। हाय! मेरे पुत्र ने भारी दुःख उठाया।'

पूरी महाभारत में पहली बार इसी मोड़ पर आकर दुर्योधन को सही और गलत का अंतर समझ में आया और इसी कारण महात्मा विदुरजी की कही बातें भी सत्य प्रतीत हुई। अपने लोभी, दम्भी, उद्दंड, अनियंत्रित और स्वयंभू पुत्र को न समझा पाए, पिता धृतराष्ट्र भी आज आँसू बहा रहे थे।

साधो! महाभारत में बार-बार अलग-अलग ढंग से यह सूत्र सीखाने की कोशिश की गई है कि बच्चे भटके तो उन्हें सम्भाल लो और बड़े कहे तो बच्चे मान लें। अन्यथा एक दिन अभागे अभिभावकों को अभागे पुत्रों का अंतिम संदेश सुनना ही पड़ता है।

डॉ. विवेक चौरसिया, उज्जैन

सम्पादकीय

पर्व-त्योहार संस्कृति की धड़कन

हमारी शरीर का अस्तित्व धड़कन से है, तो हमारी संस्कृति और सभ्यता का 'पर्व' 'त्योहारों' से। पर्व-त्योहारों में गुथी संस्कृति ही हमारी पहचान है जो अस्तित्व को भी जीवंत रखे हुए हैं। इस जीवंतता को बनाए रखने वाले पर्व त्योहारों के भीतर ही आपसी सद्भाव, स्नेह, प्रेम और एकजुटता की महीन रगों में रुधिर की तरह बहने वाली यह परंपराएं यदि किसी भी तरह से क्षतिग्रस्त होती हैं, तो उससे उत्पन्न अवरोध संस्कृति को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इस अंक को हमने गणगौर के बहाने माहेश्वरी संस्कृति में फैलते इस प्रदूषण की तरफ समान का ध्यान खींचने की कोशिश की है। इस प्रयास में हमने समाज के सुधिजनों को भी शामिल किया है ताकि इस प्रयास को सफलता तक पहुंचाया जा सके। हमारे पूर्वजों ने समाज को जोड़े रखने और उसमें खिलखिलाते रंग बिखरने के लिए पर्व त्योहारों को मनाने की जो परंपराएं तय, उनमें किसी तरह के सुधार की रंज मात्र भी गुंजाइश नहीं है। लेकिन मौजूदा दौर में इन पर्व त्योहारों के पारंपरिक स्वरूप में बदलाव का चलन सा शुरू हो गया है। इनके मूल स्वरूप को दिखावे और आधुनिक तौर-तरीकों से जोड़ा जाने लगा है। नतीजा इनकी आत्मीय और अध्यात्मिक दोनों धाराएं नष्ट होती जा रही हैं। दिखावे के चलते जो पर्व-त्योहार हमें एक दूसरे के करीब लाते थे, वे हमारे ही बीच दूरी बढ़ाने के कारण बन रहे हैं और जिनसे हमारे मन मस्तिष्क को रिलेक्स मिलता था, उसकी जगह तनाव ने ले ली। इससे इन पर्व त्योहारों को मनाने का मकसद ही खो गया है। हमें नई पीढ़ी को यह धरोहरें सौंपते वक्त फिर से यह विचार करना होगा कि हमें जो परंपराएं अपने पूर्वजों से मिली, हमने उन्हें कहीं दूषित तो नहीं कर दिया? यदि ऐसा कुछ हमसे जाने-अनजाने हुआ है तो उसको मौलिक स्वरूप के साथ हम अपनी नई पीढ़ी को सौंपे। तभी हम अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक से कर पाएंगे।

इन दिनों देश आम चुनावों की गहमागहमी में लिपटा है। कहीं मतदान हो गया, तो कहीं तैयारी है। यह आम चुनाव एक बार फिर मतदाताओं को कसौटी पर ले आया है। राजनीति और लोकतंत्र की अस्मिता और दिशा तो मतदाताओं का फैसला ही तय करता है। आम चुनाव को लेकर राजनीतिक दलों की जंग जारी है। इस जंग में इस बार सोशल मीडिया को जिस तरह हथियार बनाया गया और जाति-धर्म को जिस तरह रणक्षेत्र में बदल गया है, इस परिवर्तन ने चुनाव की दशा और दिशा ही बदल दी है। देश का विकास आम आदमी के जीवन स्तर को बढ़ाने, नई पीढ़ी के भविष्य को संवारने, उद्योग, व्यापार, खेती और शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दे सबकुछ चुनावी माहौल में गुम से नजर आते हैं। ऐसे में देश की नई सरकार चुनने में मतदाताओं की जागरूकता ही सबसे महत्वपूर्ण है। हमारे युवा किस तरह का देश चाहते हैं, इसका अनुमान हम सब को लगाना होगा। भारत का भविष्य क्या होगा? यह हमारे वोट से तय होगा। इसलिए मतदान की अनिवार्यता और जागरूकता दोनों जरूरी है। माहेश्वरी समाज ने सदैव देश को तरक्की की ओर ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस चुनाव में भी हमारा समाज जागरूक मतदाता की भूमिका निभाएगा, यह उम्मीद ही नहीं हमारा विश्वास भी है। गुजारिश यही है, अपना मतदान अवश्य करें।

यह अंक हमेशा की तरह सभी स्थायी स्तंभों, आलेखों, रचनाओं के साथ प्रस्तुत है। अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराना न भूलें। जय महेश!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

जोधपुर निवासी डॉ. भरत माहेश्वरी की धर्मपत्नी डॉ. सौ. सूरज माहेश्वरी व्यावसायिक रूप से ख्यात डेंटल सर्जन हैं, जिनकी कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेषज्ञता है। आप 28 वर्षों से माहेश्वरी डेंटल केयर सेंटर के माध्यम से अपनी सेवा देती हुईं संगठन इंडियन डेंटल एसोसिएन (IDA जोधपुर) की अध्यक्ष भी रही हैं। आपकी इन विशिष्ट सेवाओं के बावजूद आपकी पहचान सिर्फ चिकित्सा क्षेत्र तक सीमित नहीं रही हैं। आपकी कविता लेखन, रंगोली व पाक कला के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान के साथ आपकी एक मानवता से ओत-प्रोत समाजसेवी के रूप में भी विशिष्ट छवि है। अभी तक आप लगभग 900 फ्री मेडिकल एवं डेंटल कैंप आयोजित कर चुकी हैं। विद्यालय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रत्येक माह एक दंत चिकित्सा शिविर पिछले दस वर्षों से आयोजित कर रही हैं। जोधपुर जिला माहेश्वरी महिला मण्डल-सह-सचिव तथा मरुधर अंध विद्यालय संस्थान, परित्यक्त बच्चों के नवजीवन संस्थान, एड्स पीड़ित बच्चों परित्यक्त बच्चों की देखभाल करने वाले बाल बसेरा संस्थान तथा रोटरी इंटरनेशनल एवं जेसीआई क्लब आदि की सक्रिय सदस्य हैं। पिछड़े क्षेत्रों के बालिका विद्यालय में सतत परामर्श दे रही हैं। परिवार परिवेदना प्रकोष्ठ के तत्वावधान में विधुर, विधवा, उम्रदराज आदि युवक-युवतियों के परिचय सम्मेलन का आयोजन आपकी विशिष्ट उपलब्धि है। देश की कई ख्यात सामाजिक पत्रिकाओं में सामाजिक विषयों पर आपके आलेख प्रकाशित होते रहे हैं।

शैले-शैले न माणिक्यम् मौक्तिकं न गजे-गजे...

लोक विख्यात संत तुलसी की पंक्तियां 'मुखिया मुख सो चाहिए खान पान को एक, पाले पौसे सकल अंग तुलसी सहित विवेक अर्थात मुखिया मुख की तरह होना चाहिए, जो प्राशन तो अकेला करता है पर सभी अंगों का समान रूप से पोषण करता है, संगठन की महत्ता पर सटीक लागू होती हैं। संगठन में भी नेतृत्व की यही भूमिका है। गंगोत्री की तरह अगर हमारा शिखर नेतृत्व, निर्मल, प्रेरणादायी है तो इंजिन के पीछे चले आ रहे डब्बों की तरह अन्य स्वतः शिखर का अनुसरण कर लेंगे। महामना गांधी के शब्द 'मेरा आचरण ही मेरा उपदेश है' आज विश्वभर में नेतृत्व की अहम पंक्तियां बन गए हैं। इस उदाहरण में हम हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जीवन चरित को जोड़ सकते हैं। पहले नेतृत्व स्वयं उदाहरण पेश करें, अन्य स्वतः उन्हें नजीर बनाएंगे। यह स्वाभाविक है। आज समाज में अनेक कुरीतियां, गलत परंपराएं हैं एवं नेतृत्व अगर गंभीर है तो इन विषमताओं को जड़ से मिटाया जा सकता है।

मुझे खुशी है कि हमारे नेतृत्व ने ऐसा किया भी है। आज महासभा का नेतृत्व गांव-गांव तक अपने सुधार कार्यक्रमों को पहुंचा रहा है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के अत्यंत अनुकूल परिणाम आए हैं। यह महासभा का ही दूरगामी चिंतन था कि हाल ही में जोधपुर में संपन्न हुए 'माहेश्वरी ग्लोबल कन्वेंशन' में दूर-दूर से आए माहेश्वरियों ने अपने व्यावसायिक पांडालों में न सिर्फ कुरीतियों को दूर करने के स्लोगन लगाए, यह भी बताया कि वे तकनीकी स्तर पर अन्य किसी से कम नहीं हैं, वरन अव्वल हैं। इस कन्वेंशन में हमने सिद्ध किया कि संख्यात्मक रूप से हम भले कम हों, गुणवत्ता में किसी से कम नहीं हैं। यहां संस्कृत का एक श्लोक उद्धृत करना लाजमी होगा- शैले-शैले न माणिक्यम् मौक्तिमं न गजे-गजे, साधवो न ही सर्वत्र चंदनम् न वने-वने'' अर्थात हर पर्वत पर माणिक नहीं मिलते, हर हाथी के मस्तक में मोती नहीं होते, सर्वत्र चंदन भी नहीं होता। इसी तरह माहेश्वरी भी कम हैं पर दुर्लभ हैं। इसी के चलते अनेक बार मुझे माहेश्वरी होने पर गर्व होता है। देश में कौनसा ऐसा लोकोपकारी कार्य है जिसमें माहेश्वरियों ने अनुदान नहीं दिया है। मुझे ख्यात उद्योगपति श्री जीडी बिरला के उस विश्वविख्यात पत्र के अंश याद हो आए हैं, जहां वे कहते हैं 'खूब अर्जन करो, फिर-फिर विर्सजन के लिए'। लोकोपकार हमारा मूल स्वर ही नहीं, अहम ध्येय भी है।

संगठन मजबूत हो इसके लिए आवश्यक है कि व्यावसायेत्तर प्रतिभाओं जैसे खिलाड़ी, साहित्यकार, पत्रकार, कला एवं प्रशासन क्षेत्र के लोगों का भी समय-समय पर सम्मान करें। अंततः यह प्रतिभाएं ही हमारे कार्यों का सेतु बनेंगी। हमारे मंच भी पारदर्शी हों जहां धन-बल की बजाए प्रतिभा का वर्चस्व हो। समाज की बगिया महकती रहे यह तभी संभव है, जब प्रतिभा का अनादर न हो। हम हमारे क्रियाकलापों में युवा पीढ़ी एवं नारी शक्ति की सहभागिता भी सुनिश्चित करें। इससे ऊर्जा का समग्र एवं सकारात्मक ध्रुवीकरण होगा। त्योहार हमारी परंपरा, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के द्योतक हैं। समय आ गया है जब हम इनकी प्रासंगिकता, सामाजिकता एवं आधुनिकता पर भी चिंतन-मनन करें। हमारे त्योहार कल और आज का दिलफरेब मेल हों। हम त्योहारों के मूल संदेश चाहे करवाचौथ हो, गणगौर होली अथवा दीवाली हो, को भी न भूलें एवं इसमें आधुनिकता का छोंक इस तरह दें कि त्योहार नीरस एवं उबाऊ न बनें। हर पीढ़ी की, हर युग की एक लय-ताल-वैवलेंथ होती है, हमें हर त्योहार में लय को प्रतिनिधित्व करना होगा, अन्यथा आज की पीढ़ी इसे दरकिनार कर देगी।

आप सभी को पुनः जयश्रीकृष्ण। हम अच्छा सोचेंगे तो अच्छा पाएंगे ही। हमारे परंपराओं में छिपे आडंबरों की सियाही भी इसी से मिटेगी। संपादकीय के अंत में मुझे एक शेर याद हो आया है जो इसी कर्मठता को सुदृढ़ करने का संदेश देता है-

मेरे जुनून का नतीजा जरूर निकलेगा
इसी स्याह समुंदर से नूर निकलेगा।

आप सभी को जयश्री कृष्णा।

डॉ. सौ. सूरज माहेश्वरी
अतिथि संपादक

श्री आशापुरा माताजी

श्री आशापुरा माताजी (आशापूर्णा) माहेश्वरी समाज की चांडक, तापड़िया, मोहता, भंडारी, भैया, मल एवं टावरी खांप की कुलदेवी हैं।

आशापुरा माताजी भव्य मंदिर पोकरण नगर से तीन किलोमीटर पश्चिम में पोकरण बायपास सड़क पर जिला जैसलमेर से तीन किलोमीटर दूर स्थित है। इसके इतिहास के बारे बताते हुए पुजारी श्री पुखराज बिस्सा ने बताया श्री माताजी गुजरात प्रांत के कच्छ-भुज क्षेत्र से पोकरण आई। बताते हैं बिस्सा कुल के महापुरुष श्री लुणमानजी बिस्सा माताजी के परम भक्त थे। वे अपनी योग साधना से नित्य माताजी के दर्शन करने के पश्चात भोजन ग्रहण करते थे। उनकी वृद्धावस्था होने पर उन्होंने माताजी से प्रार्थना की कि अब नित्य आना संभव नहीं है। अतः मेरा संकल्प अधूरा रह जाएगा। माताजी ने भक्त की पीड़ा समझकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर मांगने को कहा। बिस्साजी ने भाव-विभोर होकर कहा आप मेरे साथ मेरे गांव चलें। माताजी ने चलने का वचन दिया और बदले में एक वचन भी लिया कि आगे-आगे आप चलें मैं पीछे आ रही हूं जहाँ भी पीछे मुड़कर देख लोगे वहां से आगे नहीं चलूंगी। बिस्साजी आश्वस्त होकर माताजी को लेकर रवाना हुए। पोकरण के पास आते-आते उनको माताजी की पायल की झनकार सुनाई देना बंद हो गई तो उनका धैर्य जवाब दे गया उनको लगा माताजी शायद पीछे नहीं आ रही है और उन्होंने पीछे मुड़कर देख लिया। बस माताजी ने बिस्साजी से कहा मेरा स्थान यहीं रहेगा। (अगर भौगोलिक स्थिति पर गौर करें तो लगता है यहां धैर्य टूट सकता है।) मंदिर में अखंड ज्योत लंबे समय से जल रही है। यहां की व्यवस्था दान पेटी से प्राप्त राशि से होती है। मंदिर में आवास व्यवस्था के लिए बीस कमरे उपलब्ध हैं। सारी व्यवस्था बिस्तर बर्तन के साथ उपलब्ध है। इसी के साथ बीकानेर के लोगों द्वारा एक बड़ी धर्मशाला का निर्माण हुआ है जिसमें लगभग 50 कमरे हैं, जहां पर सभी सुविधा उपलब्ध है। दर्शनार्थियों के लिये शुद्ध सात्विक भोजन की सुविधा न्यूनतम दर पर है।

विशेष आयोजन

मंदिर में पूजन प्रतिदिन प्रातः 6 बजे एवं आरती प्रातः 8 बजे होती है। प्रातः की आरती का समय निश्चित है लेकिन सायंकाल की आरती सूर्यास्त के अनुसार होती है। सालभर में दोनों नवरात्रि पर दुर्गापाठ, हवन एवं भंडारा होता है जिसमें आसपास के लोगों यहां आते हैं।

कैसे पहुंचें आशापुरा माताजी

पोकरण शहर राजस्थान के जोधपुर से सड़क मार्ग से 170 किलोमीटर, जैसलमेर से 100 किमी, रामदेवरा से 20 किमी दूरी पर स्थित है। यहां से माताजी का मंदिर पोकरण शहर से बायपास सड़क पर स्थित है। आशापुर माता मंदिर आशापुरा गोमठ-जैसलमेर रेलवे लाइन से तीन किलोमीटर दूर स्थित हैं। मंदिर परिसर में टेलीफोन लगा हुआ है जिसका नंबर 02994-241147 है।

गवर-ईशर से की अखंड सौभाग्य की कामना

माहेश्वरी महिला मंडलों के बैनर तले समाज की महिलाओं ने राजस्थानी संस्कृति से ओत-प्रोत गणगौर पर्व का रंगारंग आयोजन किया। 16 दिवसीय आयोजन के साथ शोभायात्रा निकालकर महिलाओं ने गवर (गौरी) व ईशर (शिवजी) से अखंड सौभाग्य की कामना की।

पुरस्कृत चित्र

राधिका झंवर

यीवू शहर (चाइना). गत 8 अप्रैल को यीवु शहर (चाइना) में भी धूमधाम से गणगौर पूजन कर गणगौर पर्व मनाया गया। गिरधर झंवर के घर पर उनकी पत्नी राधिका झंवर, अनुज की पत्नी मीनल झंवर के साथ माहेश्वरी समाज की अनुश्री दुजारी एवं अग्रवाल समाज की भी कुछ महिलाएं प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी साथ में गणगौर पूजन के लिए आईं।

भुसावल. श्री माहेश्वरी महिला मंडल भुसावल की ओर से गणगौर उत्सव में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें राजस्थानी गणगौर गीत ग्रुप डांस, घूमर व गौर की कहानी के माध्यम से नाटिका प्रस्तुत की गई। प्रायोजक वीणा लाहोटी, संगीता बियानी, मंडल अध्यक्ष जयश्री भराड़िया, सचिव वीणा झंवर, पद्मा दरगड़, भारती राठी आदि थीं। कार्यक्रम में प्रदेशाध्यक्ष ज्योत्सना लाहोटी व जलगांव जिलाध्यक्ष सुनीता चरखा उपस्थित थे। चित्रा झंवर की ओर से सभी को मेहंदी के कोन दिए गए।

परतुर. शहर की राजस्थानी महिला मंडल द्वारा गणगौर का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। इसके अंतर्गत गवर-ईशरजी की सामूहिक रूप से पूजाकर अखंड सौभाग्य की कामना की गई।

इंदौर. दुर्गामाता मंदिर बख्तावर राम नगर से प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शीतला सप्तमी पर गणगौर चल समारोह निकाला गया। संयोजक अर्चना भूतड़ा ने बताया कि चल समारोह में 300 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। चल समारोह का विभिन्न जगह पर स्वागत किया गया। सदस्यों को बधाई के रूप में पूजन सामग्री चंद्रकांता हेड़ा व शिखा लखोटिया द्वारा वितरित की गई। ईसरजी के रूप में चेतना लखोटिया व पार्वती के रूप में बिंदु हेड़ा मौजूद थीं। सीतादेवी हेड़ा, माहेश्वरी समाज संयोगितागंज महिला मंडल की अध्यक्ष सुनीता लड्ढा, साधना मंडोवरा, हेमा बियानी, मंजू काकानी, अलका शारदा, रजनी सोमानी, निर्मला भुराड़िया, सुमन सोनी आदि चल समारोह में शामिल थीं।

बीकानेर. श्री बीकानेर माहेश्वरी महिला समिति का गणगौर उत्सव 2019 रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ स्थानीय नृसिंह भवन में मनाया गया। समाज के संवाददाता पवन राठी ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बाबूलाल मोहता थे। महिला समिति संरक्षिका किरण झंवर, श्रीया राठी व सरला लोहिया ने बताया कि गणगौर यात्रा की जगह-जगह पर अनेक माहेश्वरी सामाजिक संस्थाओं द्वारा शीतल पेय पदार्थ पिलाकर अगवानी की गई। सांस्कृतिक मंत्री अंजू लोहिया व विभा बिहाणी ने बताया कि कोरियोग्राफर रुचिका बागड़ी के निर्देशन में रंगारंग सांस्कृतिक झलकियां प्रस्तुत की गईं। विशेष सहयोग देने वाली कार्यकर्ताओं रुचिका बागड़ी (कोरियोग्राफर), स्वीटी झंवर (राष्ट्रपति स्कॉलरशिप प्राप्त), रेणु बिहाणी (मंच संचालन) व पवन राठी (संवाददाता माहेश्वरी समाज) को स्मृति चिह्न भेंट किए गये।

उज्जैन. जिला माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में 16 दिवस तक चलने वाला त्योहार गणगौर पर्व मनोरंजक रूप में मनाया गया। इस अवसर पर जिला माहेश्वरी महिला संगठन की स्थानीय सदस्याओं ने गणगौर ईशरजी का धूमधाम से बाना निकाल कर झाले वारने लिए। इनको पति का नाम दोहे में लेकर पानी पिलाने की रस्म पूर्ण की गई। इस अवसर पर गणगौर के गीतों की एवं नवसंवत्सर पर स्लोगन की प्रतियोगिता आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी महिला संगठन की संगीता भूतड़ा, उषा सोडानी, सीमा परवाल, आरती राठी, कृष्णा जाजू, मंगला बांगड़ आदि का विशेष सहयोग रहा। उक्त जानकारी उषा सोडानी ने दी।

राजोद. माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा नगर में फूलपाती का आयोजन किया गया। महिला मंडल द्वारा गणगौर माता को लेकर नरसिंह मंदिर से नगर के मुख्य मार्गों पर जुलूस निकाला गया।

उज्जैन. समाज की वरिष्ठ उषा सोडानी ने परिवार की देवरानी-जेठानियों का जोड़ा बनाकर गणगौर पूजन के गीत गाए। इसके बाद गणगौर का सामूहिक पूजन कर अखंड सौभाग्य की कामना की गई।

वर्धा. माहेश्वरी महिला मंडल की नई कार्यकारिणी द्वारा गणगौर उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी महिला मंडल एवं नवयुवती मंडल द्वारा अंताक्षरी स्पर्धा का आयोजन किया गया। साथ ही नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। इस संपूर्ण आयोजन में 50 से अधिक महिलाओं एवं युवतियों ने राजस्थानी थीम में हिस्सा लिया। मंच संचालन नवयुवती मंडल सचिव दिव्या जितेंद्र मोहता ने किया। महिला मंडल अध्यक्ष हर्षा परमानंद टावरी, सचिव दीपा टावरी, नवयुवती मंडल विजेता पनपालिया, सचिव दिव्या मोहता, नेहा भूतड़ा, वंदना भूतड़ा सहित समस्त सदस्याओं का योगदान रहा।

रायपुर. स्थानीय माहेश्वरी सभा द्वारा पारंपरिक पर्व गणगौर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभा के प्रचार-प्रसार प्रभारी सूरजप्रकाश राठी ने बताया कि सभाध्यक्ष संपत काबरा व कार्यक्रम संयोजक शिवरतन सादानी के नेतृत्व में गणगौर की गरिमामयी शोभायात्रा निकाली गई। मार्ग में अनेक स्थानों पर माता श्री गवरजा व श्री इसरदेव का स्वागत पुष्पहार व खोल भरकर किया गया। शोभायात्रा में पूर्वाध्यक्ष विजय दम्मानी, संपत काबरा, गोपाललाल राठी, कमल राठी, शिवरतन सादानी, राजकुमार राठी (बैरनबाजार), सूरजरतन मोहता, सुरेश बागड़ी, सूरजप्रकाश राठी, ज्योति राठी (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), उषा मोहता, मधुरिका नत्थानी, संगीता चांडक, प्रगति कोठारी, प्रतिभा नत्थानी, शशि काबरा, शशि बागड़ी आदि कई गणमान्यजन शामिल थे।

बूंदी. जैतसागर रोड़ स्थित माहेश्वरी भवन में श्री माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से आयोजित गणगौर महोत्सव में नई पीढ़ी ने पुराने गीतों पर नृत्य कर पुरानी यादों को ताजा कर दिया व राजस्थानी गीतों पर समूह नृत्य किया। महिलाओं से गणगौर से संबंधित प्रश्न भी पूछे गए और पुराने फिल्मी गीतों पर अंताक्षरी में सभी ने भाग लिया। शुभारंभ जिलाध्यक्ष किरण लखोटिया, सचिव सोनल मूंदड़ा ने किया। कार्यक्रम का संचालन कार्यकारी अध्यक्ष पुष्पा बिड़ला ने किया।

नागपुर. श्री बीकानेरी माहेश्वरी पंचायत द्वारा जातीय पर्व गणगौर सिविल लाइंस स्थित प्रेस क्लब पर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पंचायत की विश्वस्त समिति के सभापति गिरधरलाल सिंगी, पंचायत अध्यक्ष प्रमोद बागड़ी, सचिव अजय मल्ल, नागपुर नगर सभा के शिवबाबू गांधी, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्यामसुंदर सोनी, पंचायत की महिला समिति अध्यक्ष वंदना मूंधड़ा, संयोजक गिरीश नत्थानी, संयोजिका मीना बिन्नानी व राधिका राठी तथा नवदंपत्ति अंजुल रोहित दुजारी व कृतिका अंकित बागड़ी ने पूजन संपन्न किया। विशेष अतिथि दिवा मिसेस इंडिया 2018 रूपल मोहता एवं राष्ट्रीय युवा संगठन के विवेक मोहता ने भी पूजन में भाग लिया। महिला समिति अध्यक्ष वंदना मूंदड़ा ने रूपल मोहता का सम्मान किया। समाज के मेधावियों का सम्मान भी किया गया।

बरेली. महेश माहेश्वरी महिला समिति द्वारा दो दिवसीय गणगौर उत्सव दुर्गादेवी झंवर के निवास पर मनाया गया। इसमें गणगौर और देवीजी के गीत गाए गए व नृत्य की सुंदर प्रस्तुति दी गई। तंबोला आदि मनोरंजक गेम भी खेलाए गए। सभी सदस्याओं का सहयोग रहा।

हैदराबाद. श्री नृसिंह मंदिर ट्रस्ट बोर्ड, गौर उत्सव समिति एवं संस्कार धारा (एक विचार) द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'ईसर गौर आया पावणा, नृत्य से लेंवा वारणा', का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में मंजू बल्दवा ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंतर्गत

सामाजिक और पारिवारिक समस्या पर हास्य व्यंग्य प्रस्तुति दी गई। ईसर गौर के दरबार में एक नई सोच का दौर पर आधारित नाटक सदस्याओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका पुष्पा कीमती व डॉ. अनुराधा जाजू ने निभाई। प्रधान संयोजिका कलावती जाजू, प्रेमलता काकाणी, सुरेखा सारडा, सीमा इनानी, अंजना अट्टल, शकुंतला जाजू, स्नेहल धूत ने अतिथियों का स्वागत किया। श्यामला नावंदर, प्रेमलता काकाणी, सुरेखा सारडा, शांता सारडा, किरण बंग, कंचन मोदानी, पुष्पा दरक, मंजू लाहोटी, सीमा इनानी, रामप्यारी भट्टड़ आदि का सहयोग रहा।

शोरापुर. महिला मंडल द्वारा आयोजित गणगौर कार्यक्रम में महिलाओं एवं पुरुषों ने झाला-वारणा का कार्यक्रम श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में धूमधाम से मनाया। महिला मंडल अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी-कार्यकर्ता और युवा मंडल के बालाजी बंग, जयराम राठी, अशोक मूंदड़ा, वैंकटेश तिवारी, महेश दरक, मनमोहन बंग, राज मालपाणी व युवा संगठन सदस्यायों ने योगदान दिया।

चंद्रपुर. गणगौर पर्व के शुभ अवसर पर महेश भवन में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा रंगारंग कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। एक अनोखी प्रकार की प्रतियोगिता 'सास दुल्हन-बहू ब्यूटीशियन' का आयोजन भी किया गया। डॉ. भारती मूंधड़ा, कविता अग्रवाल, साधना उपगलवार आदि अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। मंच संचालन ममता बजाज एवं शीतल लोहिया द्वारा किया गया। इंदु जाजू, आनंदी सारदा, दीपिका सारदा, मोनिका सोमानी, स्वाति मूंधड़ा, निशा बजाज, आरती मंत्री, पूजा मूंधड़ा, निशा सारडा आदि कई महिलाएं मौजूद थीं। ईसर-गौरी की शोभायात्रा भी निकाली गई।

हैदराबाद. संस्था संस्कार धारा द्वारा सूरजी एवं गणगौर का सामूहिक उद्यापन सुल्तान बाजार स्थित श्री नृसिंह मंदिर में किया गया। संस्था की संस्थापिका कलावती जाजू ने बताया कि उद्यापन लगभग 30 लोगों का कराया गया। इसमें 950 महिलाओं को भोजन कराया गया अध्यक्ष श्यामा नावंदर व मंत्री अंजना अटल ने बताया कि उद्यापन को सफल बनाने में स्थान व भोजन व्यवस्था पंडित रमेश व्यास की देखरेख में रही। संस्था सदस्य किरण जाजू, सीमा ईनानी, कौशल्या बाहेती, प्रेमलता काकाणी, कविता अट्टल, पुष्पा माहेश्वरी, शोभा लोया आदि का पूरा सहयोग रहा।

नागपुर. क्वेटा कॉलोनी स्थित हरीशकुमार बिन्नानी के निवास पर गणगौर उत्सव एवं गुर्ला बड़ी धूमधाम से मनाया गया। गणगौर के सुंदर गीत गाए गए। गणगौर का शृंगार देखते ही बनता था। इस अवसर पर राजस्थानी नृत्य भी किए गए।

अमरावती. बडनेर रोड स्थित महेश भवन में होली और गणगौर उत्सव बड़े धूमधाम से माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा मनाया यगा। सबसे पहले रसिया ग्रुप द्वारा विभिन्न नृत्य की प्रस्तुति देकर महिलाओं ने धूम मचाई। ग्रुप लीडर अर्चना लड्ढा के नेतृत्व में होली पर साथियों को टाइटल दिए गए। अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, राखी बजाज, प्रार्थना लड्ढा, अर्चना बजाज, अर्चना भैया, राखी झंवर, विद्या नावंदर, संध्या लड्ढा, सुनीता लड्ढा, सीमा लड्ढा, मिथिलेश लड्ढा, भावना झंवर, खुशी बजाज आदि ने नृत्य की प्रस्तुति दी।

कोटा. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा पहली बार बसंत बिहार दादाबाड़ी में गणगौर मेला 2019 का भव्य आयोजन किया गया। मंडल अध्यक्ष अरुणा मूंदड़ा ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ ईसर-गणगौर की भव्य सवारी निकालकर किया गया। संयोजिका पुष्पा सोमानी, विनीता लाहोटी व संध्या लढ़ा ने गीतों भरी मनमोहक हाउजी खेलाई। कार्यक्रम सह-संयोजिका परिणीता लाहोटी, संगीता मूंदडा, अंजू शारदा ने मनोरंजक

गेम व प्रतियोगिता आयोजित करवाकर सभी को कार्यक्रम के अंत तक रुकने के लिए बाध्य किया। सचिव ऋतु मूंदडा ने बताया कि मुख्य अतिथि अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की महामंत्री आशा माहेश्वरी व समाज अध्यक्ष राजेशकृष्ण बिरला थे। 8 अप्रैल को गणगौर पर्व पर 14 सदस्याओं के सामूहिक उजमन कार्यक्रम का आयोजन माहेश्वरी भवन में किया गया। इसमें करीब 300 सदस्याओं को भोजन करवाया गया और सुहाग चिह्न एवं उपहार प्रदान किए गये।

अमरावती. सखिया ग्रुप द्वारा गणगौर उत्सव मनाया गया। इसमें गाजे-बाजे के साथ ईशर-गौर का आगमन हुआ। ग्रुप की लीडर रंजनी राठी व कोरियोग्राफर अर्चना ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रयास किया। कार्यक्रम में पूर्वाध्यक्ष प्रभा झंवर, अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, सचिव सपना पनपालिया, कोषाध्यक्ष शीतल बूब आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वर्षा मालू, रत्ना बंग, जया भूतड़ा, कामिनी भूतड़ा आदि समस्त सदस्याएं मौजूद थीं।

सरदारशहर. सुरभि समिति के अंतर्गत सरदारशहर माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा माहेश्वरी भवन के प्रांगण में गणगौर महोत्सव का आयोजन किया गया। शुभारंभ कमलादेवी मिमानी, हीरादेवी मिमानी, सुनीता डागा, राजकुमारी लखोटिया, प्रेरणा लखोटिया ने किया। अध्यक्ष सरला मूंधड़ा व मंत्री राजकुमार लखोटिया ने बताया कि कार्यक्रम का संचालन दीप्ति बजाज और प्रेरणा लखोटिया ने किया। सुरभि समिति संयोजिका सुनीता डागा के नेतृत्व में कई मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

महू. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा आकर्षक बाना निकालकर गणगौर पर्व मनाया गया। प्रचार मंत्री रजनी सोढ़ानी ने बताया कि मंडल द्वारा रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिलाओं के लिए ईशर गणगौर जोड़ी प्रतियोगिता एवं प्रश्न मंच भी रखे गए। कार्यक्रम मंडल अध्यक्ष उमा सोढानी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। संचालन सचिव संगीता सोढानी ने किया। आशा सोढानी, रमिला मालानी, अलका शारदा, संगीता लड्ढा, सीता चिचाणी ने अतिथि स्वागत किया।

इंदौर. माहेश्वरी समाज संयोगितागंज महिला संगठन द्वारा गत 6 अप्रैल को गणगौर सिंजारा एवं मेहंदी का कार्यक्रम माहेश्वरी भवन नवलखा पर आयोजित किया गया। संगठन अध्यक्ष सुनीता लड्ढा एवं संगठन मंत्री नीलिमा असावा ने बताया कि मेहंदी के कार्यक्रम में 110 से अधिक महिलाओं ने हिस्सा लिया। संयोजिका ज्योति काबरा व अर्चना भूतड़ा थीं। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि वीणा सुभाष राठी थीं। महिला संगठन के पदाधिकारी सुनीता लड्ढा, नीलिमा असावा, अर्चना लाहोटी, किरण लखोटिया, अलका बाहेती, नीलम काबरा, दमयंती मणियार, ज्योति काबरा आदि ने ईसर जी व गोराजी की दो टीम बनाकर प्रस्तुति दी। सचिव नीलम काबरा द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

सूरत. श्री माहेश्वरी महिला मंडल (मेन) द्वारा गत 2 अप्रैल को स्थानीय माहेश्वरी भवन में गणगौर सिंजारा उत्सव का आयोजन किया गया। समाज में परंपरा और संस्कृति के नाम पर दिखावा बढ़ता जा रहा है, इस दिखावे में हमारी संस्कृति व रीति-रिवाज कहीं लुप्त से होते जा रहे हैं। इस पर आधारित नृत्य नाटिका 'घटती संस्कृति बढ़ता दिखावा' की इसमें प्रस्तुति दी गई। इसमें 'प्रीवेडिंग, हल्दी, मेहंदी, कार्निवल' जैसे प्रोग्रामों में फिजूल खर्च दिखाया गया है। अंत में अल्पाहार की व्यवस्था भी रखी गई।

भीलवाड़ा. आरकेआरसी माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से गणगौर की सवारी का आयोजन नेहरू गार्डन स्थित चामुंडा माता मंदिर से मंडल अध्यक्ष वंदना नुवाल व सचिव इंदिरा हेड़ा के नेतृत्व में किया गया। प्रचार मंत्री सुचिता कोगटा ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत सभी क्षेत्रीय पदाधिकारियों, महेश समिति के पदाधिकारी व आरकेआरसी युवा संगठन के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया। इसी के तहत शिवाजी गार्डन में मंडल सदस्याओं द्वारा सामूहिक नृत्य नाटिका व गणगौर के गीतों की प्रस्तुति दी गई। इसके अंतर्गत सरप्राइज पुरस्कार दिए गए। युवा संगठन अध्यक्ष दिलीप कोगटा व उनकी टीम का विशेष सहयोग रहा।

भीलवाड़ा. गणगौर के पावन पर्व पर शास्त्री नगर माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा 18 महिलाओं के उद्यापन करवाए गए। इसमें 350 महिलाओं ने गौर पूजन करके भोजन प्रसाद ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में ममता मोदानी, शिखा भदादा, सीमा कोगटा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सभी महिलाओं को तिलक लगाकर सुहाग की सामग्री भेंट की गई।

भीलवाड़ा. पुराना शहर माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर का त्योहार बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। शाम को बैंडबाजे के साथ गणगौर की सवारी निकाली गई। शोभायात्रा रघुनाथ मंदिर से रवाना होकर बड़े मंदिर की बगीची पहुंची। इस अवसर पर अध्यक्ष रेखा दरक, उपाध्यक्ष उषा पटवारी, सूचना मंत्री रेखा समदानी, चंदा समदानी, रेखा लाहोटी, सरोज समदानी, ज्योति, लीला काबरा, अनिता बाहेती, आशा लाहोटी, आशा पटवारी सहित कार्यकारिणी सदस्याएं मौजूद थीं।

भीलवाड़ा. आजादगनर माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से गणगौर उत्सव मनाया गया। महिलाओं ने भजनों पर नाचते हुए सजी-धजी गणगौर की सवारी निकाली। विशेष आकर्षण सेवरा सजाओ और सजी गणगौर प्रतियोगिता थी। इस मौके पर जिलाध्यक्ष अनिला अजमेरा, प्रदेश उपाध्यक्ष सुनिता बल्दवा, जिला सचिव सीमा कोगटा, अंकिता राठी, शशि अजमेरा का मंडल अध्यक्ष मानकंवर काबरा ने स्वागत किया। इसी प्रकार विजयसिंह पथिक नगर महिला मंडल व मेवाड़ संस्कृति कला संस्थान के तत्वावधान में भी गणगौर की सवारी निकाली गई। अध्यक्ष आशा माहेश्वरी के अनुसार इसमें सेवरा सजाया गया। सचिव निर्मला बाहेती ने बताया कि श्रेष्ठ सेवरा सजाने वाली सदस्या एवं मिसेज गणगौर को सम्मानित किया गया।

पुरुलिया. माहेश्वरी महिला समिति (अंतर्गत पश्चिम बंगाल माहेश्वरी महिला संगठन) के द्वारा 4 अप्रैल को गणगौर का कार्यक्रम मनाया गया। इसमें 130 सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में नृत्य, पालसिया सजाने, नारियल की मिठाई बनाना प्रतियोगिता तथा गेम्स आदि का आयोजन हुआ। अल्पहार की भी उत्तम व्यवस्था की गई। कार्यक्रम की प्रधानिका मैना मोहता के नेतृत्व में सभी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुए। जानकारी संगीता मोहता ने दी।

हैदराबाद. माहेश्वरी समाज, दिलसुखनगर द्वारा गणगौर महोत्सव एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक दिनेश जाजू एवं सुनील हेड़ा ने बताया कि गणगौर शोभायात्रा शिव मंदिर, दिलसुखनगर से निकलकर धूमधाम से कार्यक्रम स्थल पहुंची। इस अवसर पर समाजसेविका पुष्पा बूब एवं इंफोसिस की एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट मनीषा साबू बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थीं। समाज की बालिकाओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सोना-चांदी तंबोला आयोजित किया गया। मंच संचालन प्रीति झंवर ने किया। भजन संध्या में मुख्य अतिथि के रूप में महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग एवं आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा ट्रस्ट के वाइस चेयरमैन मनोजकुमार बाहेती ने भाग लिया। सम्मानीय अतिथि के रूप में महेश बैंक के चेयरमैन पुरुषोत्तम मानधना, समाजेसवी विशम्भरलाल काबरा, महेश बैंक के वाइस चेयरमैन रामपाल अट्ठल, माहेश्वरी समाज हैदराबाद सिकंदराबाद के अध्यक्ष लक्ष्मीनरायण राठी आदि उपस्थित थे।

वरंगल. स्थानीय वरंगल गणगौर मंडल बैंक कॉलोनी द्वारा आयोजित गणगौर उत्सव रंगारंग कार्यक्रम के साथ प्रगतिशील मारवाड़ी माहेश्वरी समाज ट्रस्ट भवन, रंगमपेट में गत 30 मार्च को धूमधाम से संपन्न हुआ। मधुर गीतों का सामूहिक कार्यक्रम बहुत सुंदर रहा। मंडल सदस्यों व बच्चों ने अलग-अलग नृत्य, नाटक एवं अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

बैंगलोर. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल ने दोपहर 2.30 बजे माहेश्वरी भवन में गणगौर का सिंजारा कार्यक्रम 'रंग-रंगीलो राजस्थान' के साथ मनाया गया। भवन के हॉल को पूरे राजस्थान की भांति सजाया गया व महिलाएं राजस्थानी वस्त्र में सोलह सिंगार करके इस कार्यक्रम में शामिल हुईं। पूजा अध्यक्ष सुशीला बागड़ी, प्रकाश मूंदड़ा, सावित्री मालू, बिमला साबू, सचिव श्वेता बियाणी ने की। वयोवृद्ध सम्मान मूलीदेवी रामप्रसाद मालपानी का श्रीफल भेंटकर शॉल ओढ़ाकर कर किया गया। विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ।

चुनाव जागरूकता अभियान

वोट ना देने वालों को देख होती है बड़ी हैरानी।
वोट देने में कैसी और क्या है आपको परेशानी?
भारत के नागरिक हो अधिकारों का प्रयोग करो।
अपने सुनहरे भविष्य हेतु वोट का उपयोग करो।
हरेक राजनैतिक पार्टी बढ़-चढ़कर लुभा रही है।
चाशनी लिपटे वादे और प्रलोभन दिखा रही है।
जरा पुराने अनुभव से सीख लेकर वोट तुम देना।
छलावे में ना फंसना समझदारी से काम लेना।
अजी वोट दिवस को अवकाश दिवस न बनाना।
वरना बरसों-बरस तक चुकाना पड़ेगा हर्जाना।
मेरी कलम ने दी सलाह समझ आपको अपना।
आओ विकसित भारत का पूर्ण करें हम सपना।

सुमिता मूंधड़ा, मालेगांव, नाशिक

होली के बाद चला स्नेह मिलन का दौर

स्नेह के रंग में सराबोर कर देने के पर्व होली के पश्चात स्नेह मिलन का दौर चला। अपनों ने अपनों से मिलकर इस पर्व की खुशियां साझा कर अपनी खुशियों को वृहद आयाम दिया।

■ **बीकानेर.** श्रीकृष्ण माहेश्वरी मंडल के तत्वावधान में तीन दिवसीय होलिका महोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। मीडिया प्रभारी पवन राठी व मंडल मंत्री गोपालकृष्ण मोहता ने बताया कार्यक्रम के प्रथम दिन नगाड़ा-पूजन, चंग-पूजन व भगवान महेश की पूजा-अर्चना के साथ कार्यक्रम का श्री गणेश हुआ। इसके बाद नगाड़ों व चंग की धुन पर माहेश्वरी समाज के गायक कलाकारों ने प्रस्तुति दी। मंडल अध्यक्ष नारायण बिहाणी के अनुसार दूसरे दिन महिला समिति की सदस्याओं ने अनिता मोहता के निर्देशन में भगवान कृष्ण के होली भजनों की शानदार प्रस्तुति देकर संपूर्ण महेश भवन के वातावरण को भक्तिमय बनाया। इनमें रेखा लोहिया, सरोज बिहाणी, सारिका सोमाणी, चंद्रकला कोठारी व उषा कोठारी ने सराहनीय भूमिका निभाई। उपाध्यक्ष किसन चांडक व सांस्कृतिक मंत्री भवानी राठी ने बताया कि तृतीय दिन विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता व होली का रंग-सांवरे के संग कार्यक्रम का आयोजन हुआ। घनश्याम कल्याणी, किशन दम्माणी, जगदीश कोठारी, सुरेश कोठारी, सुशील, गोपी पेड़ीवाल, मनमोहन लोहिया, बलदेव मूंधड़ा, सुनील सारड़ा, भवानी राठी आदि कई गणमान्यजन मौजूद थे।

■ **बीकानेर.** माहेश्वरी समाज की पारिवारिक संस्था श्रीप्रीति क्लब परिवार द्वारा स्थानी जस्सूसर गेट स्थित माहेश्वरी सदन में होली स्नेह मिलन समारोह मनाया गया। अध्यक्ष घनश्याम कल्याणी ने बताया कि विशेष अतिथि के रूप में क्लब के संरक्षक मगनलाल चांडक व श्रीकृष्ण माहेश्वरी मंडल अध्यक्ष नारायण बिहाणी उपस्थित थे। प्रीति क्लब कार्यकारिणी के कार्यक्रम संयोजक अशोक बागड़ी ने बताया कि क्लब संरक्षक श्री चांडक ने संस्था द्वारा किए गए सेवा कार्यों की विशेष जानकारी दी। पुलवामा में शहीद हुए जवानों की शहादत को श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई।

■ **सीताबर्डी.** माहेश्वरी पंचायत सीताबर्डी द्वारा होली मिलन गत 20 मार्च को माहेश्वरी पंचायत के मोतीलाल केला सभागृह में आयोजित हुआ। मंच पर विराजमान माहेश्वरी पंचायत अध्यक्ष चंद्रकिशोर चांडक, सचिव शिवदास राठी, संयोजक श्रीकांत पनपालिया, महिला समिति अध्यक्ष राजबाला राठी, युवा संगठन अध्यक्ष हेमंत राठी थे। मूर्खाधिपति पुरुषोत्तम टावरी ठग नीरव मोदी के वेश में तथा मूर्खाधिराज डॉ. रमेश गांधी ठग विजय माल्या के वेश में अपने विशेष मंच पर विराजमान थे। कार्यक्रम की अगली कड़ी में होली टाइम्स/होली टाइटल्स का लोकार्पण किया गया। सभी ने व्यंजनों तथा होली पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया। मंच संचालन सचिव शिवदास राठी ने किया। निमिष बिसानी, भावना कुलधरिया, शैलेष मोकाती, निशि सावल, नवयुवक संगठन, महिला संगठन ने पूर्ण सहयोग दिया। आभार मुख्य संयोजक श्रीकांतजी पनपालिया ने माना। जानकारी दिनेश राठी ने दी।

■ **उदयपुर.** महेश सोसायटी का होली मिलन एवं फागोत्सव कार्यक्रम राष्ट्र भारती स्कूल सेक्टर-14 में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रचार-प्रसार मंत्री गौतम सोमानी ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन के अध्यक्ष जुगलकिशोर बिड़ला थे। विशेष आमंत्रित अतिथि सेवा सदन के उपाध्यक्ष कैलाशचंद्र मूंदड़ा, मंत्री जयकिसन बल्दवा, कार्यकारिणी सदस्य अशोककुमार बाल्दी, धर्मेंद्र सोमानी, राजेंद्रकुमार मंत्री, दिनेश मूथा एवं नाथद्वारा समिति के सदस्य नरेंद्र लावटी थे। सोसायटी सचिव बृजगोपाल चांडक द्वारा निबंध लेखन के विजेताओं को पुरस्कार बांटे गए। महिला सोसायटी अध्यक्ष नीलम

पेड़ीवाल द्वारा अतिथियों एवं समाजजनों के सामने सोसायटी के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में अंबालाल परतानी, मुरलीधर गट्टानी, जमनेश धुप्पड़, नारायणलाल देपुरा, ओम लाहोटी, मनमोहन मंत्री, रमेश मूंदड़ा आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

■ **वर्धा.** देशभर में माहेश्वरी समाज भामाशाह के रूप में जाना जाता है। हजारों धर्मशालाएं, कुएं, बावड़ियां आदि का निर्माण भी समाज के बुजुर्गों ने समाजसेवा के रूप में किया है। ऐसे समाज के सामने किसी भी कलाकार द्वारा अपनी प्रस्तुति देना बहुत बड़ी उपलब्धि है। उक्त विचार व्यक्त किए नागपुर से पधारे 3 हजार से अधिक मिमिक्री शो कर चुके प्रसिद्ध हास्य कलाकार विनोद पुरोहित ने। आरंभ में दामोधर दरक व जगदीश जाजू का मूर्ख शिरोमणि के रूप में चयन होकर उनके द्वारा गधे की प्रतिमा का पूजन किया गया। तत्पश्चात युवराज भूतड़ा, श्याम चांडक, संजय राठी, मनोज राठी, शोभा मूंधड़ा, हर्षा टावरी आदि ने होली की शुभकामनाएं दीं।

■ **सिंकदराबाद.** माहेश्वरी सेवा संघ, माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी युवा संगठन व माहेश्वरी युवती संगठन के संयुक्त तत्वावधान में 'होली के रंग-कवियों के संग' कार्यक्रम हरियाणा भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ गोपाल बल्दवा ने किया। लक्ष्मीनारायण राठी, रामकिशोर मोदानी, बद्रीविशाल मूंदड़ा, गोपाललाल बंग, पीडी जाखोटिया आदि विशेष रूप से मौजूद थे। कवि वेणुगोपाल भट्टड़ सहित कई कवियों ने अपनी कविताओं की प्रस्तुति दी।

■ **पुणे.** संस्था माहेश्वरी बालाजी मंदिर द्वारा होलिकोत्सव एवं दुंड का आयोजन किया गया। संस्था के कोषाध्यक्ष कैलास मूंदड़ा ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के विश्वस्त मंडल, महिला मंडल तथा युवा संगठन का विशेष योगदान रहा।

■ **अहमदाबाद.** माहेश्वरी युवा संगठन ने गत 23 मार्च 2019 को पिकनिक हाउस कांकरिया में संगठन सदस्यों के लिए होली स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर कई मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। राधेश्याम मणियार पुष्कर सेवा सदन संगठन मंत्री, राजेंद्र पेड़ीवाल अहमदाबाद जिला माहेश्वरी मंत्री, गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष विकास मूंधड़ा, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन कार्यसमिति सदस्य निर्मल डागा, मनीष डागा, सतीश लड्ढा आदि अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में बेस्ट राजस्थानी ड्रेस आदि स्पर्धा भी रखी गई।

■ **सूरत.** श्री माहेश्वरी महिला मंडल वेस्ट सूरत द्वारा गत 16 मार्च को कार्यक्रम 'होली धमाल' फूलों की होली से जोश व हर्षोल्लास के साथ श्री अंबिका निकेतन भारती वृद्ध आश्रम में मनाया गया।

■ **नागपुर.** नगर ज्येष्ठ माहेश्वरी सभा का होली मिलन कार्यक्रम गत 24 मार्च को महेश भवन गांधी भवन में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुरुषोत्तम मालू थे। विशेष अतिथि डॉ. रमेश गांधी तथा डॉ. शोभा गांधी ने बहुत ही विनोदी प्रस्तुतियां देकर हंसी से लोट-पोट कर दिया। संस्था के सदस्य विजय पचेसिया, पुष्पा हेड़ा, श्रीलाल राठी, गोवर्धन काबरा, ओमप्रकाश सोनी और गोपाल सादानी ने भी प्रस्तुति दी।

■ **नागदा.** माहेश्वरी समाज द्वारा गत 21 मार्च को होली पर्व धूमधाम से मनाया गया। समाज ने फूल व गुलाल के साथ फाग उत्सव मनाया। नगर के बाहर प्रकाश माहेश्वरी के बगीचे बनबना रोड पर पर्व मनाया गया। पुरुषों, महिलाओं व बच्चों द्वारा सांस्कृतिक एवं खेलकूद तथा हास्य-मनोरंजन का प्रोग्राम आयोजित किया गया। समाज अध्यक्ष सतीश बजाज, सचिव अशोक बिसानी, युवा संगठन के वीरेंद्र मालपानी, विक्रांत मोहता, महिला मंडल की सीमा मालपानी, तारा मोहता एवं जगदीश भूतड़ा, गोविंद मोहता, घनश्याम राठी, रमेश मोहता, प्रशांत राठी, राजकुमार मोहता, राजेंद्र मालपानी, नंदकिशोर मालपानी आदि मौजूद थे। जानकारी विपिन मोहता ने दी।

■ **लखनऊ.** स्थानीय माहेश्वरी समाज का होली मिलन समारोह गत 22 मार्च को आयोजित हुआ। इसमें होली से संबंधित भजन, गीत एवं नृत्य का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में कृष्ण एवं राधा तथा सखियों के प्रतिरूप ने नृत्य करते हुए उपस्थित जनसमुदाय के साथ फूलों की होली खेली। संगठन मंत्री विनम्र माहेश्वरी ने बताया कि कार्यक्रम के उपरांत सहभोज के साथ होली मिलन का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

■ **उदयपुर.** माहेश्वरी महिला गौरव ने ओरिएंटल पैलेस रिसोर्ट में होली मिलन समारोह का आयोजन किया। महिलाओं ने कृष्ण एवं गोपियों का शृंगार कर रासलीला की प्रस्तुति दी व होली गीतों के साथ फूलों एवं रंगों की होली का आनंद उत्सव मनाया। होली पर सभी को अंताक्षरी प्रतियोगिता के आयोजन के साथ होली पर उपनाम की उपमा प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कौशल्या गट्टानी, सरिता न्याती एवं आशा नारायणीवाल ने की।

■ **अलीगढ़.** स्थानीय संस्था आप और हम माहेश्वरी परिवार का 'होली उत्सव' मनाया गया। होली के गीत व फूलों की बरसात के बीच आयोजित माहेश्वरी परिवार के उत्सव में समाज की महिला व पुरुष ने राधा-कृष्ण बन होली खेली और ब्रज की परंपरा को जीवंत कर दिया। महिला व पुरुष रंग-बिरंगे दुपट्टे डाले थे। रश्मि संजीव गोदानी, रेणु प्रदीप माहेश्वरी, राजीव नीरा, प्रदीप रूबी हरकुट, रजनी अशोक माहेश्वरी, अलका अश्वनी गोदानी आदि मौजूद थे।

■ **मालेगांव.** महालक्ष्मी माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा स्थानीय श्याम बाबा मंदिर के प्रांगण में फाग महोत्सव मनाया गया। फूलों व गुलाल से राधा कृष्ण के साथ होली खेली गई। नटखट कान्हा सरिता बाहेती व राधा अनिता कंलत्री के साथ सारी सखियों ने गोपी बनकर कार्यक्रम में भाग लिया। प्रसाद सरिता कैलाश बाहेती की ओर से स्पांसर किया गया। सूत्र संचालन शमा जाजू ने किया।

■ **भोपाल.** माहेश्वरी समाज भोपाल वृहद के तत्वावधान में समाज का होली मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। देश की ख्यातिनाम कलाकार ममता गुप्ता द्वारा सुमधुर आवाज में प्रस्तुत खाटू श्यामजी के भजनों ने उपस्थिजनों को भक्ति के रस में सराबोर कर झूमने को मजबूर कर दिया। भजनों के साथ ही बृज की होली, फूलों की होली एवं रसिया गीतों के साथ नृत्य करते हुए सभी ने इस होली मिलन पर्व का आनंद लिया। श्री माहेश्वरी समाज भोपाल वृहद के अध्यक्ष हरीश झंवर ने आयोजन की सफलता हेतु सभी का आभार व्यक्त किया।

■ **सिकंदराबाद.** स्थानीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा होली समारोह रंगारंग कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नोक झोंक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसके द्वारा महिलाओं ने नेताओं का मुकाबला दिखाया। प्रथम पुरस्कार कुसुम काबरा, अर्चना अट्टल, शीतल मनोहर, शीतल मोदानी और कोयल मोदानी को मिला।

बचपन के रंग सखियों के संग

श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन ने मनाया वार्षिकोत्सव
बचपन के रंगारंग खेलों का हुआ आयोजन

इंदौर. श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन द्वारा वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें आयोजित बचपन के खेल सदस्याओं के आकर्षण का केंद्र रहे।

शुभारंभ पर संगठन संरक्षक मीना ईनानी एवं रेखा खटौड़, अध्यक्ष सुमन सोनी, सचिव पायल लाठी, संस्थापक अध्यक्ष माधुरी सोमानी एवं पदाधिकारियों द्वारा किया गया। आयोजन बहुत ही मनोरंजक अंदाज में किया गया। इसमें 'बचपन के रंग-सखियों के संग' थीम पर आधारित स्कूली गेम रस्सीकूद, छुपम-छाई, पकड़म-पाटी, चोर-पुलिस, नीबू रेस जैसी छोटी-छोटी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संगठन के सभी उपस्थित सदस्य स्कूली बच्चे बने, वहीं प्रिंसिपल की भूमिका में संरक्षक मीना ईनानी, रेखा खटौड़ एवं परामर्शदाता शोभा भूतड़ा, डॉ. प्रीति माहेश्वरी रहीं। वार्षिकोत्सव को सभी सखी सदस्यों हेतु पूर्णतया निःशुल्क रखा गया। इसमें भोजन, हाई-टी एवं तंबोला में हजारों रुपए के पुरस्कार समायोजित रहे। वार्षिकोत्सव की सफलता हेतु संयोजक खुशबू सारडा, वर्षा परवाल, कृतिका सोमानी, सोनल बाहेती एवं पायल मालपानी, शीतल मुच्छाल, दीप्ति खटौड़, अर्चना मुछाल, रश्मि लड्ढा, रीता मंत्री, प्रियंका भलिका, मोनिका लाहोटी, ज्योति भूतड़ा, रीना मानधन्या, सुचिता जाजू, जयश्री सिंगी द्वारा भागीदारी निभाई गई।

सभी कार्यों में उत्साह से सहभागी

हमारा संगठन पूरे वर्षभर सक्रिय रहकर रचनात्मक, प्रतियोगितात्मक, सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियां संचालित करता है। इसमें समाज के बच्चे, युवा एवं महिलाएं उत्साह के साथ सहभागी होते हैं। इनके अतिरिक्त समाज, महिला एवं युवा संगठन के कार्यों में भी हम सक्रिय रूप से सहभागी रहते हैं।

सुमन सोनी
अध्यक्ष-श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन, इंदौर

महिला संगठन को सक्रिय सहयोग

श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन सतत सक्रिय रहकर सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का संदेश वाहक बन अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। जहां हम तुलसी विवाह, सप्ताहजी (कथा) जैसे धार्मिक आयोजन करते हैं, वही वृक्षारोपण, वर्कशॉप, बहुद्देशीय, सेमिनार, बड़ी तीज, गणगौर पर कार्यक्रम करते हैं। महेश नवमी पर स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता, स्वास्थ्य शिविर, प्रभातफेरी में समाजबंधुओं को आमंत्रित करने हेतु बड़े रूप में युवाओं और महिलाओं को साथ लेकर वाहन रैली का आयोजन भी करते हैं एवं मंच द्वारा स्वागत किया जाता है। राष्ट्रीय महिला संगठन के आह्वान पर शर्बत वितरण का कार्य भी किया गया। **- माधुरी सोमानी**

संस्थापक अध्यक्ष श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन इंदौर

महिलाओं के लिए बहुत कुछ

सखी संगठन द्वारा विगत 5 वर्षों से बहुउपयोगी सुंदर वार्षिकी कैलेंडर प्रकाशित किया जाता है, जो इंदौर शहर के सभी साढ़े चार हजार परिवारों को कुरियर के माध्यम से भेजा जाता है। माहेश्वरी युवा बहनों को अपने उत्पाद बिक्री के उद्देश्य एवं रोजगार प्राप्त हेतु वृहद रूप से सावन माह एवं दीपावली के पूर्व मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें 150 के लगभग युवा बहनें अपने स्टॉल लगाती हैं और लाभ प्राप्त करती हैं। **- पायल लाठी**

सचिव, श्री बालाजी क्षेत्र माहेश्वरी सखी संगठन, इंदौर

> अच्छे काम करते रहो
> चाहे लोग तारीफ़ करें या नहीं?

तेजस्विनी महिला मंच को अवॉर्ड

नागपुर. रिचास यूनिक क्लिनिक द्वारा आयोजित वुमन अचीवर्स अवॉर्ड्स में तेजस्विनी महिला मंच ने कम्युनिटी अवॉर्ड अपने नाम किया। मात्र 3 वर्षों में इस मंच ने ऐसे कार्य किए हैं जो असंभव से लगते थे। ऐसे यादगार कार्यक्रम किए जो अब मंच की पहचान बन गए। मंच पर्यावरण से लेकर संस्कार और संस्कृति के संरक्षण के लिए एक राह पर चल पड़े हैं। नागपुर की महापौर से स्वच्छता मित्र पत्र हासिल करने वाला ये एकमात्र महिला संगठन है। किरण मूंदड़ा, सुषमा बंग, अंजू मंत्री, कल्पना मोहता, संगीता मंत्री, पूजा राठी, शीतल मूंदड़ा, राखी मूंधड़ा, बीना बंग, हेमा बंग, निशी सांवल, संध्या सोनी, अनीता भट्टड़, विद्या जाजू, मंजू चांडक, सरयू चांडक, राजश्री भैया आदि सभी सदस्याएं समाज के उत्थान हेतु कार्य में संलग्न हैं।

काकाणी बने समाज अध्यक्ष

सुरेशचंद्र काकाणी

भूपेन्द्र जाजू

उज्जैन. श्री माहेश्वरी समाज उज्जैन की साधारण सभा में गत 7 अप्रैल 2019 को संपन्न हुए चुनाव में सुरेशचंद्र काकाणी को सत्र 2019 से 2022 हेतु समाज का अध्यक्ष सर्वानुमति से चुना गया। उनकी कार्यकारिणी में पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश काबरा, सचिव भूपेंद्र जाजू (एडवोकेट), संरक्षक आनंद बांगड़, मनमोहन मंत्री, महेश लड्ढा, ओमप्रकाश बियाणी व सीएस माहेश्वरी, प्रवक्ता दिनेश लड्ढा, उपाध्यक्ष महेश चांडक, नरेंद्र लड्ढा, कैलाशचंद्र जैथलिया, परामर्शदाता रूपनारायण झंवर, राधेश्याम चौखड़ा, लक्ष्मीनिवास झंवर, राजेश गिलड़ा रहेंगे। इनके साथ ही कोषाध्यक्ष नवीन बाहेती, समन्वय समिति में विजय बांगड़, राजेश सोमानी, रमेशकुमार बहेड़िया, नवनीत काबरा तथा गिरीश भट्टड़, संगठन मंत्री मुकेश शारदा, सहसचिव सत्यनारायण मूंदड़ा तथा संजय बजाज होंगे। कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में अनिल साबू, श्रीधर मूंदड़ा, अनिल मूंदड़ा, गोपाल कोठारी, राजेंद्र भूतड़ा, नारायणदास जाजू, घनश्याम भंडारी व दामोदर अट्टल आदि शामिल हैं।

दूसरों की गलतियों से सीखने में ही बुद्धिमानी है...
जिंदगी इतनी बड़ी नही होती कि
सारी गलतियां खुद करके सीखें!!

श्री द्वारिकाधीश विजयते

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि

द्वारकाधाम

में 'श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट' द्वारा संचालित
अत्याधुनिक सुविधायुक्त एकमात्र माहेश्वरी अतिथि गृह

माहेश्वरी सेवा कुंज

21, द्वारकेश पार्क सोसायटी (अम्बुजा प्लाट), नागेश्वर रोड, देवभूमि द्वारका-361335 (गुजरात),
दूरभाष- 02892-235553 / 235554, मो. 097271-22111
E-mail : maheshwarisewakunj@gmail.com
आप अपना आरक्षण ई–मेल अथवा फोन से करवा सकते हैं

उपलब्ध सुविधायें

- ए.सी. व टी.वी. से सुसज्जित 47 डबल बैडरूम (अटैच्ड लैट, बॉथ)।
- 4 फैमिली ए.सी. हॉल (6 व्यक्तियों की क्षमता वाले)।
- अत्याधुनिक किचन के साथ वातानुकुलित भोजनशाला।
- वाई–फाई सुविधा से युक्त पूरा भवन
- विभिन्न मंजिलों पर जाने के लिये दो लिफ्ट की सुविधा।
- स्वच्छ आर ओ पेयजल की सुविधा
- भव्य एयरकंडीशन सत्संग हॉल।
- कार पार्किंग की सुरक्षित व्यवस्था।

श्यामसुंदर कासट (अध्यक्ष)
मो.- 098315-55555

रामस्वरूप जैथलिया (महामंत्री)
मो.- 096490-79999

विनोद कुमार बांगड (कोषाध्यक्ष)
मो. 094142-12835

लोहार्गल में होगा मंदिर निर्माण

लोहार्गल. हनुमान जन्मोत्सव पर माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति स्थल लोहार्गलधाम पर भव्य मंदिर निर्माण हेतु भूमिपूजन एवं शिलान्यास रमेशचंद्र, श्रीमती सरोज, राहुल एवं केशव मनियार परिवार, जयपुर के हाथों संपन्न हुआ। निर्माणाधीन मंदिर में मुख्य प्रतिमा 'भगवान उमा-महेश संग 72 उमराव एवं गुरुजनों की प्रतिष्ठित होगी। यह प्रतिमा मार्बल की एक ही बड़ी शीला पर निर्मित होगी, जो भारतवर्ष में प्रथम होगी। मंदिर के गर्भगृह में नीलवर्ण महादेव सहित शिव परिवार की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होंगी। जहां वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक किए जाते रहेंगे। मंदिर परिसर में ही माहेश्वरी समाज की समस्त 'कुलदेवियों' के स्वरूप की मार्बल की प्रतिमाएं निर्मित करवा कर अलग-अलग प्रतिष्ठित की जाएंगी। सभी कुलदेवियों की एक ही स्थान पर पूजा एवं दर्शन हो सकेंगे। मंदिर परिसर में ही 'नव-ग्रह' की मार्बल से निर्मित प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होंगी। जहां आचार्य (पंडितजी) द्वारा अनुष्ठान किए जाएंगे। मंदिर परिसर में अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित की जाएंगी। मंदिर 60 फीट चौड़ाई एवं 87 फीट लंबाई के आकार में निर्मित होगा। ऊंचाई 30 फीट रहेगी। जो पूर्णतया मार्बल से ही निर्मित होगा, जिसके जमीन से छत तक के पिलर, दीवार, छत एवं गुंबज का निर्माण भी मार्बल से ही होगा। भूमिपूजन एवं शिलान्यास कार्यक्रम में ट्रस्ट अध्यक्ष रमेश तापड़िया, युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या, महामंत्री प्रवीण सोमानी, महासभा के संयुक्त मंत्री नंदकिशोरजी लखोटिया, पूर्व महामंत्री नारायणजी मालपानी, ट्रस्ट उपाध्यक्ष नंदकिशोर मालानी, पूर्वोत्तर राजस्थान माहेश्वरी सभा अध्यक्ष कैलाश सोनी एवं भवन निर्माण समिति सचिव आशीष जाखोटिया सहित जयपुर से श्रीनाथ मनिहार व समाज के प्रमुखजन मौजूद थे।

मरूधरा माहेश्वरी संस्थान की कार्यकारिणी गठित

भीलवाड़ा. मरूधरा माहेश्वरी संस्थान के नवनिर्वाचित अध्यक्ष दामोदर लाल सिंगी ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए सर्वसम्मति से सचिव दिनेश राठी, कोषाध्यक्ष महेश जाजू, एक्जीवयूटिव कोर कमेटी राधाकिशन सोमानी, राधेश्याम सोमानी, शांतिप्रकाश मोहता, नंदकिशोर झंवर, महेश हुरकट, उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम राठी, रतनलाल बाहेती, सत्यनारायण काबरा, मधुसूदन डागा, सहसचिव राजेश बाहेती को नियुक्त किया। विनय मूंदड़ा, धार्मिक यात्रा एवं सांस्कृतिक मंत्री जगदीश सोनी, रामकुमार बाहेती, सुझाव एवं शिकायत प्रकोष्ठ राकेश काबरा, अजय मूंदड़ा तथा कार्यकारिणी सदस्यों को नियुक्त किया गया।

> "दूसरों को देखकर अपने को मत बदलो 'सीखते चलो'

विकास परिषद का पदग्रहण समारोह

ब्यावर. भारत विकास परिषद ब्यावर का पद व दायित्व ग्रहण समारोह होटल गत दिनों संपन्न हुआ। प्रकल्प प्रभारी भागीरथ हेड़ा ने बताया कि सत्र 2019-21 के लिए आयोजित दायित्व ग्रहण समारोह का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता युगराज जैन, कार्यक्रम अध्यक्ष पवनकुमार अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि संदीप बाल्दी ने किया। अध्यक्षीय सम्मान शाखा अध्यक्ष प्रकाश ईनाणी व मंचासीन अतिथियों द्वारा अनिल भराड़िया, प्रशांत पाबूवाल, सतीश सर्राफ, ज्योति माहेश्वरी आदि को सम्मान पत्र देकर दिया गया। पद व दायित्व बोध की शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजेंद्र काबरा, सचिव प्रशांत पाबूवाल, कोषाध्यक्ष सतीश सर्राफ को बैज लगाकर मंचासीन किया।

बाहेती युवा अध्यक्ष एवं जेठा महिला मंडल अध्यक्ष घोषित

भीलवाड़ा. मरुधरा माहेश्वरी संस्थान के युवा संगठन व महिला मंडल के चुनाव भारत विकास परिषद भवन शास्त्रीनगर भीलवाड़ा में संपन्न हुए। इसमें चुनाव अधिकारी राधेश्याम सोमानी एवं मधुसूदन डागा ने महिला मंडल की सीमा जेठा को निर्विरोध अध्यक्ष घोषित किया। युवा संगठन चुनाव अधिकारी शांतिप्रकाश मोहता व राकेश काबरा ने युवा संगठन में महादेव बाहेती को निर्विरोध अध्यक्ष घोषित किया। सचिव दिनेश राठी ने बताया कि 21 अप्रैल को सुबह 8 बजे शिवाजी गार्डन मेन गेट एवं सुबह 9 बजे नीलकंठ महादेव मंदिर के बाहर शास्त्रीनगर में परिंडा वितरण कार्यक्रम रखा गया। इस दौरान संस्थान के अध्यक्ष दामोदर सिंगी, महेश जाजू, इंद्रचंद मूंधड़ा, सचिव दिनेश राठी, विनय मूंधड़ा, राजेश बाहेती, महेश हुरकट, कपिल राठी आदि कई सदस्य उपस्थित थे।

श्री लक्ष्मी महिला संगठन ने ली पद की शपथ

इंदौर. श्री लक्ष्मी माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र का शपथ विधि समारोह और गणगौर उत्सव गत दिनों आयोजित हुआ। इसमें अध्यक्ष सीमा मुछाल ने वर्तमान अध्यक्ष निशा झंवर को पिन लगाकर कार्यभार सौंपा। साथ ही अंजना बाहेती नई सचिव बनी। शपथ विधि अधिकारी के रूप में गीता मूंदड़ा उपस्थित थी। इसमें कार्यकारिणी की सदस्य, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थीं।

यश को एशियन चैंपियनशिप में छठवां स्थान

जयपुर. समाज सदस्य डॉ. ललित भराड़िया के सुपुत्र 10 वर्षीय यश भराड़िया को ऑल इंडिया चैस फेडरेशन नईदिल्ली द्वारा श्रीलंका में आयोजित एशियन यूथ चैस चैंपियनशिप 2019 में भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु भेजा गया था। यह प्रतियोगिता गत 3 से 9 अप्रैल तक आयोजित की गई। इसमें 22 देशों के 71 खिलाड़ियों ने अंडर 10 वर्ष की आयु तक के ओपन कैटेगिरी में भाग लिया था। इस स्पर्धा में यश ने छठवां स्थान प्राप्त किया था। यह प्रतियोगिता एशियन चैस फेडरेशन एवं विश्व चैस फेडरेशन के लिए आयोजित की गई थी।

वोमणीय का किया आयोजन

रायपुर. माहेश्वरी महिला समिति, गोपाल मंदिर द्वारा गत 24 अप्रैल को वृंदावन हॉल, सिविल लाइंस में सुबह 11 से शाम 5 बजे तक समाज के सभी वर्ग के लिए 'वोमणीय भारतीय नारी की दुनिया है' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इनके माध्यम से नागपुर से आए मोटिवेशनल कोच पवन सारडा ने महिलाओं को मोटिवेट करने के 3 मूलभूत सिद्धांतों की चर्चा की। उन्होंने बताया महिलाओं को सर्वप्रथम किसी न किसी आर्ट में रुचि हमेशा बनाए रखना चाहिए। दूसरा किसी भी एक स्पोर्ट्स में जरूरी भागीदारी करना चाहिए। तीसरा आपके जीवन में कुछ न कुछ एक कारण यानी गुड कॉज करने का जज्बा और जुनून जरूर होना चाहिए। पूरे दिन की ट्रेनिंग प्रोग्राम में उन्होंने कई तरह की मनोरंजक गतिविधियां करवाईं। कार्यक्रम संयोजिका मधु राठी एवं शशि आर मोहता थीं। अध्यक्ष संगीता चांडक, सचिव प्रगति कोठारी, प्रतिभा नथानी, मधुलिका नथानी, सुनीता लड्ढा, रमा मल, भावना मरदा, रेखा करवा, नंदा भट्टड़, रमा मल, शशि मोहता सहित अन्य सदस्याओं का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उक्त जानकारी प्रचार-प्रसार भावना मर्दा ने दी।

माहेश्वरी सभा उज्जैन की नवीन कार्यकारिणी ने ली सेवा की शपथ

उज्जैन. श्री चारभुजानाथ मंदिर गोलामंडी में आयोजित एक गरिमामय कार्यक्रम में श्री माहेश्वरी सभा, महिला मंडल, प्रगति मंडल, युवा मंडल आदि के पदाधिकारियों ने पद की शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर पदाधिकारियों ने कहा कि समाजसेवा ही उनके लिए सर्वोपरि है। मीडिया प्रभारी नट्टू मूंदड़ा ने बताया कि निर्वाचन अधिकारी विनोद काबरा एवं डॉ. एचएल माहेश्वरी ने माहेश्वरी सभा अध्यक्ष भूपेंद्र भूतड़ा, सचिव कैलाशनारायण राठी, महिला मण्डल अध्यक्ष हेमलता गांधी, प्रगति मंडल अध्यक्ष शीतल मूंदड़ा, युवा संगठन अध्यक्ष पीयूष हेड़ा आदि को सेवा और पद की शपथ ग्रहण करवाई। कार्यक्रम के पूर्व जहां भगवान श्रीराम तथा चारभुजानाथजी की आरती पूजन संपन्न हुई, वहीं निवृत्तमान पदाधिकारियों के साथ ही सेवा कार्यों में उल्लेखित योगदान के लिए समाजसेवियों को सम्मानित भी किया गया।

समाज के चुनाव संपन्न

बोटमा. स्थानीय माहेश्वरी समाज की बैठक लक्ष्मीनारायण मंदिर में हुए। बैठक के दौरान समाज का वार्षिक आय-व्यय संबंधी हिसाब-किताब सदस्यों के बीच रखा गया। समाज की कार्यकारी मंडल के त्रिवर्षीय चुनाव हुए। इसमें सर्वानुमति से अध्यक्ष राम तोतला, उपाध्यक्ष लक्ष्मण तोतला, सचिव नितेश बांगड़, कोषाध्यक्ष हुकम भांगड़िया चुने गए। अध्यक्ष चुने गए श्री तोतला वर्तमान में प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के कोषाध्यक्ष भी हैं।

कलेक्टर से की महेश सर्किल की मांग

बीकानेर. माहेश्वरी सभा के शिष्टमंडल द्वारा जिला कलेक्टर कुमारपाल गौतम से मिलकर महेश सर्किल की मांग की गई। सभा के मंत्री रघुवीर झंवर ने बताया कि बीकानेर में लगभग हर समाज यथा जैन, अग्रवाल, वैश्य समाज के सर्किल हैं। इसी प्रकार वर्षों से माहेश्वरी समाज की महेश सर्किल की मांग प्रशासन के पास लंबित है। गजनेर रोड-पुगल रोड तिराहे (माहेश्वरी छात्रावास के सामने) वाले स्थान को माहेश्वरी सभा गोद लेकर महेश सर्किल के रूप में सरकारी नियमानुसार पूर्ण विकसित करवाएगी। इसी सर्किल पर माहेश्वरी समाज द्वारा संचालित छात्रावास, गौशाला भी है। सभा अध्यक्ष गोपीकिशन पेड़ीवाल ने बताया कि यदि सरकार यह सर्किल माहेश्वरी सभा को गोद देती है तो इसका पूर्ण रखरखाव संस्था द्वारा किया जाएगा।

प्याऊ का हुआ शुभारंभ

रायपुर. छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए अग्रसेन चौक में शीतल पेयजल प्याऊ अमृत धारा का शुभारंभ वरिष्ठ समाजसेवी रामजीलाल अग्रवाल द्वारा किया गया। पूजा-अर्चना के बाद श्री अग्रवाल ने जल पीकर प्याऊ का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानिया, सचिव अमर बंसल, माहेश्वरी जिला सभा अध्यक्ष प्रकाश माहेश्वरी, अग्रसेन जनकल्याण समिति सत्यनारायण सिंघानिया, अग्रवाल सभा के महामंत्री विजय अग्रवाल, माहेश्वरी सभा के प्रचार-प्रसार प्रभारी एवं सम्मेलन के कार्यकारिणी सदस्य सूरजप्रकाश राठी, ललित चांडक सहित सम्मेलन के कई सदस्यगण उपस्थित थे।

डॉ. गांधी कान्टेस्ट में प्रथम

कांकेर. भानुप्रताप नगर निवासी जीवनलाल गांधी एवं कौशल्यादेवी गांधी के सुपुत्र डॉ. पंकज गांधी (फिजियोथैरेपिस्ट) ने छत्तीसगढ़ एवं मप्र दोनों राज्यों में जेएफएम कान्टेस्ट में प्रथम प्रीमियम आय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके द्वारा उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने का संदेश दिया है। इस उपलब्धि पर माहेश्वरी समाज कांकेर धमतरी जिला सभा व युवा संगठन सहित समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

बिड़ला होंगे लायंस अध्यक्ष

भीलवाड़ा. होली स्नेह मिलन समारोह के दौरान एक रंगारंग कार्यक्रम में आगामी वर्ष 201-20 हेतु सर्वसम्मति से लायंस क्लब भीलवाड़ा सिटी के नए अध्यक्ष के रूप में सुरेश बिरला का चयन किया गया। सचिव अनित शाह ने उक्त जानकारी दी।

सब पढ़ाया गया त्रिकोण, चौकोण,
लघुकोण, समकोण, षटकोण..!
पर...जीवन में जो हमेशा उपयोगी है, कभी
नहीं पढ़ाया...!!
वो है... दृष्टिकोण...

सर्वोत्तम कार्य पर किया सम्मान

उज्जैन. नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल में ई शक्ति का सर्वोत्तम कार्य करने हेतु महर्षि उत्तम स्वामी जनकल्याण समिति उज्जैन को नाबार्ड मुख्य महाप्रबंधक एसके बंसल द्वारा पुरस्कृत किया गया। समिति के प्रबंधक प्रशांत राठी व एनीमेटर मुकेश पटेल को यह सम्मान प्रदान किया गया। श्री राठी ने बताया कि ई शक्ति परियोजना के तहत स्वयं सहायता समूह में डिजिटलाईजेशन के कार्य में समिति ने पूरे मप्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य किया है।

परिचय सम्मेलन का आयोजन

इंदौर. श्री माहेश्वरी संस्कृति केंद्र द्वारा आयोजित माहेश्वरी उच्च शिक्षित/प्रोफेशनल्स ग्यारहवां परिचय सम्मेलन का आयोजन 30 जून 2019 को किया जा रहा है। सम्मेलन के फोल्डर का विमोचन 22 अप्रैल को श्री सिद्धि विनायक गणेश मंदिर, खजराना इंदौर में सतपाल भट्ट के मुख्य आतिथ्य में किया गया। सम्मेलन में प्रविष्टि हेतु अंतिम 10 जून 2019 को रखी गई है। उक्त जानकारी अध्यक्ष मनीष सोमानी, स्वागताध्यक्ष सागरमल खटौड़ एवं संयोजक मुनीश मालानी ने दी।

विपुल व वैभव ने किया एमबीए

कोलकाता. भजन गायक विजय सोनी व पुष्पा सोनी के सुपुत्र विपुल ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थान आईएसबी हैदराबाद से एमबीए किया है। इसी प्रकार उनके छोटे सुपुत्र वैभव सोनी ने 23 वर्ष की उम्र में प्रतिष्ठित आईआईएम से एमबीए की उपाधि प्राप्त की है। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजन ने हर्ष जताया है।

जीर्ण-शीर्ण हो रहा है माहेश्वरी भवन

गुलाबपुरा
(शंकरसोनी,भीलवाड़ा)

अजीब विडंबना है कि भीलवाड़ा जिले के गुलाबपुरा में माहेश्वरी परिवारों की बहुतायत होने के बावजूद यहां सुव्यवस्थित माहेश्वरी भवन नहीं है। पूर्वजों द्वारा बना हुआ एकमात्र महेश भवन जो कि भदादा बाग में स्थित है, वह भी पूर्णतया क्षत-विक्षत ढांचे के स्वरूप में खड़ा हुआ है। बड़ा ही सोचनीय विषय है कि इतनी तादाद में माहेश्वरी बंधुओं के निवास वाले शहर में इस तरह की भयावह स्थिति बनी हुई है। जहां हर छोटे से छोटे गांव में, कस्बे में भी माहेश्वरी भवन का अच्छी स्थिति में बना हुआ है, वहीं दूसरी ओर इस स्थिति का होना, संपूर्ण जिला माहेश्वरी समाज को ही सोचने पर मजबूर करता है। भगवान महेश के वंशज सिर्फ और सिर्फ मूकदर्शक बन कर रह रहे हैं। अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है गुलाबपुरा का महेश भवन। कहते हैं कि समाज का भवन किसी मंदिर से कम नहीं होता है क्योंकि वहां पर सारे सुख और दुःख के कार्य होते हैं परंतु गुलाबपुरा का महेश भवन समाज की अनदेखी के कारण जीर्ण-शीर्ण हालत में है। इस भवन में वर्तमान में कोई भी सामाजिक कार्य नहीं हो पा रहे हैं क्योंकि भवन का काफी समय से मेंटेनेंस व रंगरोगन नहीं हुआ है और गंदगी से पटा हुआ है। आज समाज की मीटिंग हो या कोई सामाजिक कार्य, सभी किराये की जगह में किए जाते हैं। शीघ्र ही समाजजनों ने इसकी मरम्मत नहीं करवाई तो यह हादसे का शिकार हो सकता है और अपना मूर्तरूप खो सकता है। जहा तक इस भवन के जीर्ण शीर्ण होने का एकमात्र मात्र कारण स्थानीय समाज में दो धड़े होना लगता है। वे एक दूसरे के फैसलो को नहीं मानते है। यहा तक कि समाज के दोनों गुट के सामूहिक भोज भी अलग अलग होते है। इसमे महेश नवमी के भोज भी शामिल है। अगर किसी का व्यक्तिगत कोई स्नेहभोज इत्यादी हो तो वहा दोनों गुट अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर, समाज के संगठित होने का झूठा दंभ भरते है।

महाराष्ट्र में प्रशासनिक शिविर

पुणे. प्रशासनिक सेवाओं में चयन में सहयोग हेतु परीक्षा पद्धति, विषयों का चयन, सफलता के मंत्र व समाज की ओर से उपलब्ध सुविधाएं इत्यादि विषय पर सविस्तार मार्गदर्शन हेतु महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा (प्रशासनिक सेवा मार्गदर्शन समिति) द्वारा पुणे में गत 17 मार्च को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान से अनेक युवा माहेश्वरी सीए, इंजीनियर, डॉक्टर्स आदि उपस्थित थे। समिति प्रमुख किशनप्रसाद दरक ने वक्ताओं से शंका समाधान का आग्रह किया। साथ ही एबी माहेश्वरी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पटेलनगर दिल्ली में अप्रैल 2019 से प्रारंभ हो रहे श्री जयचंदलाल करवा छात्रावास के साथ ही जरूरतमंद युवाओं को श्री बद्रीलाल सोनी ट्रस्ट भीलवाड़ा द्वारा प्रस्तावित आर्थिक सहयोग की विस्तृत जानकारी भी दी गई। हिमाचल प्रदेश मुख्यमंत्री कार्यालय के एडिशनल चीफ सेक्रेटरी डॉ. श्रीकांत बाल्दी, एडिशनल कमिश्नर इनकम टैक्स संजय पुगलिया, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के विशेष कार्यासन अधिकारी संतोष अजमेरा एवं सामान्य वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण की जानकारी देने हेतु एडिशनल कलेक्टर रामनारायण गगराणी उपस्थित थे।

प्रेमकिशोर सिकची चॅरीटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद निर्मित

आलिशान 'सिकची रिसोर्ट', वलगांव

विशेषताएं : * निसर्गरम्य, शांत पवित्र वातावरण में शुभ कार्यों को यादगार बनाने का एक अनूठा अनुभव। * विदर्भ में उच्च कोटि के लिए नामांकित वातानुकूलित वास्तु में करीब 300 मेहमानों के लिए ठहरने की उत्तम व्यवस्था। * मंदिर, भव्य स्टेज, सभागृह, पार्किंग, जलप्रपात, बालवाटिका तथा अति आधुनिक शाकाहारी रेस्टारेंट का सानिध्य, एक सुंदर पिकनिक स्पॉट * रात-दिन कार्यरत प्रशिक्षित सेवकगण की उपस्थिति। * जनहित कार्यक्रम बिनामूल्य तथा सम्पूर्ण आय सामाजिक उत्थान के लिए व्यय करने का दृढसंकल्प।

'सिकची रिसोर्ट', वलगांव, नागपुर से करीब 160 कि.मी. तथा अमरावती से 10 कि.मी. दूरी पर अमरावती-परतवाड़ा मार्ग पर स्थित है। विविध पैकेजेस तथा अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

सचिन धरनकर
मो. 7507805264

Email : sikchi123@yahoo.com

पियूष शर्मा
मो.नं. 9637385336

पुस्तक 'त्रिदेव' का हुआ विमोचन

जीरापुर. वरिष्ठ समाजसेवी व ख्यात पेट्रोलियम व्यवसायी ओमप्रकाश मूंदड़ा एवं परिवार द्वारा अपनी पुत्रवधू स्व. श्रीमती नीलू ज्ञानस्वरूप मूंदड़ा की पुण्यस्मृति में ब्यावरा तहसील के ग्राम चाठा में 'श्री त्रिदेव सिद्धधाम मंदिर' का निर्माण करवाया गया है। मूंदड़ा परिवार द्वारा इस मंदिर की विशेषताओं को व्यक्त करती एक अति संग्रहणीय पुस्तक 'त्रिदेव' का प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक का विमोचन गत दिनों मंदिर के पीठाधीश्वर भगवात भूषण प्रमोद नागर द्वारा किया गया। इस अवसर पर पं. योगेश शुक्ल भी विशेष रूप से उपस्थित थे। पं. नागर व पं. शुक्ल का अभिनंदन श्री मूंदड़ा ने किया। इस अवसर पर मूंदड़ा परिवार के सदस्य सहित योगेश शुक्ल सहित कई गणमान्यजन उपस्थित थे। इस पुस्तक का आकर्षण मुद्रण ऋषि ऑफसेट उज्जैन द्वारा किया गया है। इसका आलेखन श्री माहेश्वरी टाईम्स के लेखक अखिलेश शर्मा 'विधु' तथा आकल्पन ख्यात चित्रकार अक्षय आमेरिया द्वारा किया गया है।

गांधी अध्यक्ष, मंडोवरा सचिव

उज्जैन. श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल के त्रिवार्षिक चुनाव गत दिनों पुष्पा मंत्री की अध्यक्षता में संपन्न हुए। इसमें सर्वानुमति से हेमलता गांधी को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष आशा तोतला, सचिव मनोरमा मंडोवरा, सहसचिव सीमा परवाल, कोषाध्यक्ष संध्या हेड़ा, सांस्कृतिक सचिव ज्योति राठी को मनोनीत किया गया।

नवीन समाज भवन का निर्माण

वरंगल. प्रगतिशील मारवाड़ी माहेश्वरी समाज का नूतन भवन सभी के सहयोग से करीब 3 करोड़ की लागत से निर्मित हो रहा है। इस भवन में 18 डीलक्स रूम, स्वागत कक्ष करीब 500 सिटिंग वाला, बैंकेट हॉल 250 सिटिंग वाला, किचन, 3 स्टोर रूम, ऑफिस के लिए, भोजन कक्ष, भोजन के लिए ओपन शेड, 1000 सिटिंग के हिसाब से ओपन गार्डन, लिफ्ट वगैरह की सभी आधुनिक सुविधाएं रहेंगी। इसका शुभारंभ 3 महीने पहले हुआ। इसकी भवन समिति में अध्यक्ष वेणुगोपाल मूंदड़ा, उपाध्यक्ष संपतकुमार लाहोटी, मंत्री ओमप्रकाश लोया, कोषाध्यक्ष बंकटलाल सोनी एवं अन्य कार्यकारणी सदस्य शामिल हैं।

गिलड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट गठित

निजामाबाद. ख्यात वरिष्ठ समाजसेवी व स्थानीय नगर निकाय के पूर्व पार्षद 86 वर्षीय एडवोकेट मदनलाल गिलड़ा ने 'मदनलाल रामकुंवारी देवी गिलड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट' का गठन किया है। इसमें एक अच्छी स्थायी राशि बैंक में जमा रहेगी। इसके ब्याज से समाज के लोगों को शैक्षणिक, चिकित्सा, धार्मिक एवं सेवा कार्यों में सहयोग दिया जाएगा। इस ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री गिलड़ा के चारों पुत्र बंकटलाल, राजगोपाल, रमेशकुमार व श्रीनिवास गिलड़ा रहेंगे।

"कई बार जीवन में कुछ आसान; मामूली कार्य भी वास्तव में असाधारण परिणाम दे जाते हैं? स्वस्थ रहो, मस्त रहो, उत्साहित रहो

बागड़ी सांस्कृतिक मंत्रालय से सम्मानित

नागपुर. भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय के आधीन साउथ सेंट्रल जोन कल्चरल सेंटर व प्रयास स्कूल फॉर स्पेशल बच्चों के तरफ से ओटीजम दिन पर रैली व सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था। कार्यक्रम के विशेष अतिथि भारत सरकार सांस्कृतिक मंत्रालय के डायरेक्टर डॉ. दीपक खीरवाड़कर थे। विशेष अतिथि राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त लेखक व वरिष्ठ समाजसेवक शरद बागड़ी, कोमहाड के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. यशवंत पाटिल, चपहा के चेयरपर्सन डॉ. उदय बोधनकर, विदर्भ इंडस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष अतुल पांडे व बीजेपी उत्तर के अध्यक्ष व समाजसेवक दिलीप गौर थे। इस अवसर पर दिव्यांग बच्चों के साथ सभी अतिथियों ने सर्वोदय आश्रम अमरावती रोड से पैदल रैली निकाली। मोहम्मद सलीम ने विशेष अतिथि श्री बागड़ी का परिचय देते हुए बताया कि शरदजी को निर्भीक लेखन व समाजसेवा के लिए दो अंतरराष्ट्रीय, ९ नौ राष्ट्रीय व ३० राज्यस्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुए। श्री बागड़ी की विशेष उपलब्धियों के लिए डॉ. उदय बोधनकर, अतुल पांडे, डॉ. यशवंत पाटिल की उपस्थिति में भारत सरकार सांस्कृतिक मंत्रालय के डायरेक्टर डॉ. खीरवाड़कर के हाथों अति विशिष्ट सम्मान सीटेशन ऑफ ओनर अवॉर्ड दिया गया। दिव्यांग बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। साउथ सेंट्रल जोन कल्चरल सेंटर के डायरेक्टर श्री खीरवाड़कर व श्री बागड़ी के हाथों प्रमाण-पत्र दिए गए।

शहीदों के लिए 5 लाख रुपए का सहयोग

दिल्ली. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा की ओर से प्रधानमंत्री राहत कोष में पुलवामा में हताहत/शहीद सैनिकों हेतु पांच लाख रुपए का जनादेश नितिन गडकरी को भेंट किया गया। सभापति श्याम सोनी, भामाशाह नंदकिशोर सारडा, महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य कृष्णा राठी, नागपुर जिला सचिव दिनेश राठी उपस्थित थे।

महिला दिवस पर आयोजन

अमरावती. महिला दिवस पर विविध सामाजिक नाटिका द्वारा समाज में चल रही समस्या पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर सीए और डॉक्टर बेटियों का सम्मान किया गया। साथ ही साथ अपने बलबूते अपने पैरों पर खड़ी हुई महिलाओं का भी सत्कार किया गया। विशेष अतिथि शीतल बैंकटलाल राठी थीं। अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, सचिव सपना पनपालिया, पूर्व अध्यक्ष प्रभा, प्रीति आदि मौजूद थे।

नेशनल लेवल पर पहुंची दिया

हनमकोंडा (तेलंगाना). दिया सोनी सुपुत्री आनंद श्वेता सोनी ने ग्रीनवुड स्कूल हनमकोंडा में द्वितीय चरण की स्टैंडर्ड में वीके एजुकेशन सॉल्यूशन स्पेल टेस्ट में नेशनल लेवल पर पहुंचकर गौरवान्वित किया है। उनकी इस उपलब्धि पर माहेश्वरी समाज व प्रगतिशील मारवाड़ी समाज ने हर्ष जताया है।

रुबरु मिलने का मौका कम ही मिलता है
इसीलिए
शब्दों से नमन कर लेता हूँ अपनो को !!!
प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में मुझ से श्रेष्ठ है।
अत: मैं सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों को हृदय की
गहराइयों से प्रणाम करता हूँ।

'शेष जिंदगी, विशेष जिंदगी' का आयोजन

खामगांव. श्री महेश सेवा समिति द्वारा 'शेष जिंदगी विशेष जिंदगी' दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में समाज के वरिष्ठजनों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। उद्घाटन बुलढाणा अर्बन के संस्थापक राधेश्याम चांडक की उपस्थिति में हुआ। जीवन दर्शन विषय पर डॉ. राम देशमुख का व्याख्यान हुआ। स्वास्थ्य संबंधित जानकारी अकोला के डॉ. आनंद शर्मा द्वारा प्रदान की गई। 'आईए उम्र को हराएं' विषय पर अमरावती के अनिल राठी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। दूसरे दिन के कार्यक्रम में सुबह योगासन एवं व्यायाम के साथ पारिवारिक सामंजस्य विषय पर हैदराबाद के रमेश परतानी, 'गिरने से राहत, स्वस्थ स्नान की चाहत', इस विषय पर नागपुर के संजय बजाज तथा 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' विषय पर अकोला के अनूप राठी ने मार्गदर्शन दिया। माहेश्वरी महिला मंडल, माहेश्वरी युवक मंडल, माहश्वेरी बहु बेटी मंडल, महेश पाटीदार, माहेश्वरी व महिला प्रकोष्ठ सदस्यों ने सहयोग दिया। महेश सेवा समिति खामगांव के कृष्णकांत भट्टड़, रतन राठी, डॉ. विजय टावरी, जगदीश नावंदर, नंदकिशोर चांडक, जितेंद्र झंवर, निलेश भैय्या, नवलकिशोर लोहिया, सतीश भट्टड़, प्रमोद मोहता, विकास चांडक आदि का भी योगदान रहा।

गवरजा गीतमाला का विमोचन

जैसलमेर. माहेश्वरी समाज की पारिवारिक संस्था श्री प्रीति क्लब द्वारा आयोजित ''गवरजा गीतमाला-2019'' कार्यक्रम स्थानीय जस्सूसर गेट के बाहर स्थित माहेश्वरी सदन में उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। क्लब के मंत्री व कार्यक्रम के मुख्य आयोजक नारायणदास दम्माणी ने बताया कि कार्यक्रम का आगाज श्री प्रीति क्लब परिवार की सदस्याओं द्वारा मां गवरजा की पूजा के साथ हुआ। उसके बाद उपस्थित सभी माहेश्वरी बंधुओं ने नारायण बिहाणी व भतमाल पेड़ीवाल के निर्देशन में मां गवरजा की आरती गायी। क्लब संरक्षक मगनलाल चांडक ने क्लब की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। क्लब अध्यक्ष घनश्याम कल्याणी ने बताया कि मुख्य अतिथि सोहनलाल गट्टाणी (अध्यक्ष उ.रा.प्रा. माहेश्वरी महासभा), विशिष्ट अतिथि नृसिंह मिमाणी (समाजसेवी व प्रमुख उद्योगपति) व कार्यक्रम की अध्यक्षता किसन दम्माणी (पूर्व अध्यक्ष माहेश्वरी सभा, शहर इकाई) ने की। मंत्री दम्माणी ने स्वागत उद्बोधन में आए अतिथियों व अन्य आगंतुकों का स्वागत किया। इस अवसर पर मां गवरजा के गीतों के संकलन की पुस्तक ''गवरजा गीतमाला'' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर आयोजित गायन स्पर्धा में विभिन्न माहेश्वरी मोहल्लों के 10 माहेश्वरी महिला ग्रुपों ने भाग लिया। सभी ग्रुपों ने एक से एक बढ़कर गायन प्रस्तुति देकर पूरे सदन को मां गवरजा के गीतों से भक्तिमय बना दिया।

मैराथन फॉर नेशन का आयोजन

रायपुर. माहेश्वरी युवा मंडल महिला समिति द्वारा गत 3 मार्च को पुलवामा हमले में शहीद सीआरपीएफ जवानों के परिवारों के सहायतार्थ मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। दौड़ से पहले आरती माहेश्वरी ने प्रतिभागियों को जुम्बा कराया। फिर राष्ट्रगान के बाद शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई और दो मिनट का मौन रखा गया। सीआरपीएफ के आई.जी एवं डी.आई.जी ने दौड़ को झंडी दिखाकर शुरू किया। अंत में पुरस्कार वितरण हुआ। साथ ही महिला समिति द्वारा सीआरपीएफ आई.जी एवं डी.आई.जी को चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी युवा मंडल महिला समिति की अध्यक्ष नीलिमा लड्ढा एवं सचिव नीना राठी सहित सदस्याएं मौजूद थीं। छत्तीसगढ़ प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के बिजनेस डेवलपमेंट डायरेक्टर नीलेश मूंदड़ा का विशेष सहयोग रहा। समाज के विभिन्न संगठनों का भी सहयोग रहा।

महिला दिवस का किया आयोजन

चंद्रपुर. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा जागतिक महिला दिवस मनाया गया। इसमें चंद्रपुर जिले के गिलबिली गांव में सर्वोदय महिला मंडल, चंद्रपुर द्वारा संचालित श्रीमती यशोधरादेवी अनु. आदिवासी आश्रमशाला में संस्था की संचालिका नील बजाज की अध्यक्षता में युवतियों के लिए विशेष प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। मुख्य मार्गदर्शन डॉ. रूजूता मूंधड़ा (डीजीओ) ने दिया। इस प्रशिक्षण का लाभ 12 वर्ष के ऊपर आयुवाली लगभग 50 युवतियों ने लिया। डॉ. मूंधड़ा ने प्रकाश डालते हुए हार्मोन्स चेंजेस पर प्रकाश डाला। इस प्रशिक्षण के उपरांत युवतियों को सेनीटरी नैपकीन का वितरण किया। शाला के छात्रों को मंडल की ओर से आईसक्रीम का वितरण किया गया। मंच संचालन रश्मि डालिया ने किया एवं आभार प्रदर्शन मंडल सचिव इंदू जाजू ने किया। शीला डालिया, आनंदी सारडा, उर्मिला करवा, वंदना हेड़ा, दीपिका सारडा, गौरी काबरा, मोनिका सोमानी आदि मौजूद थे।

सात दिवसीय विदेश यात्रा का आयोजन

दिल्ली. अखिल भारतवर्षीय महिला संगठन के अंतर्गत सुरम्या समिति द्वारा आगामी 10 से 17 मई तक एक विदेश यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इस सात दिवसीय यात्रा में सिंगापुर व इंडोनेशिया के भ्रमण के साथ विश्वविख्यात क्रूज 'जेन्टिंग ड्रीम' पर 5 रात व्यतीत करना भी शामिल रहेगा।

इस प्रोग्राम की प्रेरणास्रोत राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी एवं राष्ट्रीय समिति प्रमुख शोभा सादानी हैं। इस यात्रा का संचालन सुरम्या समिति की प्रभारी निशा लड्ढा द्वारा किया जा रहा है। इस विदेश यात्रा का आकर्षण है विश्व विख्यात जेन्टिंग ड्रीम शीप पर पांच दिनों का समुद्र भ्रमण। इस दौरान सुराब्या और नार्थ बाली का भी भ्रमण किया जाएगा। सदस्यों ने इस विशेष यात्रा को भरपूर पसंद किया है और अल्प समय में पारिवारिक सदस्यों के साथ 91 सदस्याएं मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, बैंगलोर, चेन्नई एवं हैदराबाद शहरों से इस यात्रा में शामिल हो रही हैं।

> हम जिस चेहरे के साथ जन्म लेते हैं वो हमारे बस में नहीं होता।
> मगर जिस चरित्र, व्यक्तित्व एवं किरदार के साथ हम इस संसार से विदा लेते है उसके लिये हम खुद जिम्मेदार होते हैं

नवीन परिसर में वरंगल शाखा

हैदराबाद. दक्षिण भारत की सहकारिता क्षेत्र की बहुराज्यीय अनुसूचित बैंक महेश बैंक की वरंगल स्थित शाखा का स्टेशन रोड पर नवीन परिसर में नई साज-सज्जा के साथ शुभारंभ समारोहपूर्वक हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में इंटीग्रेटेड ट्राइबल डेवलपमेंट एजेंसी के प्रोजेक्ट अधिकारी वी. चक्रधर राव एवं वरंगल चेंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष दिड्डीकुमार स्वामी थे। महेश बैंक के चेयरमैन पुरुषोत्तम मानधणा ने कहा कि बहुत समय से शाखा को अधिक सुविधाजनक स्थान पर स्थानांतरित करने की ग्राहकों की मांग थी। चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग ने भी इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि ग्राहक को समझकर उनके लिए लाभकारी बैंक उत्पाद एवं सुविधाएं जुटाना महेश बैंक की प्राथमिकताएं हैं। इस अवसर पर बैंक के वाइस चेयरमैन रामपाल अट्टल, निदेशक मंडल के पुष्पा बूब, बृजगोपाल असावा, चैनसुख काबरा, कमलनारायण राठी, कृष्णचंद्र बंग, लक्ष्मीनारायण राठी, नंदकिशोर हेड़ा, ओमप्रकाश जाखोटिया, रामप्रकाश भंडारी, श्रीगोपाल बंग, श्रीकांत (गोविंद) ईनाणी आदि उपस्थित थे।

समाज की बैठक में लिए गए कई निर्णय

भीलवाड़ा. अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की योजनाओं को विस्तृत रूप से नगर सभा समाज में लागू करवाऐ। विजन 2025 को देखते हुए समाज में परिवर्तन की सोच पैदा हो। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को सभी सुविधाएं देकर आगे बढ़ाएं एवं एक वर्ष में समाज के 10 विद्यार्थियों से ज्यादा की सिविल सर्विसेस में जाने में मदद करें। उक्त विचार अभामा महासभा के पूर्व सभापति रामपाल सोनी ने श्रीनगर माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में हरणी महादेव रोड स्थित रामेश्वर रोड भवन में आयोजित बैठक में व्यक्त किए। इस बैठक में समाज हित में कई निर्णय लिए गए। सभा अध्यक्ष केदार जागेटिया ने बताया कि शादियों में महासभा में लिए निर्णय अनुसार प्री-वेडिंग बंद की जाए। उठावने में पत्र वाचन नहीं हो एवं उठावने का समय 1 घंटा किए जाए। सभा वर्षभर में अन्य सामाजिक सरोकार के कार्य भी हाथ में ले। विभिन्न कॅरियर सेमिनार का आयोजन समय-समय पर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। सभा मंत्री केदार गगरानी ने बैठक का संचालन किया। देवकरण गग्गड़, आरएल नौलखा, राधेश्याम सोमाणी, कैलाश मूंदड़ा, दीनदयाल मारू, देवेंद्र सोमाणी, जगदीश कोगटा, हरीश पोरवाल आदि मंचासीन थे।

> इच्छाओं के अनुरूप जीने के लिए
> जुनून चाहिए
> वरना परिस्थितियां तो सदा
> विपरीत रहती हैं।

नवसंवत्सर का किया स्वागत

ब्यावर. भारत विकास परिषद ब्यावर द्वारा विश्व की प्राचीनतम काल गणना का प्रारंभ दिवस नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत 2076 का स्वागत कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ आयोजित हुआ। प्रकल्प प्रभारी संदीप नाहटा ने बताया कि प्रातः भारत माता सर्कल पर सूर्योदय की पहली किरण के साथ नववर्ष कार्यक्रम के आगाज का शुभारंभ भारत माता की मूर्ति पर शाखा अध्यक्ष राजेंद्र काबरा एवं सचिव प्रशांत पाबूलाल ने दीप प्रज्जवलित कर किया। उपाध्यक्ष अनिल भराड़िया, आलोक गुप्ता, कोषाध्यक्ष सतीश सर्राफ, भागीरथ हेड़ा आदि कई पदाधिकारी व सदस्य मौजूद थे।

प्रेम माहेश्वरी बने एसोसिएशन सचिव

इंदौर. टाईल्स एवं सेनेटरी वेयर थोक व्यापारी एसोसिएशन के द्वि-वार्षिक चुनाव में प्रेम माहेश्वरी को सचिव पद पर निर्विरोध निर्वाचित किया गया। इसके साथ ही इन चुनावों में उपाध्यक्ष नन्नू मूंधड़ा, कोषाध्यक्ष सुनील काबरा एवं कार्यकारिणी में सर्वेश्वर माहेश्वरी, राजेश मानधन्या, राजेश माहेश्वरी व मनीष लाठी को चुना गया। प्रेम माहेश्वरी इसके अलावा स्टोन एवं टाइल्स विक्रेता संघ लोहा मंडी क्षेत्र इंदौर में पिछले 4 वर्षों से अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दे रहे हैं तथा अहिल्या चैंबर ऑफ कॉमर्स में भी शामिल हैं।

नवसंवत्सर स्टीकर का विमोचन

उदयपुर. भारत विकास परिषद द्वारा नवसंवत्सर के स्टीकर का प्रकाशन किया गया। इनका विमोचन राजसमंद विधायक व पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी ने किया। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य हस्तीमल ने की। समारोह में प्रताप शाखा के मुख्य संरक्षक डॉ. सत्यनरायण माहेश्वरी, संरक्षक नरेंद्र पोरवाल आदि उपस्थित थे।

घटती जनसंख्या चिंतनीय

भोपाल. अभामा महासभा के सभापति श्याम सोनी ने भोपाल जिले के बैरसिया नगर में आयोजित 'संगठन आपके द्वार' कार्यक्रम में समाज की घटती जनसंख्या और महिलाओं के घटते प्रतिशत पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज में 42 प्रतिशत महिलाएं हैं, जबकि 58 प्रतिशत पुरुष, जो कि चिंतनीय है। कार्यक्रम में उन्होंने समाज में सक्रिय युवा वर्ग की प्रशंसा की। इस अवसर पर मप्र पूर्व क्षेत्रीय प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष विजय राठी ने महासभा की योजनाओं के क्रियान्वयन और जरूरतमंद समाजजनों के उत्थान हेतु प्रदेश सभा के साथ जुड़ने की अपील सभी उपस्थितजनों से की। जिला सभा सचिव राजेंद्र गट्टानी ने भोपाल जिला माहेश्वरी सभा से संबंधित भ्रांतियों के विषय में अपना स्पष्टीकरण देते हुए जिला सभा से जुड़कर सक्रिय सहयोग का आग्रह किया। सभापति के आह्वान पर नगर के युवा समाजबंधुओं ने संपर्क एप डाउनलोड कर आर्थिक सर्वेक्षण फॉर्म भरते हुए तत्काल जानकारी उपलब्ध करा दी। पंकज गट्टानी ने सामाजिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मनोहर लाहोटी ने किया। आभार प्रदर्शन जगदीश सारडा ने किया।

प्याऊ का किया शुभारंभ

चंद्रपुर. गत 2 अप्रैल को चंद्रपुर बस स्टैंड के परिसर में माहेश्वरी सेवा समिति एवं माहेश्वरी युवक मंडल द्वारा पाणपोई (प्याऊ) का शुभारंभ किया गया। उदघाटन चंद्रपुर बस स्थानक के प्रमुख सचिन डाफले एवं हेमंत गोवर्धन एवं माहेश्वरी सेवा समिति अध्यक्ष ओमप्रकाश सारडा एवं सचिव सुरेश राठी द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माहेश्वरी युवक मंडल अध्यक्ष राजेश काकानी ने की। श्याम बजाज, दिनेश बजाज, गोंडवाना विश्वविद्यालय के वाणिज्य शाखा के डीन जुगल सोमानी, प्रभाकर मंत्री, महावीर मंत्री, प्रदीप माहेश्वरी, प्राध्यापक श्री भूतड़ा आदि उपस्थित थे। आभार आशीष मूंधड़ा ने माना।

> "याद रखें छोटे-छोटे निरंतर प्रयास जीवन में बड़े पैमाने पर बदलाव लाते हैं? चलायमान रहें

उल्टा चश्मा थीम पर हुआ आयोजन

भीलवाड़ा. गत 27 मार्च को आरकेआरसी व्यास क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में शीतला सप्तमी पर्व पर विशेष आयोजन आकर्षण का केंद्र रहा। देवरिया बालाजी रोड स्थित आरकेआरसी व्यास माहेश्वरी भवन सतरंगी रंगों में गजीबो पांडाल से सजाया गया। जहां उल्टा चश्मा थीम पर कॉमेडियन, पंजाबी नृत्य, चंग की धूम व आर्केस्ट्रा की धून पर मस्ती की। सभा अध्यक्ष अशोक मूंदड़ा ने बताया कि आयोजन स्थल का नाम गोकुल धाम रखा गया। जहां पर उल्टा चश्मा थीम पर जेठालाल, दया भाभी, टप्पू सेना आदि पात्र समाज द्वारा विभिन्न पदाधिकारियों को बनाया गया। समारोह में बेस्ट ड्रेस अप अवॉर्ड भी दिया गया।

शहीदों को अर्पित की श्रद्धांजलि

पुरुलिया. स्थानीय माहेश्वरी महिला समिति द्वारा मार्च महीने में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अंतर्गत पुलवामा में शहीदों की आत्म शांति के लिए सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ हुआ और एक मिनट का मौन रखा गया। महाशिवरात्रि पर जयश्री सारदा द्वारा 2 घंटे का शिव पावती के विवाह पर सत्संग आयोजित हुआ। महिला दिवस के अवसर पर नाटक प्रस्तुत किया गया। होली के रंगारंग कार्यक्रम में गेम्स और जलपान की व्यवस्था की गई। जानकारी संगीता मोहता संपादक पुरुलिया ने दी।

उठावने में नहीं होगा पत्र वाचन

भीलवाड़ा. माहेश्वरी समाज में अब प्री-वेडिंग नहीं होगी। फिर भी कोई ऐसा करता है, तो माहेश्वरी महासभा व नगर माहेश्वरी सभा पदाधिकारी भोज में शामिल नहीं होंगे। उठावने में पत्र वाचन नहीं कर, इसका समय एक घंटे तक किया जाएगा, ताकि दूरदराज से आने वाला व्यक्ति इसमें शामिल हो सके। यह निर्णय हरणी महादेव रोड स्थित रामेश्वरम् भवन में श्रीनगर माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में हुई आयोजित कार्यकारी मंडल कार्यसमिति सदस्यों की बैठक में किया गया। नगर सभाध्यक्ष केदार जागेटिया व सभा मंत्री केदार गगरानी ने बताया कि बैठक में देवकरण गग्गड़, आरएल नौलखा, राधेश्याम सोमाणी, राधेश्याम चेचाणी, कैलाश मूंदड़ा, दीनदयाल मारू, देवेंद्र सोमाणी, जगदीश कोगटा, हरीश पोरवाल, केजी राठी सहित 15 क्षेत्रीय सभा के 272 नगर प्रतिनिधि सहित 400 से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे।

संगठन आपके द्वार का हुआ आयोजन

भोपाल. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति श्याम सोनी माहेश्वरी समाज भोपाल पूर्वांचल द्वारा आयोजित संगठन आपके द्वार कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री सोनी ने महासभा द्वारा सामाजिक समता हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने सभी परिवारों से आर्थिक सर्वेक्षण फॉर्म भरने की अपील भी की। सभापति ने भोपाल जिला सभा द्वारा किए गए आंचलिक इकाइयों के गठन को सराहनीय कदम बताते हुए इसे वर्तमान संदर्भ में आवश्यक बताया। कार्यक्रम में माहेश्वरी समाज पूर्वांचल के अध्यक्ष शिशिर तोषनीवाल द्वारा स्वागत उद्‌बोधन दिया गया। सचिव सुनील मानधन्या ने संगठन संबंधी जानकारी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम को भोपाल जिला सभा अध्यक्ष श्याम बांगड़ एवं मप्र पूर्व क्षेत्रीय प्रादेशिक सभा के अध्यक्ष विजय राठी ने भी संबोधित किया।

बनोली की रस्म निभाई

बीकानेर. होली के दूसरे दिन से शुरू हुए गणगौर पर्व व शीतला अष्टमी के दूसरे दिन से बांसेड़े के अंतर्गत मुरलीधर व्यास नगर के भूतनाथ मंदिर के पीछे स्थित 'शांता कुंज' निवास में बनोले की रस्म निभाई गई। मनोज राठी के अनुसार कार्यक्रम की प्रमुख थीम गुलाबी रंग रखा गया। इसी थीम के आधार पर सभी ने पोषाक पहनी व पूरे परिसर को गुलाबी रंग के गुब्बारों से सजाया गया। उपस्थित महिलाओं ने राजस्थानी, मारवाड़ी व फिल्मी गीतों पर आधारित गणगौर के गीत प्रस्तुत किए। शांता राठी, रश्मि राठी, मनीषा, दीपिका, श्रीया कुंवर, स्वीटी, उमा दम्माणी आदि का योगदान रहा।

> जिसमें नुकसान सहने की क्षमता होती है वास्तव में वहीं इंसान मुनाफा कमा सकता है फिर बात चाहे व्यापार व्यवसाय की हो या परस्पर रिश्तों की।

प्याऊ का किया शुभारंभ

रतलाम (मप्र). माहेश्वरी सेवा संगठन द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी गत 31 मार्च को माहेश्वरी भवन के बाहर कसारा बाजार पर जल मंदिर (प्याऊ) का शुभारंभ किया गया। शुभारंभ वरिष्ठ समाजसेवी कैलाश मालू एवं अशोक जागेटिया के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर माधव काकाणी, रतन धूत, सुनील डांगरा, द्वारकादास भंसाली, ओमप्रकाश झंवर, नरेंद्र बाहेती, राजेश चौखड़, सतीश मारोठिया आदि कई समाजजन उपस्थित थे।

महिला दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि

उदयपुर. माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अनूठी पहल करते हुए नीमच माता मंदिर में मोमबत्ती जलाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर पुलवामा में शहीद हुए सैनिकों के लिए सहायता राशि एकत्रित कर उनके परिवार को भेजी गई। उपरोक्त कार्यक्रम में कौशल्या गट्टानी, जनक बांगड़, सरिता न्याती, आशा नाराणीवाल, कविता बल्दवा, अंकिता मंत्री, रीना सोमानी एवं कार्यकारिणी के समस्त सदस्य उपस्थित थे।

विदर्भ प्रदेश की संयुक्त बैठक संपन्न

भंडारा. विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन की त्रैमासिक संयुक्त सभा का स्थानीय राजस्थानी भवन भंडारा में आयोजन हुआ। इसमें कार्यसमिति की सप्तम एवं कार्यकारी मंडल की चतुर्थ सभा आयोजित थी। विप्र महिला संगठन तथा युवा संगठन की संयुक्त सभा भी आयोजित की गई थी। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सभा के सभापति श्याम सोनी तथा मध्यांचल के उपसभापति मोहन राठी प्रमुख रूप से उपस्थित थे। मंच पर विदर्भ प्रामासं के अध्यक्ष मदनलाल मालपानी, विदर्भ प्रामा महिला मंडल संगठन अध्यक्ष उषा करवा, विदर्भ प्रा. युवा संगठन अध्यक्ष श्रीनिवास मोहता उपस्थित थे। स्वागत भाषण स्थानीय अध्यक्ष महेश सारडा द्वारा दिया गया।

सफलता एक निरंतर यात्रा

हैदराबाद. सफलता एक निरंतर यात्रा है न कि गंतव्य। जीवन के हर मोड़ पर हमें अवरोध मिलेंगे। उन अवरोधों को पार करने पर ही सफलता प्राप्त होती है। उक्त विचार महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग ने काचीगुड़ा स्थित बद्रुका कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट सेंटर द्वारा प्रायोजित मेगा मैनेजमेंट एवं सांस्कृतिक मिलन स्प्लॉश कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। शुभारंभ अवसर पर बद्रुका कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएशन सेंटर के निदेशक कस्तुरी रंगन, बद्रुका कॉलेज के निदेशक जीएस राव, प्राचार्य सोमेश्वर राव, उपप्राचार्या राजेश अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

मूंधड़ा का हुआ सम्मान

बेंगलुरु. रविवार को बैंगलूरु के निम्हन्स सभागार में लायंस क्लब इंटरनेशल द्वारा आयोजित एक समारोह में प्रसिद्ध समाजसेवी रामगोपाल मूंधड़ा का सम्मान किया गया। श्री मूंधड़ा पिछले 50 वर्षों से लायंस क्लब के सदस्य हैं और उन्होंने इस दौरान संस्था में विभिन्न पदों पर रहकर अपनी सेवाएं अर्पित की। उनकी इस उपलब्धि पर संस्था की ओर से उनका सम्मान किया गया।

श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

नांदुरा. श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन शहरवासियों ने गत 6 से 12 अप्रैल तक किया। कथा का श्रवण गोवत्सश्री राधाकृष्ण महाराज ने करवाया। इसमें विशेष योगदान बालाजी मंदिर प्रभातफेरी मंडल नांदुरा की ओर से रहा। सुरेश खंडेलवाल, अरुण डागा, गिरिराज चांडक, जानकीदास मूंदड़ा, तराचंद लड्ढा, सुकाष मोहता आदि सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

महिला मंडल ने मनाया वार्षिकोत्सव

अजमेर. श्री माहेश्वरी महिला मंडल का वार्षिकोत्सव गत 4 अप्रैल को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल में संपन्न हुआ। यह रेट्रो-मेट्रो थीम पर आधारित था। इसके अंतर्गत फिल्मी दुनिया का 1950 से 2010 के दशक तक के सफर को दर्शाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दक्षिण राजस्थान प्रादेशिक सभा अध्यक्ष शिखा भदादा, शकुंतला माहेश्वरी व इंदिरा मंत्री रहीं। अध्यक्ष शोभा बाहेती ने सभी का स्वागत किया। सचिव लता भूतड़ा ने सभी का आभार व्यक्त किया। सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बांगड़ मातृशक्ति सम्मान से सम्मानित

कानपुर. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय संगठन मंत्री मंजू बागड़ को रोटरी इंटरनेशनल व रोटरेक्ट डिस्ट्रिक्ट 3110 द्वारा महिला दिवस के अवसर पर समाजसेवा के क्षेत्र में एक उन्नत मुकाम हासिल करने पर मातृशक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया। श्रीमती बांगड़ विभिन्न सामाजिक सेवा संस्थाओं में सक्रिय हैं। उन्हें विकलांग शिविर, महिला शिक्षा अभियान, भ्रूण हत्या रोकने के लिए कार्यशाला और मजदूरों के बच्चों को पखुंड़ी विद्यालय के माध्यम से मुफ्त शिक्षा व संसाधन उपलब्ध कराने जैसे विभिन्न सेवा कार्यों हेतु समय-समय पर सम्मानित किया गया है।

विद्यार्थियों को ड्रेस वितरण

उदयपुर. माहेश्वरी महिला गौरव ने महेश प्राथमिक स्कूल के 150 विद्यार्थियों को स्कूल ड्रेस वितरित की। मुख्य सहयोगकर्ता कौशल्या गट्टानी, जनक बांगड़, आशा नाराणीवाल, गीता सोनी, शांता सोमानी ने विशेष योगदान दिया। विद्यार्थियों को अन्य सुविधा प्रदान करने हेतु संकल्प भी लिया गया।

> जरुरी नहीं है कुछ तोड़ने के
> लिए पत्थर ही मारा जाए ए
> अंदाज बदल के बोलने से भी
> बहुत कुछ टूट जाता है!!

नवयुवकों के लिए औद्योगिक शिक्षा का स्रोत है
एमबीएफ एक्सो 2019

कोलकाता. एमबीएफ एक्सपो 2019 नवयुवकों के लिए औद्योगिक शिक्षा का अच्छा है स्रोत है। यह बात एक्सो की क्लोजिंग सैरेमनी के चीफ गेस्ट सीताराम शर्मा प्रेसिडेंट भारत चैंबर ऑफ कॉमर्स ने अपने वक्तव्य में कही। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रकार का आयोजन वर्ष में कई बार हो। चैंबर्स ऑफ कॉमर्स पूर्ण सहयोग देगा। माहेश्वरी सभा के सभापति पुरुषोत्तम मिमानी ने कहा माहेश्वरी भवन के 105 वर्ष के इतिहास में यह पहली बार हुआ है और इससे समाज में औद्योगिक जगत के प्रति नवयुवकों का रुझान बढ़ेगा। माहेश्वरी औद्योगिक शिक्षा केंद्र के सभापति डीके मोहता ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अरुणकुमार सोनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक बुलाकीदास मिमानी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पंचान्न भट्टड़, पवन बिहानी, आदित्य बिनाणी आदि का सहयोग रहा।

दुजारी बने प्रदेश संयुक्त मंत्री

आगरा. जिला माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष मनोज दुजारी को गत 29 मार्च को बदायूं में आयोजित पश्चिम उत्तर प्रदेश माहेश्वरी सभा की बैठक में प्रदेश संयुक्त मंत्री मनोनीत किया गया। जिला माहेश्वरी सभा की कार्यसमिति एवं पदाधिकारियों की बैठक में पश्चिम उत्तरप्रदेश माहेश्वरी सभा के नव मनोनीत संयुक्त मंत्री मनोज दुजारी का माला पहनाकर जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष महेंद्र डागा ने स्वागत किया।

> ध्यान का अर्थ है
> भीतर से मुस्कुराना और
> सेवा का अर्थ है इस मुस्कुराहट को
> औरों तक पँहुचाना..!!
> इसलिए सदा मुस्कुराते रहिये और
> खिलखिलाते रहिये..

नवसंवत् का किया स्वागत

बरेली. माहेश्वरी महिला समिति द्वारा हिंदू नववर्ष भारतीय विक्रम संवत् 2076 का उत्सवपूर्वक स्वागत किया गया। सभी सदस्यों ने नववर्ष के आगमन में सुंदरकांड का पाठ किया तथा देवीजी के भजन गाए। उसके पश्चात आरती और प्रसाद वितरण किया गया। इसमें सभी ने तन-मन-धन से सहयोग किया। यह कार्यक्रम संरक्षक दुर्गादेवी झंवर के निवास पर आयोजित हुआ।

परवाल बने डिप्टी जनरल सेक्रेट्री

जयपुर. पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के निवर्तमान प्रदेशाध्यक्ष एवं बैंक ऑफ राजस्थान रिटायर्ड स्टाफ सोसायटी के महामंत्री राधेश्याम परवाल बैंक पेंशनर्स के राष्ट्रीय महासंघ 'ऑल इंडिया बैंक पेंशनर्स एंड रिटायरीज फेडरेशन के गत दिनों चेन्नई में संपन्न त्रैवार्षिक महाअधिवेशन में हुए त्रैवार्षिक चुनावों में डिप्टी जनरल सेक्रेट्री निर्वाचित हुए हैं।

निःशुल्क रक्त जांच शिविर संपन्न

चंद्रपुर. गत 14 अप्रैल को जे.सी.आय. इलाईट चंद्रपूर एवं अनायुश आरोग्य प्रतिष्ठान के सम्मिलित प्रकल्प द्वारा जिला स्टेडियम मैदान पर जरूरतमंद मरीजों के लिए निःशुल्क रक्त जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 150 से अधिक लोगों के रक्त की जांच की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जे.सी.आय. इलाईट चंद्रपुर के अध्यक्ष नितेश चांडक द्वारा की गई। विशेष उपस्थिति जे.सी.आय. इंडिया झोन 13 के अध्यक्ष भरत बजाज व सचिव अनूप गांधी की रही। इस कार्यक्रम के प्रकल्प संचालक आशीष मूंधड़ा व सुशांत नक्षिणे थे। जे.सी.आय. इलाईट, चंद्रपुर के सचिव अभिलाष बुक्कावार, पूर्व अध्यक्ष पीयूष माहेश्वरी, अश्विन सारडा, उपाध्यक्ष आशीष पोद्दार, सी.ए. प्रतीक सारडा, ऋषिकांत जाखोटिया, रूपेश राठी आदि कई गणमान्य नागरिक मौजूद थे। ममता बजाज एवं सारिका गांधी ने आभार माना।

सिंगी बने संस्थान अध्यक्ष

भीलवाड़ा. मरुधरा माहेश्वरी संस्थान के नये अध्यक्ष पद का चुनाव, चुनाव अधिकारी जगदीश सोनी, राजेंद्र दम्माणी एवं भेरूदान करवा द्वारा शास्त्रीनगर माहेश्वरी भवन में संपन्न करवाया गया। संस्थान के सचिव राकेश काबरा ने बताया कि दामोदर सिंगी को सर्वसम्मति से निर्विरोध संस्थान अध्यक्ष नियुक्त किया गया। कोषाध्यक्ष महेश जाजू ने बताया कि इस दौरान वल्लभ चांडक, राधेश्याम सोमानी, नंदकिशोर झंवर, राकेश काबरा, पुरुषोत्तम राठी, राजेश बाहेती, इंद्र मूंधड़ा, मधुसूदन डागा, अनिल राठी, विनय मूंधड़ा, दिनेश राठी, सुरेश दम्माणी, प्रयोग दम्माणी, सीमा जेठा, प्रतिभा सारड़ा आदि उपस्थित थे।

अंधविद्यालय को साउंड सिस्टम भेंट

अमरावती. माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से अंध विद्यालय को साउंड सिस्टम अर्चना लाहोटी की अध्यक्षता में भेंट किया गया। कार्यक्रम में अंधकल्याण संघ अध्यक्ष प्रवीण मालपानी तथा सचिव प्रदीप श्रीवास्तव की उपस्थिति रही। पूर्वाध्यक्ष प्रभा झंवर, प्रीति जया, सुजाता गांधी, अर्पिता सारडा, अल्पना हेड़ा, अर्चना भैया, जया चांडक, सचिव सपना पनपालिया, प्रतिमा सारडा, श्रुति राठी, नीता बंग आदि उपस्थित थीं।

सारडा बने अध्यक्ष

पुणे. धार्मिक क्षेत्र में अग्रसर माहेश्वरी बालाजी मंदिर पुणे के पदाधिकारियों का चयन भूतपूर्व अध्यक्ष सुरेश नावंदर की अध्यक्षता में निर्विरोध हुआ। इसमें अध्यक्ष प्रदीप सारडा, सचिव रत्नेश राठी, अनिल राठी व कोषाध्यक्ष रमेश लाहोटी चुने गए। विश्वस्त मंडल में सुरेश नावंदर, कैलाश मूंदड़ा, अशोक जाजू, रमेश जाजू, प्रशांत मूंदड़ा, मनोज लद्दड़ (माहेश्वरी) तथा मंगेश परतानी शामिल हैं।

लचीलापन विकसित करें,
ताकि आप पलटकर सँभल सकें और फिर
ज़्यादा ऊँची उड़ान भर सकें?

प्याऊ का हुआ शुभारंभ

चंद्रपुर. गत 9 अप्रैल को गोकुल गली व एमजी रोड पर लोकमान्य तिलक विद्यालय मित्र परिवार द्वारा ठंडे जलयुक्त प्याऊ का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन लोकमान्य तिलक विद्यालय के वर्ष 1962 बैच के पूर्व विद्यार्थी एवं चंद्रपूर शहर के प्रतिष्ठित नागरिक श्याम बजाज द्वारा किया गया। प्रख्यात चिकित्सक डॉ. तातावर की विशेष उपस्थिति थी। इसके प्रकल्प प्रमुख आशीष मूंधड़ा, अमित भारद्वाज थे। पवन बजाज, हर्षल टिकले, पंकज नागरकर, सुशील येनुरकर, नीलेश पुराणकर आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

उजवने का किया आयोजन

अमरावती. श्री माहेश्वरी मंडल द्वारा गणगौर पर्व में एक ही छत के नीचे 24 सखियों ने सामूहिक उद्यापन किए गए। इसमें सदस्याओं ने एक साथ गणगौर भोजन करके त्योहार मनाया। मंडल की ओर से एक ब्राह्मण सुहागिन का निःशुल्क उद्यापन किया गया। कार्यक्रम में माहेश्वरी महिला मंडल की पूर्वाध्यक्ष प्रभा झंवर, प्रीति डागा, अध्यक्ष अर्चना लाहोटी, सचिव सपना पनपालिया, कोषाध्यक्ष शीतल बूब, प्रोजेक्ट डायरेक्टर वर्षा लाहोटी, हेमा झंवर, कृष्णा राठी, श्यामा लाहोटी, विद्या भैया, वर्षा मालू, सरिता पनपालिया का सहयोग रहा।

श्रद्धांजलि स्वरूप रद्द किया होली मिलन

नांदुरा (बुलढाणा). शहर के श्री बालाजी मंदिर के मुख्य पुजारी श्री शिवदास महाराज का हाल ही में निधन हो गया। अतः माहेश्वरी समाज ने इस वर्ष होली मिलन कार्यक्रम रद्द कर दिया और इसमें खर्च होने वाली राशि उनके परिवार को सहायता स्वरूप देकर एक मिसाल कायम की। वे हर रोज नांदुरा शहर में प्रभातफेरी निकाल रहे थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार तथा मित्रगण छोड़ गए हैं।

ठाकुरजी की निकली शोभायात्रा

भीलवाड़ा. गत 5 अप्रैल को चारभुजानाथ बड़े मंदिर में प्रातः 10.25 बजे से छप्पन भोग की झांकी के दर्शन हेतु भक्तजन उमड़ पड़े। श्री माहेश्वरी समाज के चारभुजा मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष चंद्रसिंह तोषनीवाल व मंत्री रामस्वरूप सामरिया ने बताया कि ठीक 12.15 बजे भगवानश्री की महाआरती के पश्चात दोपहर बाद 4.30 बजे भगवान चांदी के विमान व रथ में विराजमान होकर भक्तों के संग होली खेलने निकल पड़े। उक्त जानकारी क्षेत्रीय सभा मंत्री के.एम. हेड़ा ने दी।

प्याऊ का किया लोकार्पण

ब्यावर. भारत विकास परिषद द्वारा भीषण गर्मी से राहत के लिए जनहितार्थ जल प्याऊ का लोकार्पण किया गया। प्रकल्प प्रभारी तिलक माहेश्वरी ने बताया कि सतपुलिया के पास अस्थाई जल प्याऊ का लोकार्पण भारत विकास परिषद अध्यक्ष राजेंद्र काबरा व उपाध्यक्ष आलोक गुप्ता ने किया। लोकार्पण कार्यक्रम में राजेंद्र काबरा, आलोक गुप्ता, अमरचंद मूंदड़ा, राकेश सोमानी, तिलक माहेश्वरी आदि उपस्थित थे।

संकल्प से सिद्धि का हुआ आयोजन

दिल्ली. प्रदेश माहेश्वरी मंडल संगठन द्वारा तृतीय कार्यकारिणी की बैठक संकल्प से सिद्धि का आयोजन सुकीर्ति समिति अंतर्गत कर्नाटक संघ भवन ऑडिटोरियम में गत 29 मार्च को किया गया। सुरभि समिति दिल्ली प्रदेश द्वारा बैठक के अंत में गणगौर पर्व गीतों पर सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। दिल्ली प्रदेश के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र की अध्यक्ष सुनीता झंवर व सचिव सुनीता सोढानी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस और होली के पावन अवसर पर सुरभि समिति के अंतर्गत पिकनिक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सुलेखा समिति प्रभारी मंजू मानधना, दिल्ली प्रदेश सचिव श्यामा भांगड़िया, संगठन मंत्री सुनीता मूंधड़ा, उपाध्यक्ष पूनम तोषनीवाल भी शामिल हुईं। पश्चिमी क्षेत्र अध्यक्ष सरोज दम्माणी व सचिव संगीता कासट द्वारा क्षेत्रीय उपाध्यक्ष संतोष तोषनीवाल के निवास स्थान पर 15 मार्च को गोपियों के संग फूलों की होली कार्यक्रम रखा गया। इसमें प्रदेशाध्यक्ष किरण लड्ढा, सचिव श्यामा भांगड़िया, प्रदेश संरक्षिका विनीता बियानी, निवर्तमान अध्यक्ष इंदु लढ़ा आदि उपस्थित थीं।

अंतरराष्ट्रीय गौशाला पथमेड़ा की यात्रा

उदयपुर. विश्वविख्यात अंतरराष्ट्रीय गौशाला पथमेड़ा जिला जालोर राजस्थान की दो दिवसीय दर्शन यात्रा का आयोजन गत 3 व 4 अप्रैल को गौभक्त संपतराज माहेश्वरी के नेतृत्व में किया गया। गौभक्तों की इस यात्रा में 55 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। पथमेड़ा गौशाला में सवा लाख गायों का रखरखाव, भरण-पोषण होता है। यात्री शकुंतला-मुरलीधर गट्टानी ने बताया कि वहां 3 वार्ड रोगी गायों की विशेष सेवा के लिए ही बनाए गए हैं। 4 अप्रैल को अहमदाबाद से नांदी की बारात आई। यात्रियों ने इस विवाह नांदी-गौ समारोह में भी भाग लिया।

शीतल जल हेतु पांच प्याऊ का शुभारंभ

इंदौर. लायंस क्लब ऑफ इंदौर ईस्ट के अध्यक्ष मुधसूदन भलिका एवं सचिव मनोहरदास सोमानी ने बताया कि सेवा गतिविधियों के अंतर्गत इंदौर शहर के मध्यक्षेत्र माहेश्वरी समाज के संयुक्त तत्वावधान में शीतल जल हेतु लोहार पट्टी, राज मोहल्ला, मालगंज, जवाहर मार्ग आदि क्षेत्र में जेके नीमा, नवनीत राठी, मनीष प्रीति माहेश्वरी, रमेश मनोज चितलांग्या के सहयोग से ग्रीष्म ऋतु में लोगों को शीतल जल की सेवा हेतु प्याऊ लगाई गई है। इनका शुभारंभ इंदौर कॉलेज के चेयरमैन गिरधर नागर, नगर निगम कर्मचारी यूनियन के लीलाधर करोसिया, उद्योगपति बंटी बदलानी, इंदौर अभिभाषक संघ के कोषाध्यक्ष पुरुषोत्तम सोमानी एवं हाजी अब्दुल वहाब के आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर नवनीत राठी, प्रकाश माहेश्वरी, पवन भलिका आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन सचिव मनोहरदास सोमानी ने किया। आभार वैभव अजमेरा ने माना। अतिथियों का स्वागत योगेश राठी, विजय जाजू, विजय सोमानी, हितेश तोतला ने किया।

राजस्थानी महिला मंडल के चुनाव संपन्न

वरंगल. राजस्थानी महिला मंडल वरंगल के सत्र 2019-2021 के चुनाव स्थानीय प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन में गत 10 अप्रैल को चुनाव अधिकारी संपतकुमार लाहोटी एवं नवलकिशोर मणियार की देखरेख में संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष श्रीदेवी बजाज, प्रथम उपाध्यक्ष देवकन्या सोनी, द्वितीय उपाध्यक्ष कविता सोनी, मंत्री वंदना मूंदड़ा, प्रथम सहमंत्री पूनम शर्मा, द्वितीय मंजू लाहोटी, कोषाध्यक्षा चंचल सोनी, सहकोषाध्यक्ष संगीता बजाज, सांस्कृतिक मंत्री शीतल डालिया, सहसांस्कृतिक मंत्री अर्चना सारडा निर्विरोध चुनी गईं। इन पदाधिकारियों ने 11 कार्यकारिणी सदस्यों को भी चुना।

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

Registration Free

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

आधुनिक सुविधाओं के साथ सेवा को तैयार
श्री अ.भा.माहेश्वरी सेवा सदन

गत कई दशकों से देश के प्रमुख तीर्थ स्थानों में घर का सा आवास की सुविधा दे रहे श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन भवन अब अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ तीर्थ यात्रियों की सेवा में समर्पित हो चुके हैं। भारत वर्ष में 9 स्थानों पर ये एसी, नॉन एसी तथा डीलक्स कमरों के साथ सेवा दे रहे हैं। अब इनकी घर बैठे ऑनलाइन भी बुकिंग कर अपनी यात्रा की योजना तैयार की जा सकती है।

▸▸ टीम SMT

श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर की भारतवर्ष में 9 शाखाएं संचालित हो रही हैं। पुष्कर के साथ वृंदावन, हरिद्वार, बद्रीनाथ, नाथद्वारा, गढ़बोर-चारभुजा, रामदेवरा, जतीपुरा, जोधपुर में कार्यरत हैं। जतीपुरा को छोड़कर सभी शाखाओं में शुद्ध एवं सात्विक भोजन की व्यवस्था उपलब्ध है। सेवा सदन द्वारा यात्रियों की आवास व्यवस्था एवं भोजन व्यवस्था में निरंतर सुधार किया जाता रहा है। इसी के अंतर्गत सभी स्थानों पर एसी, नॉन एसी एवं डीलक्स श्रेणी के कमरे बनाए गए हैं। सभी भवनों में स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके अलावा जगन्नाथपुरी एवं नाशिक में भी आधुनिक भवन शीघ्र ही प्रारंभ किए जाएंगे। नाथद्वारा नवीन भवन के कायाकल्प में भामाशाहों एवं दानदाताओं से सहयोग अपेक्षित है।

सभी शाखाओं में कमरों की बुकिंग ऑनलाइन है जो कि www.maheshwarisevasadan.com तथा www.abmssp.com पर की जा सकती है। जिसका हेल्पलाइन नंबर 9001450590, 0145-2772038 है।

नाथद्वारा में तैयार हो रहा सुंदर भवन

भगवान श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा अरावती पर्वत के मध्य स्थित सुरम्य व सुंदर तीर्थ स्थल है। देश-विदेशों से काफी संख्या में प्रतिदिन यात्री आते हैं। यहां पर सेवा सदन का एक भवन पूर्व में बना हुआ है। इसी के साथ के प्रांगण में एक और भव्य व सुंदर भवन जिसमें करीब 80 कमरे, एक विशाल लगभग 7000 वर्गफुट एसीमय साउंड प्रूफ सत्संग एवं समारोह हॉल, 3 छोटे हॉल, कॉन्फ्रेंस हॉल, समारोह एवं यात्रियों के लिए अलग-अलग भोजनशाला एवं आधुनिक रसोईघर बनाए जा रहे हैं। इसमें सभी आधुनिक सुविधाएं उपयोग में ली जाएंगी। सुरक्षा तथा ऊर्जा बचत पर विशेष ध्यान रखा जा रहा है। इसमें सोलर एनर्जी, हीट पंप, फायर सेफ्टी उपकरण, सीसीटीवी कैमरा आदि लगाए जाएंगे। पूरे भवन में चार लिफ्ट लगेंगी। पूरा भवन एसी होगा। भवन के पास ही करीब 500 फीट ऊंची भगवान महेश की भव्य प्रतिमा मिराज ग्रुप द्वारा लगवाई जा रही है। इससे भवन की सुंदरता को चार चांद लग जाएंगे।

सेवा के आयाम और भी

सेवा सदन सिर्फ भवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने अन्य प्रकल्पों से भी सेवा प्रदान कर रहा है। जोधपुर शाखा के भवन का नाम आरोग्य भवन है क्योंकि एम्स हॉस्पिटल के पास है तथा एम्स में ईलाज करवाने के लिए आने वाले मरीजों के अभिभावकों को आवास व भवन व्यवस्था आसानी से सुलभ हो जाती है। सेवा प्रकल्पों के अंतर्गत वृद्धाश्रम, विधवा व असहाय बंधुओं को सहायता, कबूतरदाना, आयुर्वेद औषधालय, तृतीय कन्या जन्म प्रोत्साहन योजना, छात्रवृत्ति एवं शिक्षा सहयोग आदि योजनाएं अनवरत् संचालित हो रही हैं। हरिद्वार सेवा सदन में पूरे वर्ष अन्नक्षेत्र (ब्राह्मण भोजन) चलाया जाता है। इन सभी प्रकल्पों में समाज के भामाशाहों का सहयोग मिलता रहता है।

आप भी बनें सहयोगी

सेवा सदन अध्यक्ष जुगलकिशोर बिड़ला (94141 11384) और महामंत्री रमेशचंद्र छापरवाल (98290 78221) ने उपरोक्त जानकारी देते हुए बताया कि हरिद्वार, नाथद्वारा तथा वृंदावन के विस्तारित हो रहे भवनों के निर्माण में दानदाताओं से आर्थिक सहयोग आमंत्रित है। इनमें कक्षों का कायाकल्प भी हो रहा है। इनमें पूर्व के उन दानदाताओं को संबंधित कक्ष में सहयोग में प्राथमिकता मिलेगी जिनकी नाम पट्टिका इन पर लगी है। किन्हीं कारणवश अन्य दानदाता के होने पर यहां लगे स्मृति पट्ट के समीप ही उनके नाम की भी एक पट्टिका बराबर साईज में लगाई जाएगी।

नाथद्वारा में आधुनिक सुविधाओं से युक्त नवीनीकृत कमरा

चारभुजा में आधुनिक सुविधाओं से युक्त नवीनीकृत कमरा

हरिद्वार में आधुनिक सुविधाओं से युक्त नवीनीकृत कमरा

कोलकाता में क्यो रहती है? गणगौर की धूम

▸▸ जयकिशन झंवर, कोलकाता

गणगौर वैसे तो राजस्थान का सांस्कृतिक पर्व है, लेकिन इसकी धूम राजस्थान के बाद यदि सबसे अधिक कहीं होती है तो वह है कोलकाता। कारण हैं वहां राजस्थानियों का बड़ी संख्या में निवास। कोलकाता का बड़ा बाजार तो मिनी राजस्थान के रूप में ही जाना जाता है। लगभग 18वीं सदी से यहां गणगौर महोत्सव का भव्य आयोजन हो रहा है। आईये डालें आयोजन समितियों पर एक नजर

बंगाल में मारवाड़ी व्यापारियों का आगमन मुगल सम्राट अकबर के एक सेनानायक जयपुर के राजा मानसिंह द्वारा बंगाल (जिसमें उस समय बिहार, उड़ीसा व आसाम के भाग भी सम्मिलित थे) पर 16वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में आधिपत्य करते समय, सेना में राशनपूर्ति करने वालों के रूप में तथा अफीम के चीनी व्यापारियों के साथ हुआ, बताया जाता है। परंतु बंगाल में राजस्थानियों के आगमन का मुख्य प्रवाह 18वीं व 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के राज में प्रारंभ हुआ जिसका प्रधान केंद्र कलकत्ता बना जो तत्कालीन ब्रिटिश भारत की राजधानी और सर्वप्रमुख व्यापारिक केंद्र बन गया था। प्रारंभ में केवल पुरुष ही प्रवासियों के रूप में आए। कालांतर में वे अपने परिवारों को भी लाने लगे और यहां बसने लगे। कलकत्ता का बड़ा बाजार राजस्थानियों के व्यापार और रहवास के केंद्र के रूप में मिनी राजस्थान बन गया। स्त्रियों के आने से व्रतों, त्योहारों, रिवाजों, नेगचारों के रूप में राजस्थानी संस्कृति का आगमन भी बंग भूमि पर हुआ। त्योहारों में राजस्थान के प्रतिनिधि त्योहार गणगौर की यहां बड़ी धूम रहती है।

नवदुर्गा की तरह नव गवरजा

कोलकाता में वैसे तो कई गणगौर समिति हैं लेकिन नवदुर्गा की तरह नव गणगौर समितियां प्रमुख हैं। इन समितियों में समन्वय के लिए सन् 1972 में सम्मिलित गवरजा मंडली का गठन किया गया। यह मंडली गवरजा पूजन व सवारी का आयोजन ही नहीं करती है अपितु इसका उद्देश्य चैत्र शुक्ल पंचमी को होने वाले सर्वमंडली कार्यक्रम को सुचारु रूप देना तथा मंडलियों के बीच समन्वय बनाए रखना है। सवारी निकालने वाली सभी नौ मंडलियां इस मंडली की सदस्य हैं जो इनके द्वारा निर्धारित व्यवस्था एवं आचार संहिता का पालन करती हैं। इसके गठन में बद्रीदास सादानी (श्री नींबूतल्ला पंचायत), जेठमल डागा (श्री गवरजा माता पारखकोठी), द्वारकादास मोहता व बुलाकीदास पुगलिया (श्री गोवर्धननाथ मंदिर गवरजा माता), आशाराम मोहता (श्री बलदेवजी गवरजा माता) व मोहनलाल करनानी (श्री गवरजा माता हंसपुकुर) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तब से प्रतिवर्ष गणगौर पर्व के दौरान तीज व चौथ को शोभायात्रा निकलती हैं तथा नींबूतल्ला चौक में पंचमी की रात्रि में सभी नौ गवर मंडलियों द्वारा अपने दो श्रेष्ठतम वंदना गीतों की प्रस्तुति श्री श्री गवरजा माता सम्मिलित कमेटी के नेतृत्व में दी जाती है, जिसका संचालन श्री नींबूतल्ला पंचायत करती है। इन नौ मंडलियों के अलावा श्री श्री वीआईपी अंचल गवरजा माता, श्री श्री विधान नगर गवरजा माता, हावड़ा में 2 मंडली, हिंदमोटर में 2 मंडली, लिलुआ में 1 मंडली, काकुड़गाछी में 1 मंडली व साल्टलेक की लोक संस्कृति व बांगड़ एवेन्यु संघ द्वारा भी गणगौर उत्सव मनाया जाता है।

परंपरा का निर्वाह करती हैं नवसमितियां

श्री श्री बलदेवजी गवरजा सेवा ट्रस्ट-

श्री श्री बलदेवजी गवरजा सेवा ट्रस्ट मंडली की स्थापना सन् 1880 (संवत 1937) में हुई। इसके प्रतिष्ठाता थे तखतसिंह टावरी, जिन्हें नैतिक बल व प्रोत्साहन मिला छोटूलाल मोहता एवं श्री किशनदास लाखोटिया से। सन् 1981 में इस मंडली ने अपनी शताब्दी बनाई। तिरंगा धनुष भांत रंग का पेचा इस मंडली का प्रतीक है।

श्री श्री गोवर्धननाथ जी मंदिर की गवरजा माता-

मंडली की शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित स्मृति-मंजूषा के अनुसार सन् 1885 में श्री श्री गोवर्धनाथ जी गवरजा माता मंडली का गठन तखतसिंह टावरी की देखरेख में, उनके ही निर्देशन और सहयोग से हुआ। इस मंडली की शोभायात्रा निकालने की शुरुआत नींबूतल्ला निवासी गोविंदलाल मोहता ने करवाई। सन् 1985 में इस मंडली ने अपना शताब्दी समारोह मनाया और इस समारोह की स्मृति को जीवंत रखने के उद्देश्य से श्री श्री गोवर्धननाथजी गवरजा माता नारी कल्याण ट्रस्ट की स्थापना की। दुरंगी धनुष भांत रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री श्री गवरजा माता पारखकोठी-

पारखकोठी में पातालेश्वर महादेव के मंदिर प्रतिष्ठा (संवत 1930-31) के समय से ही मंदिर के पास चौकी पर पारख परिवार की गवर विराजती रही। हुणतराम बागड़ी, भवानीराम पसीचिया, हीरालाल बिन्नानी, बालकिशन बागड़ी, बंशीलाल बागड़ा आदि के प्रयासों से संवत् 1939-40 (ईस्वी सन् 1882-83) में सेठ पुरुषोत्तम दास पारख के संरक्षण में इसका सार्वजनिक पूजन आयोजन आरंभ हुआ। स्थापना के 113 वर्षों बाद सन 1996 में मंडली ने शताब्दी मनाई। केसरिया रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री नींबूतल्ला पंचायत गवरजा माता-

श्री नींबूतल्ला पंचायत गवरजा माता मंडली की स्थापना सन् 1909 (संवत् 1966) में हुई। सन् 1910 से विधिवत् मंडल द्वारा शोभायात्रा का आयोजन किया जाने लगा। मंडली की स्थापना में सक्रिय भूमिका रामरतन मूंधड़ा की थी। उनके विशेष सहयोगी प्रहलाद जोशी गुरुजी एवं केसरदेव पोद्दार रहे। राजस्थान से बाहर अन्य राज्य में मोहल्ले के गवर के रूप में पहचान एवं नामकरण पहली बार श्री नींबूतल्ला गवरजा माता मंडली का हुआ। कालांतर में इस मंडली को श्री नींबूतल्ला पंचायत गवरजा माता के नाम से जाना जाने लगा। पंचायत ने सन् 1975 में अपनी हीरक जयंती मनाई तथा सन् 1995 में अमृत महोत्सव और सन् 2011 में शताब्दी मनाकर तीन महोत्सव मनाने वाली मंडली के रूप में कोलकाता गणगौर मंडलियों के इतिहास में अपना प्रथम स्थान दर्ज कराया। नींबूभरणा रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री श्री गवरजा माता बांसतल्ला-

श्री बांसतल्ला गवरजा माता की स्थापना सन् 1926 संवत् 1938 में हुई। इतिहास बताता है कि श्री बांसतल्ला गवरजा माता में स्थापित गवर ईसर की प्रतिमाएं पहले कलाकार स्ट्रीट स्थित चार चौक की बाड़ी में बुलजी बागड़ी के यहां थीं, जिनकी शोभायात्रा निकालते थे मदनलाल आचार्य। कालांतर में आचार्यजी ने यह प्रतिमाएं भतमाल व्यास को सौंप दी, तब से ही व्यासजी प्रतिवर्ष धूमधाम से शोभायात्रा का आयोजन करने लगे। उस समय उनके सहयोगी थे गोपीकिशन राठी, रतनलाल बाहेती एवं गिरधरदास लड्ढा। मोहल्ले के नाम पर स्थापित नींबूतल्ला पंचायत के पश्चात यह दूसरी गवर मंडली थी। इस मंडली की हीरक जयंती का आयोजन सन् 1987 में किया गया। शर्बतिया रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री श्री गवरजामाता हंसपुकुर मंडली-

धूड़िया मार्जा के नाम से प्रसिद्ध श्री गोपालजी आचार्य ने स्वप्न में मिले आदेश का पालन करते हुए विक्रम संवत 2011-12 (सन् 1950) में हंसपुकुर गवरजा माता की स्थापना की। 8 हंसपुकुर फर्स्ट लेन में मार्जा की पाठशाला चलती थी, जहां महाजनी विद्या की शिक्षा दी जाती थी। वहीं छगनलाल मोहता, राधाकिशन बाहेती, रुक्मिणीदेवी मालू के उत्साहवर्द्धन तथा सहयोग-सौजन्य से गवरजा माता हंसपुकुर की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। शिवगोपाल हर्ष, भीखमचंद बिन्नानी, तुलसीदास कोठारी, द्वारकादास कोठारी, बंशीलाल मालू, बुलाकीदास मोहता, मोहनलाल पुरोहित व छगनलाल बिन्नाणी ने इसमें संपूर्ण सहयोग दिया। इस मंडली ने सन् 2004 में स्वर्ण जयंती मनाई। चम्पइया रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री श्री गवरजा माता गांगुली लेन सेवा ट्रस्ट-

माता की एक प्रतिमा रामरतन झंवर के पास थी। उनके परिवार के लोग इस गवर प्रतिमा को चंचल गवरा कहकर संबोधित करते थे। कारण यह था कि लगभग सौ वर्ष पूर्ण, जब से यह गवर कोलकाता आई तब से एक जगह स्थिरता से विराज ही नहीं पाई। जयकिशन झंवर और श्री रतन सेवक के नेतृत्व में इसे स्थिरता देने का संकल्प लेकर संवत् 2032 (सन् 1975) में स्थापित किया गया। पंचरंगी सन का पेचा इसका प्रतीक है। इस मंडली ने सन् 2006 में नीलम जयंती मनाई।

श्री मनसापूर्ण गवरजा माता मंडली-

अब तक जितनी भी मंडलियां बनीं, उनके मुख्य उद्योक्ता समाज के लोग थे। पुष्करणा समाज के लोग भी कोलकाता में अच्छी संख्या में हैं। अपने जातीय स्वाभिमान को गरिमा मंडित करने के उद्देश्य से पुष्करणा समाज की गवर के रूप में स्थापित हुई श्री श्री मनसापूरण गवरजा माता संवत् 2035 (सन् 1987 ई.) में। यह एकमात्र गवर मंडली है जहां पूजा मंडप में ईसर-गवर साथ-साथ विराजते हैं। लाल कसूमल रंग का पेचा इसका प्रतीक है।

श्री श्री गवरजा माता कलाकार स्ट्रीट-

कलाकार स्ट्रीट निवासी सत्यनारायण देरासरी के मन में विचार आया कि नवदुर्गा की तरह गवरे भी नौ हों। इसी विचार का साकार रूप लेकर संवत् 2037 (सन् 1980) में स्थापित हुई, श्री श्री गवरजा माता कलाकार स्ट्रीट। चूनड़ी वर्ण का पेचा कलाकार स्ट्रीट गवरजा माता मंडली की पहचाना है। सन् 2005 में इस मंडली ने रजत जयंती मनाई थी।

सौभाग्य की कामना का पर्व है गणगौर

गणगौर का त्योहार राजस्थान में आस्था, प्रेम व पारिवारिक सौहार्द्र का सबसे बड़ा उत्सव है। यह त्योहार होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक 18 दिनों तक चलने वाला त्योहार है। ऐसा माना जाता है कि माता गवरजा होली के दूसरे दिन अपने पीहर आती हैं और आठ दिनों के बाद ईसर (भगवान शिव) उन्हें वापस लेने के लिए आते हैं। चैत्र शुक्ल तृतीया को उनकी विदाई होती है। गणगौर पूजन में कन्याएं और महिलाएं अपने लिए अखंड सौभाग्य, अपने पीहर और ससुराल की समृद्धि तथा गणगौर से हर वर्ष फिर से आने का आग्रह करती हैं। आइये जानें इससे संबंधित लोककथा।

▸▸ पवन राठी, बीकानेर

एक बार भगवान शंकर तथा पार्वतीजी नारदजी के साथ भ्रमण को निकले। चलते-चलते वे चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन एक गांव में पहुंच गए। उनके आगमन का समाचार सुनकर गांव की श्रेष्ठ कुलीन स्त्रियां उनके स्वागत के लिए स्वादिष्ट भोजन बनाने लगीं। भोजन बनाते-बनाते उन्हें काफी विलंब हो गया। किंतु साधारण कुल की स्त्रियां श्रेष्ठ कुल की स्त्रियों से पहले ही थालियों में हल्दी तथा अक्षत लेकर पूजन हेतु पहुंच गईं। पार्वतीजी ने उनके पूजा भाव को स्वीकार करके सारा सुहाग रस उन पर छिड़क दिया। वे अटल सुहाग प्राप्ति का वरदान पाकर लौटीं। तत्पश्चात उच्च कुल की स्त्रियां अनेक प्रकार के पकवान लेकर गौरीजी और शंकरजी की पूजा करने पहुंचीं। सोने-चांदी से निर्मित उनकी थालियों में विभिन्न प्रकार के पदार्थ थे।

उन स्त्रियों को देखकर भगवान शंकर ने पार्वतीजी से कहा-तुमने सारा सुहाग रस तो साधारण कुल की स्त्रियों को ही दे दिया। अब इन्हें क्या दोगी? पार्वतीजी ने उत्तर दिया-प्राणनाथ! आप इसकी चिंता मत कीजिए। उन स्त्रियों को मैंने केवल ऊपरी पदार्थों से बना रस दिया है। इसलिए उनका रस धोती से रहेगा परंतु मैं इन उच्च कुल की स्त्रियों को अपनी अंगुली चीरकर अपने रक्त का सुहाग रस दूंगी। यह सुहाग रस जिसके भाग्य में पड़ेगा, वह तन-मन से मुझ जैसी सौभाग्यवती हो जाएंगी।

जब स्त्रियों ने पूजन समाप्त कर दिया, तब पार्वतीजी ने अपनी अंगुली चीरकर उन पर छिड़क दी। जिस पर जैसा छींटा पड़ा, उसने वैसा ही सुहाग पा लिया। तत्पश्चात भगवान शिव की आज्ञा से पार्वतीजी ने नदी तट पर स्नान किया और बालू की शिव मूर्ति बनाकर पूजन करने लगीं। पूजन के बाद बालू के पकवान बनाकर शिवजी को भोग लगाया। प्रदक्षिणा करके नदी तट की मिट्टी से माथे पर तिलक लगाकर दो कण बालू का भोग लगाया। इतना सब करते-करते पार्वती को काफी समय लग गया। काफी देर बार जब वे लौटकर आईं तो महादेवजी ने उनसे देर से आने का कारण पूछा।

उत्तर में पार्वतीजी ने झूठ ही कर दिया कि वहां मेरे भाई-भावज आदि मायके वाले मिल गए थे। उन्हीं से बातें करने में देर हो गई। परंतु महादेव तो महादेव ही थे। वे कुछ और ही लीला रचना चाहते थे। अतः उन्होंने पूछा-पार्वती! तुमने नदी के तट पर पूजन करके किस चीज का भोग लगाया था और स्वयं कौन-सा प्रसाद खाया था?

स्वामी! पार्वतीजी ने पुनः झूठ बोल दिया-मेरी भावज ने मुझे दूध-भात खिलाया। उसे खाकर मैं सीधी यहां चली आ रही हूं। यह सुनकर शिवजी भी दूध-भात खाने के लालच में नदी तट की ओर चल दिए। पार्वती दुविधा में पड़ गईं। तब उन्होंने मौन भाव से भगवान भोलेशंकर का ही ध्यान किया और प्रार्थना की-हे भगवान! यदि मैं आपकी अनन्यदासी हूं, तो आप इस समय मेरी लाज रखिए।

यह प्रार्थना करती हुईं पार्वतीजी भगवान शिव के पीछे-पीछे चलती रहीं। उन्हें दूर नदी के तट पर माया का महल दिखाई दिया। उसके भीतर पहुंचकर वे देखती हैं कि वहां शिवजी के साले आदि सपरिवार उपस्थित हैं। उन्होंने गौरी व शंकर का भाव-भीना स्वागत किया। वे दो दिनों तक वहां रहे।

तीसरे दिन पार्वती ने शिव से चलने के लिए कहा, पर शिवजी तैयार न हुए। वे अभी और रुकना चाहते थे। तब पार्वतीजी रूठकर अकेली ही चल दीं। ऐसी हालत में भगवान शिवजी को पार्वती के साथ चलना पड़ा। नारदजी भी साथ-साथ चल दिए। चलते-चलते वे बहुत दूर निकल आए। उस समय भगवान सूर्य अपने धाम (पश्चिम) को पधार रहे थे। अचानक भगवान शंकर पार्वतीजी से बोले -मैं तुम्हारे मायके में अपनी माला भूल आया हूँ।

ठीक है, मैं ले आती हूँ। पार्वतीजी ने कहा और जाने को तत्पर हो गईं। परंतु भगवान ने उन्हें जाने की आज्ञा न दी और इस कार्य के लिए ब्रह्मपुत्र नारदजी को भेज दिया। वहां पहुंचने पर नारदजी को कोई महल नजर न आया। वहां तो दूर तक जंगल ही जंगल था, जिसमें हिंसक पशु विचर रहे थे। नारदजी वहां भटकने लगे और सोचने लगे कि कहीं वे किसी गलत स्थान पर तो नहीं आ गए? मगर सहसा ही बिजली चमकी और नारदजी को शिवजी की माला एक पेड़ पर टंगी हुई दिखाई दी। नारदजी ने माला उतार ली और शिवजी के पास पहुंचकर वहां का हाल बताया।

शिवजी ने हंसकर कहा-नारद! यह सब पार्वती की ही लीला है। इस पर पार्वती बोलीं 'मैं किस योग्य हूं'।

तब नारदजी ने सिर झुकाकर कहा-माता! आप पतिव्रताओं में सर्वश्रेष्ठ हैं। आप सौभाग्यवती समाज में आदिशक्ति हैं। यह सब आपके पतिव्रत का ही प्रभाव है। संसार की स्त्रियां आपके नाम-स्मरण मात्र से ही अटल सौभाग्य प्राप्त कर सकती हैं और समस्त सिद्धियों को बना तथा मिटा सकती हैं। तब आपके लिए यह कर्म कौन-सी बड़ी बात है? महामाये! गोपनीय पूजन अधिक शक्तिशाली तथा सार्थक होता है।

आपकी भावना तथा चमत्कारपूर्ण शक्ति को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है। मैं आशीर्वाद रूप में कहता हूं कि जो स्त्रियां इसी तरह गुप्त रूप से पति का पूजन करके मंगलकामना करेंगी, उन्हें महादेवजी की कृपा से दीर्घायु वाले पति का संसर्ग मिलेगा। इसी पौराणिक कथा के आधार पर तब से कुंवारी कन्याएं अच्छे वर व वैवाहिक महिलाएं अपने पति की दीर्घायु हेतु गणगौर अर्थात भगवान शिव-मां पार्वती की पूजा करती हैं।

राजस्थानी संस्कृति की पहचान गणगौर पर्व

वैसे तो गणगौर पर्व भगवान शिव व माता पार्वती से अखंड सौभाग्य की कामना का पर्व है, लेकिन यह अपने आप में हमारी संस्कृति की विशिष्ट पहचान भी है। राजस्थानी-मारवाड़ी संस्कृति से ओतप्रोत यह पर्व संपूर्ण राजस्थानी संस्कृति के सूत्र बताता हुआ, सफल दाम्पत्य के लिए परस्पर निर्मल प्रेम का प्रवाह भी करता है।

▸▸ टीम SMT

होली के दूसरे दिन से ही गणगौर का त्योहार आरंभ हो जाता है, जो पूरे अट्ठारह दिन तक लगातार चलता है। बड़े सवेरे ही होली की राख को गाती-बजाती स्त्रियां अपने घर लाती हैं। मिट्टी गलाकर उससे सोलक पिंडियां बनाती हैं। शंकर और पार्वती बनाकर सोलह दिन बराबर उनकी पूजी करती हैं। दीवार पर सोलह बिंदिया कुमकुम की, सोलह बिंदिया मेहंदी की और काजल की प्रतिदिन लगाती हैं। भगवान शंकर को पूजती हुईं कुंवारी कन्याएं प्रार्थना करती हैं कि उन्हें मनचाहा वर प्राप्त हो। कन्याएं एक समूह में सज-धजकर दूब और फूल लेकर गीत गाती हुई बाग-बगीचे में जाती हैं। घर मोहल्लों से गीत की आवाज से सारा वातावरण गूंज उठता है। कन्याएं लोटों को सिर पर रखकर घर से निकलती हैं तथा किसी मनोहर स्थान पर उन लोटों को रखकर ईद-गिर्द घूमर लेती हैं। जोधपुर में लोटियों का मेला लगता है। वस्त्र और आभूषणों से सजी-धजीं, कलापूर्ण लोटियों की मीनार को सिर पर रखे, हजारों की संख्या में गीत गाती हुई नारियों के स्वर से जोधपुर का पूरा बाजार गूंज उठता है।

नाथद्वारा में 7 दिन शोभायात्रा

चैत्र शुक्ल तीज को गणगौर की प्रतिमा एक चौकी पर रख दी जाती है। यह प्रतिमा लकड़ी की बनी होती है। उसे जेवर और वस्त्र पहनाए जाते हैं। उस प्रतिमा की सवारी या शोभायात्रा निकाली जाती है। नाथद्वारा में सात दिन तक लगातार सवारी निकलती है। सवारी में भाग लेने वाले व्यक्तियों की पोशाक भी उस रंग की होती है जिस रंग की गणगौर की पोशाक होती है। सात दिन तक अलग-अलग रंग की पोशाक पहनी जाती है। आम जनता में गणगौर उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

ऐसे होता है संपूर्ण व्रत

चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी को प्रातः स्नान करके गीले वस्त्रों में ही रहकर घर के ही किसी पवित्र स्थान पर लकड़ी की बनी टोकरी में ज्वारे बोना चाहिए। इस दिन से विसर्जन तक व्रती को एकासना (एक समय भोजन) रखना चाहिए। इन ज्वारों को ही देवी गौरी और शिव अर्थात ईश्वर का रूप माना जाता है। जब तक गौरीजी का विसर्जन नहीं हो जाता (करीब आठ दिन) तब तक प्रतिदिन दोनों समय गौरी जी की विधि-विधान से पूजा कर उन्हें भोग लगाना चाहिए। गौरीजी की इस स्थापना पर सुहाग की वस्तुएं जैसे कांच की चूड़ियां, सिंदूर, मेहंदी, टीका, बिंदी, कंघी, शीशा चढ़ाया जाता है। इसके पश्चात गौरीजी को भोग लगाया जाता है। भोग के बाद गौरीजी की कथा कही जाती है। कथा सुनने के बाद गौरीजी पर चढ़ाए सिंदर से विवाहित स्त्रियों को अपनी मांग भरनी चाहिए। कुंवारी कन्याओं को चाहिए कि वे गौरीजी को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। चैत्र शुक्ल द्वितीय (सिंजारे) को गौरीजी को किसी नदी, तालाब, या सरोवर पर ले जाकर उन्हें स्नान कराएं। चैत्र शुक्ल तृतीय को भी गौरी-शिव को स्नान कराकर, उन्हें सुंदर वस्त्राभूषण पहनाकर डोल या पालने में बिठाएं। इसी दिन शाम को गाजे-बाजे से नाचते-गाते हुए महिलाएं और पुरुष भी एक समारोह या एक शोभायात्रा के रूप में शामिल होकर गौरी-शिव को नदी, तालाब या सरोवर पर ले जाकर विसर्जित करें। इसी दिन शाम को उपवास भी छोड़ा जाता है।

वर्तमान दौर में परिवार सिकुड़ते जा रहे हैं, संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। ऐसे में रिश्तों की अहमियत को समझने की जरूरत है। पैसे से रिश्तों को खरीदा नहीं जा सकता और वह रिश्ता यदि भाइयों का हो तो वह तो जगत में अन्यत्र प्राप्त भी नहीं किया जा सकता है।

हरिप्रकाश राठी, जोधपुर

मिलहि न जगत सहोदर भ्राता

मुकेश अंबानी द्वारा अनुज अनिल अंबानी का ऋण चुकाये जाने पर विशेष

होली के हुड़दंग, मंदिरों के मनभावन फाग, लोकसभा चुनावी समर के आगाज के मध्य जिस समाचार ने इन दिनों देशवासियों, खबरनविसों का ध्यान खींचकर पारिवारिक सौहार्द की महत्ता को प्रतिष्ठापित किया है, वह महत्वपूर्ण समाचार है अंबानी परिवार के बड़े भाई मुकेश अंबानी द्वारा अनुज अनिल अंबानी को ऐन समय कर्जमुक्त कर जेल जाने से बचाना है। दोनों भाइयों के मध्य पूर्व में एवं समय-समय पर मत-मतांतर भी रहे हैं पर मुकेश ने तमाम विषमताओं को दरकिनार कर सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित कर्ज चुकाने की तय समय सीमा से ठीक एक दिन पहले अनिल की कंपनी आर.कॉम को मदद कर स्वीडन की कंपनी एरिक्सन को 550 करोड़ का बकाया ब्याज समेत चुका दिया है। इस तय समय सीमा में भुगतान न करने पर अनिल को तीन महीने की जेल की सजा भुगतनी पड़ती एवं ऐसा होने पर निश्चय ही अंबानी परिवार की समग्र प्रतिष्ठा भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती। अनिल ने बड़े भाई के इस सामयिक सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट कर कहा है कि बड़े भाई की इस उदारता ने उनके हृदय को छू लिया है एवं वे संकट की इस घड़ी में मदद के लिए मुकेश के आभारी हैं। अनिल अंबानी की आरकॉम कभी देश की महत्वपूर्ण टेलीकॉम कंपनी थी।

बड़े भाई द्वारा अपने अनुज को समयानुकूल दी गई मदद आज पूरे देश के लिए नजीर बन गई है। विशेषतः तब जबकि पारिवारिक परिवेदनाओं की ज्वाला आज घर-घर में सुलग रही है। यह तथ्य बताता है कि अंतःसलिला में परिवार के सदस्यों के मध्य सदैव स्वच्छ प्रेम का दरिया बहता है। समय-समय पर लोगों के भड़काने, वैमनस्य फैलाने, अंधी महत्वाकांक्षाओं एवं अहंकार के चलते इस पर अनेक बार दंभ, अहंकार की काई चढ़ जाती है। जिन पारिवारिक सदस्यों में बेहतर समझ, सौहार्द है, वे अपने जीवन की विषमतम परिस्थितियों का सहज समाधान कर लेते हैं। अपने-अपने होते हैं। आंखों को भी क्या कभी पलकें भारी लगती हैं? दो भाइयों का रिश्ता, दो आंखों जैसा ही तो होता है। एक आंख दुखती है, तो सर्वाधिक प्रभावित भी दूसरी आंख होती है।

प्रसंगवश मुझे सदियों पुरानी एक नीति-कथा का स्मरण हो आया है। पहाड़ी इलाके में पीठ पर टोकरी में अपने छोटे भाई को बिठाकर एक बारह वर्ष की लड़की पहाड़ी चढ़ रही थी। पास से गुजरते हुए एक आदमी ने, जो बमुश्किल पहाड़ी चढ़रहा था, उस लड़की से पूछा 'तुम इतनी कठिनाई से पहाड़ी चढ़ रही हो, तुम्हें यह टोकरी बोझ नहीं लगती?' लड़की चौंकी, क्योंकि वह तो अपनी मस्ती, उन्मत्तता में ऊपर चढ़ रही थी, उसने राहगीर को जवाब दिया, 'यह बोझ नहीं मेरा छोटा भाई है।' यह होता है रिश्तों का अहसास, अनुभूति, अपनापन एवं आनंद। अपने बोझ नहीं होते न ही उनकी मदद बोझ होती है क्योंकि जिन्हें देने, जिनके लिए विसर्जन करने, त्याग करने से हृदय में आनंद का सोता फूटता हो, वे बोझ क्यों कर होंगे?

मेरी आंखों के आगे रामकथा का वह दृश्य उभर आया है जब मेघनाद के शक्तिबाण से बेहोश लक्ष्मण को गोद में लेकर प्रभु श्रीराम विलाप करते हैं। ओह, वह कैसा कारुणिक विलाप था। प्रभु पुनः लक्ष्मण की ओर देखकर पछताते हुए कहते हैं, ''लक्ष्मण उठो। मैं तुम्हारे बिना अयोध्या कैसे जाऊंगा, माता सुमित्रा को कैसे मुंह दिखाऊंगा? तुम तो मेरा क्षणभर दुःख भी नहीं सहन कर पाते थे, आज तुम्हें मेरा यह विलाप क्यों नजर नहीं आता?'' तुलसी ने इस अवसर पर मार्मिक पंक्तियां उद्धृत की हैं, ''सुत वित नारी भवन परिवारा होहि जाहिं जग बारहिं बारा, अस विचार जिय जागहु ताता मिलहि न जगत सहोदर भ्राता'' अर्थात जगत में संपत्ति, पद, विलास के साधन, सबकुछ मिल जाता है पर अपने भाई के दुःख में समरस हो जाने वाले मां जाए भाई अत्यंत अत्यन्त दुर्लभ हैं। मुझे याद है हम चार भाई थे, अब दो बचे हैं। अनेक बार उन स्वर्गस्थ बड़े भाइयों की याद सालती है तो उनका स्मरण कर भीतर सबकुछ भीग जाता है। उनके साथ खड़े हम ऐसे महसूस करते थे जैसे बरगद तले खड़े हों। उनके होते हुए हम कितने आत्मविश्वास से भरते हुए थे। मुझे मेरी कहानी 'ढाल' का स्मरण हो आया है जहां एक छोटा भाई बचपन में स्कूल से लौटते हुए स्वयं के हाथ में छाता होते हुए भी बारिश आने पर बड़े भाई के छाते के नीचे आ खड़ा होता है। बड़ा तब उसे झिड़कता है, अरे! तू स्वयं अपना छाता क्यों नहीं खोलता? तो वह उत्तर देता है, भैया! मुझे लगता है मैं आपके छाते के नीचे भीग ही नहीं सकता। यह होता है ब्रदरहुड, अहसास जहां एक अनुज अपने अग्रज के साथ हर हाल में महफूज है। क्यों न हो, नीति निपुण यूं ही थोड़े कह गये हैं कि 'ब्लड इज थिकर देन वाटर' यानि खून पानी से गाढ़ा होता है और यह बात एक बार फिर मुकेश अंबानी ने अपने अनुज को समायानुकूल मदद कर सिद्ध कर दी है एवं इस महान कार्य में उनकी पत्नी नीता अंबानी भी बराबर की भागीदार हैं।

मित्रों! आज, अभी, इसी क्षण आपका कोई अपना रूठ गया हो तो जाकर उसे मनाइये। अपने दंभ के कीचड़ को प्रेम की गंगा में बहा दीजिये। झुककर आप बहुत ऊंचे उठ जाएंगे। झुकना जीवन की शान है, अकड़ना मुर्दे की पहचान है। आप जीवित होकर मुर्दों-सा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? विश्वास करें, आप उसके बिना जितनी रिक्तता महसूस कर रहे हैं, वह भी आपके बिना उतनी ही रिक्तता महसूस कर रहा है। पुरानी बातों को भूल जाइये। एक राजस्थानी कहावत है ''अपनों की गालियां, घी की नालियां''। वे जो कुछ कहते हैं, समझाते हैं, डांटते भी हैं तो आपके हित के लिए, आपको ऊंचा उठाने के लिए, आपके व्यक्तित्व के ठोस निर्माण के लिए कहते हैं। घड़े को घड़ने वाले कुम्हार का हर प्रहार घड़े को मजबूत बनाने के लिए होता है। गालियों से घूमड़े नहीं होते। अपने प्रेम करते हैं, आपकी ढाल बनते हैं, आपका छाता बनते हैं तो आपको डांटने, मार्गदर्शन का किंचित अधिकार भी रखते हैं। परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है, इसे बचाइये क्योंकि बीता हुआ समय छूटे हुए बाण की तरह लौटकर नहीं आता। क्या पता कल कोई रहे न रहे एवं आपको उनकी याद में वर्षों तड़पना पड़ जाये। स्मरण रखें परिवार उस स्पांज की तरह है जो अपनों का समस्त दुःख सहज ही सोख लेता है। बंधी बुहारी लाख की खुल्ली बिखर जाए की तरह आपका पारिवारिक सौहार्द, संगठन ही आपको ताकत देगा। पारिवारिक संस्था सहअस्तित्व के भाव पर टिकी है। आप उनके हैं, वे आपके हैं। आलेख की समाप्ति पर रहीम की यह पंक्तियां उद्धृत करना लाजमी होगा-रूठे स्वजन मनाइये, जो रूठे सौ बार, रहिमन फिर फिर पोहिये, टूटे मुक्ताहार।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

वर्तमान दौर में चिकित्सा सबसे महंगा क्षेत्र बनता जा रहा है। कारण यह है कि इसमें सरकार का अधिक नियंत्रण नहीं रहा। निजामाबाद निवासी समाजसेवी पुरुषोत्तम सोमानी के प्रयासों से कैंसर की दवाओं के मूल्य नियंत्रित हुए हैं। अन्य दवाओं की भी यदि सही ढंग से खरीद की जाए तो खर्च को नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन यह खरीद करें तो कैसे? जानें स्वयं श्री सोमानी की जुबानी।

कैसे बचा सकते हैं दवाइयों का खर्च

भारत सरकार द्वारा कैंसर की 390 दवाइयों पर ट्रेड मार्जिन क्याप लाने से काफी कैंसर की दवाइयां 87 प्रतिशत तक सस्ती हो गई हैं। बाकी कैंसर की व अन्य लाइफ सेविंग, जैनरिक, सर्जिकल दवाओं पर भी नियंत्रण के लिए प्रत्यनशील हैं और संभावना कम है कि चुनाव के बाद सभी दवाइयों पर ट्रेड मार्जिन लागू हो जाने से सभी दवाएं 90 प्रतिशत तक कम हो जाएंगी। आज की परिस्थितियों में हम सस्ती दवाइयां किस तरह खरीद सकते हैं। इसके लिए बेसिक जानकारी जरूरी है। 5 प्रतिशत दवाइयां पेटेंट होती हैं, जिन्हें सिर्फ जिन का अधिकार होता है वही मैन्यूफैक्चरिंग कर सकते हैं। बाकी सभी 95 प्रतिशत दवाइया जैनरिक हैं जिन्हें कोई भी मैन्यूफैक्चरिंग कर सकता है। जैनरिक दवाइयां दो प्रकार से तैयार होती हैं, इसे अच्छी तरह जान लें। ब्रांडेड जैनरिक और जैनिरक ब्रांडेड मेडिसिन। दोनों दवाइयों का बनाने का प्रोसेस, टेस्टिंग प्रोसेस, गुणवत्ता सभी समान है। दोनों में कोई फर्क नहीं। ब्रांडेड मेडिसिन में मेडिसिन का ब्रांड नाम बड़ा होता है और कंपोजीशन छोटे अक्षरों में लिखा होता है और उसे मेडिकल रिप्रेजेंटिटव द्वारा मार्केटिंग किया जाता है। जैनरिक ब्रांडेड मेडिसिन में ब्रांड नाम छोटा होता है और कंपोजीशन नाम बड़ा होता और इसे बिना मार्केटिंग किए बेचा जाता है।

कैसे बचाएं अपनी मेहनत की कमाई

ब्रांडेज मेडिसिन में मैन्युफैक्चरर को बहुत मुनाफा होता है और जैनरिक ब्रांडेड मेडिसिन में खुदरा व्यापारियों को और डॉक्टर को बहुत लाभ होता है तथा एमआरपी बढ़ा-चढ़ाकर प्रिंट की जाती है। तो हमें कौन सी दवाई खरीदना चाहिए? जैसा कि मैंने पहले कहा कि ब्रांडेड मेडिसिन और जैनरिक ब्रांडेड मेडिसिन में कोई फर्क नहीं है। और उसे हमें एक्सक्लूसिव जैनरिक मेडिकल शॉप से ही खरीदना चाहिए। बाकी के जनरल मेडिकल शॉप से खरीदने से आपको बहुत ज्यादा एमआरपी पर दवाइंया मिलेंगी। डॉक्टर ने जो भी दवाई लिखी हैं उसकी कंपोजीशन में जैनरिक ब्रांडेड दवाई एक्सक्लूसिव जैनरिक शॉप वाला देगा और वह सस्ती मिलेगी। हमें यह देखना चाहिए कि डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाई का कंपोजीशन सही होना चाहिए, चाहे वह कोई भी ब्रांड क्यों ना हो। हम जनरली डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाई के ब्रांड से ही दवाई खरीदते हैं, वह बिल्कुल जरूरी नहीं है। हम कोई भी जैनरिक मेडिसिन खरीद सकते हैं। वह उतनी ही अच्छी रहती है। सभी बड़ी कंपनियां जैसे, सिप्ला, एमक्योर, वॉकहार्ड, एबोटो ग्लैक्सो सभी जैनरिक ब्रांडेड मेडिसिन बनाती हैं।

गुगल पर भी सर्च कर सकते हैं जैनरिक शॉप

और एक सुझाव कि आप प्रधानमंत्री जन औषधि शॉप पर भी आपको समान कंपोजिशन की दवाइयां बहुत ही सस्ती मिलती हैं। वह भी बहुत अच्छी दवाइयां हैं। उसमें कोई भी शंका करने की आवश्यकता नहीं। वह दो लैब में टेस्ट की हुई डब्ल्यूएचओ कंपनी में तैयार की हुई अच्छी दवाइयां हैं। वह आपको 90 प्रतिशत सस्ती मिलेंगी। लाइफ सेविंग ड्रग्स जैसे कैंसर, डायलिसिस, किडनी की दवाइयां, सर्जिकल आइटम जैसे आईवीसैट, यूरिन बैग, डिस्पोजल सीरिंज आदि आपको होलसेल शॉप में खरीदने से 90 प्रतिशत सस्ती मिलेंगी। एक्सक्लूसिव जैनरिक शॉप आप गुगल पर सर्च कर सकते हैं और वहां पर बारगेनिंग भी होता है। चार्ट का अभ्यास करने से आपको पता चलेगा कि आप अपनी दवाइयों के खर्च पर काफी बचत कर सकते हैं।

ब्राण्डेड व जेनरिक ब्राण्डेड दवाओं की कीमतों का तुलनात्मक विवरण

Sno.	Disease	Branded Medicine	MRP Rs.	Alternate Generic Branded medicines	MRP (strip) Rs.	Wholesale Price (strip) Rs.	Exclusive Generic Branded retail shop selling price (strip) Rs.
1	BP	LLzyMT-50 (Alembic Co)	282.80	Telelate MT-50 (Cardium)	300	38	50
2	Calcium & Vitamin D3	Shelcal-500 (Torent Co.)	90	Cipcal -500 (Cipla co)	79	14	15
3	Gases	Pantop D (Aristo Co.)	85.30	Pantosec D (Cipla Co.)	124	18	20
4	BP	Amlokind-BD (Mankind Co.)	57.70	Amlip AT (Cipla Co.)	66	7.90	10
5	Cold Elergy	Montair-LC (Cipla Co.)	165	Montewok-LC (Wochardt Co.)	164.08	15.30	30
6	Throat Infection	Azee (Cipla Co.)	111.94	Azithro 500 (Wockhard Co.)	67.17	24	38
7	Colestrol control	Rosuvas 20 (Sunfarma)	280	Rozuwok 20 (Wockhard Co.)	227.50	28	35
8	Infection	Augmentin (Glaxo co)	188.83	Dubes 625 (Ajanta Co.)	113.20	30	35
9	Sugar	Glycomet (USV Ltd)	96.63	Glimp-M1 (Zydus company)	72.32	8.50	10
10	Cough & Cold	Allercet Cold (Micro Ltd)	60	Cheston Cold (Cipla Co.)	39	13	15
11	Fever	Dolo (micro Ltd)	23.25	Paracip 650 (Cipla Co.)	19.33	9	10

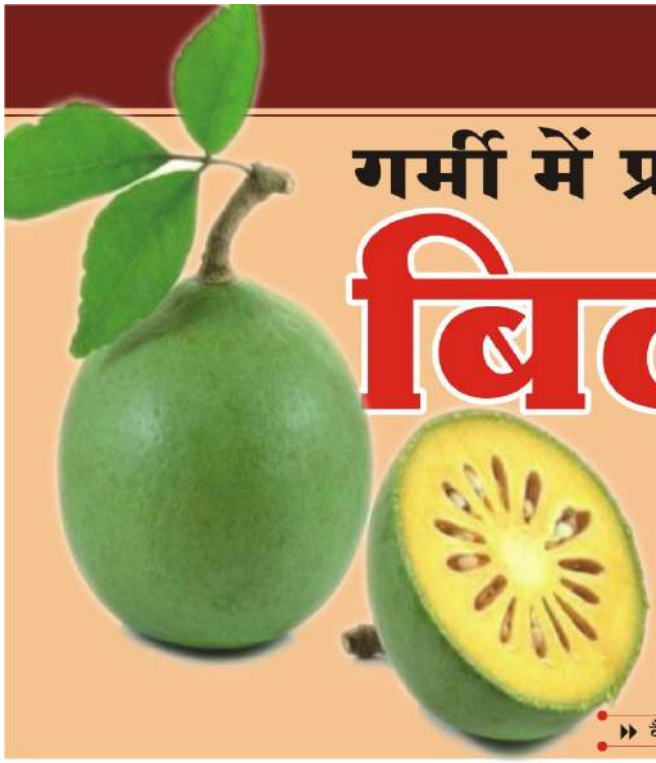

गर्मी में प्रकृति का उपहार

बिल्व

बिल्व वृक्ष शिव को अतिप्रिय है। यही कारण है कि बिल्व पत्र शिव को अर्पित होते हैं तो बिल्व फल माता पार्वती को। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण है, इसकी शक्तिवर्धन व गर्मी से राहत देने की विशिष्ट क्षमता। जहां बिल्व का सेवन होता है वहां रोग नहीं होते।

▸▸ कैलाशचंद्र लड्ढा, जोधपुर

गर्मी में राहत देने वाले फलों में बेल का फल प्रकृति मां द्वारा दी गई किसी सौगात से कम नहीं है। कहा गया है-'रोगान बिलत्ति-भिनत्ति इति बिल्व।' अर्थात् रोगों को नष्ट करने की क्षमता के कारण बेल को बिल्व कहा गया है। बेल सुनहरे पीले रंग का, कठोर छिलके वाला एक लाभदायक फल है। गर्मी में इसका सेवन विशेष रूप से लाभ पहुंचाता है। शांडिल्य, श्रीफल, सदाफल आदि इसी के नाम हैं। इसके गीले गुदे को बिल्व कर्कटी तथा सूखे गुदे को बेलगिरी कहते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग जहां इस फल के शरबत का सेवन कर गर्मी से राहत पा अपने आप को स्वस्थ बनाए रखते हैं वहीं भक्तगण इस फल को अपने आराध्य भगवान शिव को अर्पित कर संतुष्ट होते हैं। औषधीय प्रयोगों के लिए बेल का गूदा, बेलगिरी पत्ते, जड़ एवं छाल का चूर्ण आदि प्रयोग किया जाता है। चूर्ण बनाने के लिए कच्चे फल का प्रयोग किया जाता है वहीं अधपके फल का प्रयोग मुरब्बा तो पके फल का प्रयोग शरबत बनाकर किया जाता है।

कई औषधीय गुणों से भरपूर

बेल व बिल्व पत्र के नाम से जाने जाना वाला यह स्वास्थ्यवर्धक फल उत्तम वायुनाशक, कफ-निस्सारक व जठराग्निवर्धक है। ये कृमि व दुर्गंध का नाश करते हैं। इनमें निहित उड़नशील तेल व इगेलिन, इगेलेनिन नामक क्षार-तत्त्व औषधीय गुणों से भरपूर हैं। चातुर्मास में उत्पन्न होने वाले रोगों का प्रतिकार करने की क्षमता बिल्वपत्र में है। ये ज्वरनाशक, वेदना हर, कृमिनाशक, संग्राही (मल को बांधकर लाने वाले) व सूजन उतारने वाले हैं। ये मूत्र के प्रमाण व मूत्रगत शर्करा को कम करते हैं। शरीर के सूक्ष्म मल का शोषण कर उसे मूत्र के द्वारा बाहर निकाल देते हैं। इससे शरीर की आभ्यंतर शुद्धि हो जाती है। बिल्वपत्र हृदय व मस्तिष्क को बल प्रदान करते हैं। शरीर को पुष्ट व सुडौल बनाते हैं। इनके सेवन से मन में सात्त्विकता आती है। ये पेय गर्मी में जहां आपको राहत देते हैं, वहीं इनका सेवन शरीर के लिए लाभप्रद भी है। बेल में शरीर को ताकतवर रखने के गुणकारी तत्व विद्यमान हैं। इसके सेवन से कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि यह रोगों को दूर भगाकर नई स्फूर्ति प्रदान करता है।

कब कैसे करें इसका उपयोग

▸▸ गर्मी में लू लगने पर इस फल का शर्बत पीने से जल्द आराम मिलता है तथा तपते शरीर की गर्मी भी दूर होती है।

▸▸ पुराने से पुराने आंव रोग से छुटकारा पाने के लिए प्रतिदिन अध कच्चे बेलफल का सेवन करें।

▸▸ पके बेल में चिपचिपापन होता है इसलिए यह डायरिया रोग में काफी लाभप्रद है। यह फल पाचक होने के साथ बलवर्द्धक भी है।

▸▸ पके फल के सेवन से वात-कफ का शमन होता है।

▸▸ आंख में दर्द होने पर बेल के पत्तों की लुगदी बांधने से काफी आराम मिलता है। कई बार गर्मी में आंखें लाल-लाल हो जाती हैं तथा जलने लगती हैं। ऐसी स्थिति में बेल के पत्तों का रस एक-एक बूंद डालना चाहिए। लाली व जलन जल्द दूर हो जाएगी।

▸▸ बच्चों को पेट में कीड़े हों तो इस फल के पत्तों का अर्क निकालकर पिलाना चाहिए।

▸▸ बेल की छाल का काढ़ा पीने से अतिसार रोग में राहत मिलती है।

▸▸ इसके पके फल को शहद व मिश्री के साथ चाटने से शरीर के खून का रंग साफ होता है, खून में भी वृद्धि होती है।

▸▸ बेल के गूदे को खांड (गुड़) के साथ खाने से संग्रहणी रोग में राहत मिलती है।

▸▸ पके बेल का शर्बत पीने से पेट साफ रहता है।

▸▸ बेल का मुरब्बा शरीर की शक्ति बढ़ाता है तथा सभी उदर विकारों से छुटकारा भी दिलाता है।

▸▸ गर्मी में गर्भवतियों का जी मिचलाने लगे तो बेल और सौंठ का काढ़ा दो चम्मच पिलाना चाहिए।

▸▸ पके बेल के गूदे में काली मिर्च, सेंधा नमक मिलाकर खाने से आवाज भी सुरीली होती है।

▸▸ छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक चम्मच पका बेल खिलाने से शरीर की हड्डियां मजबूत होती हैं।

हमारे परम्परागत तीज त्यौहारों पर आधुनिकता का आवरण कितना उचित?

हमारे परम्परागत तीज-त्यौहार हमारी संस्कृति की पहचान हैं। अतः इन्हें मनाने के लिये नई पीढ़ी को भी प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है। आधुनिक पीढ़ी इन्हें मनाने के लिये तैयार तो हो जाती है, लेकिन वह इन पर आधुनिकता का आवरण चढ़ा देना चाहती है। यही कारण है कि समाज में होने वाले सामूहिक पर्व-त्यौहारों के आयोजन तक अपने मूल स्वरूप को खो रहे हैं। आखिर यह परिवर्तन कितना उचित है और कितना अनुचित? आईये जानें इस ज्वलंत विषय पर स्तंभ की प्रभारी मालेगांव निवासी सुमिता मूंदड़ा से उनके व समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

परिवर्तन हों पर परंपराओं के साथ

पिछले कुछ वर्षों से हमारे पारंपरिक त्योहार विलुप्त से होते जा रहे थे। आधुनिकता की ओर बढ़ती नई पीढ़ी को इनको मनाने में बिल्कुल भी रुचि नहीं थी। अब खून में हमारे संस्कारों की पकड़ समझें या घर के बड़े-बुजुर्गों की पैठ कि आज हमारे तीज-त्योहार आधुनिकता का आवरण ओढ़कर पुनर्जीवित हो रहे हैं। चूंकि सबकी दिनचर्या अतिव्यस्त होने लगी है इसलिए नई पीढ़ी तीज-त्योहारों को अपनी सुविधानुसार परिवर्तित कर मनाने लगी है। गेट-टू-गेदर का रूप देकर मिलने-जुलने का एक नया तरीका निकाल लिया है। किटी पार्टी की थीम त्योहारों के अनुसार रखी जा रही है। इन थीम पार्टी के कारण त्योहार एक दिन में समाप्त ना होकर 15-15 दिन तक चलते रहते हैं। नई पीढ़ी त्योहारों को पारंपरिक रूढ़िवादी तरीके से ना मनाकर उसे नया आवरण पहनाकर अपनी रूचि अनुसार मनचाहा परिवर्तन कर रही है। यही कारण है कि अब उन्हें त्योहार बोझ प्रतीत नहीं होते और उनमें त्योहार मनाने की उत्सुकता भी बढ़ने लगी है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है त्योहार मनाने का पारंपरिक तरीका बदलने से हमारे तीज-त्योहार फिर से जीवंत हो रहे हैं। हां इससे फिजूलखर्ची और दिखावे में भरपूर इजाफा हुआ है। कुछेक उच्च धनाढ्यों के तीज-त्योहार तो रंगीन मिजाज भी होने लगे हैं। इससे मूल संस्कारों व पारंपरिक संस्कृति को ठेस पहुंच रही है जो सामाजिक दृष्टिकोण से शर्मनाक और चिंताजनक है। समय के साथ परिवर्तन संसार का नियम है, पर परिवर्तन से हमारे संस्कारों और मूल संस्कृति का अपमान नहीं होना चाहिए। परिवर्तन सदैव परंपराओं को संजोकर अक्षुण्ण रखने के हित में होना चाहिए तभी तो पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी धरोहर, हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति नया जामा पहनकर भी खिलखिलाते रहेंगे।

- सुमिता राजकुमार मूंधड़ा, मालेगांव

संस्कृति के प्रतीक हमारे पर्व

हमारे परंपरागत त्योहार माहेश्वरी समाज की संस्कृति, परंपरा व सभ्यता का प्रतीक हैं। हमारे पुराण में वर्णित व्याख्यानों के अनुसार सनातन धर्म में तिथियों को विशेष महत्व देते हुए विशेष पर्व मनाए जाते हैं। जीवन को खुशहाल और रिश्तों को मजबूत बनाने में अटूट कड़ी की भूमिका निभाते हैं त्योहार। माहेश्वरी समाज के त्योहार और उत्सव-पर्व का आदिकाल से ही काफी महत्व रहा है। त्योहार हमारी संवेदनाओं व परंपराओं का रूप हैं। ऐतिहासिक विरासत और जीवंत संस्कृति के सूचक से त्योहार दूसरों के समक्ष हमें गौरवान्वित होने का अवसर देते हैं। सदैव परंपरागत रूप से ही त्योहार मनाना चाहिए। आज बदलते समय के साथ हमारा समाज बदल रहा है और त्योहार को मनाने का तौर तरीका भी बदल रहा है। त्योहार को मनाने में बदलाव सिर्फ और सिर्फ अपने समाज में ही क्यों आया है? इस पर चिंतन कीजिएगा। त्योहार हमारी संस्कृति का आईना है, उसे प्रतियोगिता से ना जोड़ें। त्योहार को परंपरागत रूप से मनाएं, उसे आधुनिकता से मनाने की कोशिश ना करें। परंपरा के साथ चलें। त्योहारों के रूप को बदलने की कोशिश ना करें। सबकुछ खुद सुलझाने की कोशिश ना करें।

- अनिता-ईश्वरदयाल मंत्री,
अमरावती

आडंबर की बजाए आधुनिकता अपनाएं

हमारी संस्कृति हमारी विरासत निश्चित ही अनूठी व बेमिसाल है, इसमें कोई दो मत नहीं। सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाजों का हमारे समाज में हम अनुसरण करते आ ही रहे हैं। समय परिवर्तनशील रहने के कारण, समय के साथ चलना जरूरी भी हो गया है, लेकिन परिवर्तन के साथ संस्कारों को जीवित रखने के लिए दिखावा या आडंबर कितना योग्य? यह निश्चित ही गंभीर एवं चिंतनीय विषय है। हर व्यक्ति की सोच हर काम में अलग ही होती है। जो परिस्थितियों के हिसाब से हर जगह, अलग-अलग तरीके से काम करती है। मेरी सोच है कि इस मामले में दिखावे, आडंबर के बजाय उन्हीं त्योहारों को आधुनिकता का जामा पहनाकर आयोजित किया जाए तो वह अनुकरणीय होने के साथ एक अलग छाप समाज में संदेश के रूप में छोड़ेगा। धनाढ्य परिवार छोटे से छोटे आयोजन में इतना तामझाम दिखावा करते हैं कि बस आपकी आंखें उस वैभव को देखकर फटी की फटी रह जाती हैं। एक परिवार की देखा देखी शुरू हो जाता है दिखावे का प्रदर्शन, जो सर्वथा अनुचित ही है।

- सतीश-रमेशचंद्र लखोटिया, नागपुर

आवश्यक परिवर्तन जरूरी

यह सत्य कथन है कि हमारे परंपरागत तीज-त्योहार हमारी संस्कृति की पहचान हैं। इन्हें बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है। आने वाली

नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति को संजोये रखने की ओर प्रेरित करना हम सबका कर्तव्य है। तीज-त्योहार में आधुनिकता का आवरण चढ़ना स्वाभाविक है। समय के साथ बदलाव भी होना स्वाभाविक है। तीज-त्योहार खुशियों और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। रीति-रिवाज के नाम पर बंधन नहीं होना चाहिए। नई पीढ़ी खुले ख्यालों वाली होती है। बंधन से तो वो हमारी संस्कृति से दूर भागेंगे मगर प्यार का तड़का और मस्ती की फुहार से वो रीति-रिवाज के साथ हमारी संस्कृति के भी करीब आएंगे। आधुनिकता का आवरण तीज-त्योहार में मर्यादित होना चाहिए। नई पीढ़ी को भी समझना होगा कि माडर्न होने के साथ-साथ संस्कृति को भी संभालना हमारी जिम्मेदारी है। **- किरण कलंत्री**, रेनुकूट

परिवर्तन हों लेकिन सकारात्मक

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं में पर्व एवं त्योहारों का विशेष महत्व रहा है। त्यौहार हमारे भाईचारे तथा सौहार्द्र, स्नेह, पारस्परिक सहयोग एवं सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य हैं। हमारी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाए रखने में त्यौहारों की महत्ती भूमिका रहती है। माहेश्वरी समाज का प्रमुख त्योहार महेश नवमी इसी का परिचायक है। त्योहारों से समाज न केवल प्रेरणा प्राप्त करता है अपितु देवी-देवताओं का भी परिचय प्राप्त कर उद्वेलित होता है। त्योहारों के आयोजन हमारी संस्कृति को नई पीढ़ी को हस्तान्तरित करने में सहायक हैं। त्योहारों से जन जीवन में प्रेरणा, चेतना, स्नेह, सद्भाव तथा सामाजिक समरसता का प्रादुर्भाव होता है। वर्तमान में तीज त्योहारों के प्रति जनजीवन में उदासीनता दृष्टिगत होने लगी है। परिवार को प्रथम पाठशाला कहा गया है। हमारी सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति लगाव परिवार से ही अधिक संभव है। बालकों को शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक पाठ्यक्रम, शिक्षण की सहगामी क्रियाओं के प्रति रुचिशील बनाने पर इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। भारतीय त्योहार विज्ञान सम्मत हैं तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए भी हितकर होते हैं। हमारे समाज को इस दिशा में योजनाबद्ध प्रयास करते हुए इसके लिए संकल्पबद्ध होना चाहिए।

- शंकरलाल माहेश्वरी
आगूंचा (भीलवाड़ा)

मन में श्रद्धा होना जरूरी

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आधुनिक परिवेश में पीढ़ी दर पीढ़ी सबकुछ बदल रहा है तो तीज-त्योहारों का स्वरूप बदलना भी स्वाभाविक है जिसे हमें सहर्ष स्वीकार करना होगा। आज हमारी बहू-बेटियों को मां और सासु मां द्वारा परपराएं सिखाई जाती हैं। सुशिक्षित-नौकरीपेशा बहनें भी उत्साहपूर्वक त्योहारों को मनाने में शामिल होकर अपनी कला को प्रदर्शित कर रही हैं, यह सराहनीय है। इससे हमारी संस्कृति को किसी तरह से क्षति पहुंच रही है, यह कहना अनुचित होगा। हर त्योहार का मूल उद्देश्य होता है, परिवार को सुख-शांति प्रदान करना और सुहाग को रक्षासूत्र से बांधे रखना। हमारी संस्कृति में शगुन के इन पलों को हम बचपन से देखते हैं, इसलिए हमारे अंतरमन में त्योहारों के प्रति आदर अपने आप पनपता है। पहले संयुक्त परिवारों में छोटे-छोटे पर्व धूमधाम से और रीति-रिवाज से मनाए जाते थे। आज शिक्षा का प्रसार और आर्थिक स्तर बढ़ाने की इच्छा के कारण एकाकी परिवार अधिक हो गए हैं। इसी वजह से अलग-अलग समूहों द्वारा या सामाजिक संस्थाओं में शामिल होकर बड़े पैमाने पर आयोजन हो रहे हैं। इससे त्योहारों का महत्व कम नहीं हो रहा। नई पीढ़ी हर्षोल्लास से त्योहारों का स्वागत कर रही है। आडंबर की बजाए मन में श्रद्धाभाव होना जरूरी है। समय का अभाव होने से थोड़ा सामंजस्य रखना होगा। ध्यान रहें आर्थिक रूप से अत्यधिक अपव्यय ना हो।

- राजश्री सुरेश राठी, अकोला महाराष्ट्र

त्योहार संस्कृति की अनमोल धरोहर

हमारे परंपरागत रीति-रिवाज हमारी संस्कृति की अनमोल धरोहर हैं। जिनका अनुसरण आज विदेशों में भी हो रहा है त्योहारों की धड़कन उससे जुड़े रीति रिवाज और परंपराएं हैं। पुराने जमाने में संयुक्त परिवार होते थे। त्योहार मनाने के लिए समय ही समय होता था। सब मिल-जुलकर त्योहार के रीति-रिवाज निभा लेते थे। आज एकल परिवार हैं व पति-पत्नी दोनों काम पर बाहर जाते हैं। ऐसे में आज सामाजिक रूप से जो तीज त्योहार मिलकर मनाते हैं, वह स्वरूप बहुत अच्छा है। त्योहारों पर समय-समय पर समाज द्वारा जो प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं, वह कहीं ना कहीं नई पीढ़ी को त्योहारों से जोड़ती हैं। वे उनमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। ध्यान रखें उचित रीति-रिवाजों को सही तरीके से निभाएं, फैशन और आधुनिकता के दिखावे की चकाचौंध में त्योहारों का मूल स्वरूप ना बिगाड़े। हम सोचें कि पुराने रीति-रिवाजों को नई पीढ़ी वैसे का वैसा अपना ले तो यह व्यवहारिकता में संभव नहीं है। अगर समय अनुसार अति आवश्यक फेरबदल होगा तो त्योहारों में अनूठा व अनोखा रंग भर जाएगा। जैसे हम पुराने घरों को रंगरोगन कर नया रूप देते हैं, उसी प्रकार त्योहारों को भी नया रूप दें। नई पीढ़ी की भावनाओं के साथ नए स्वरूप में मनाएंगे तो एक सुंदर नजारा हमारे सामने होगा। हमारी जिन परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं की सारी दुनिया मिसालें देती हैं। थोड़े से मजे के लिए उनमें अनावश्यक फेरबदल करने का हक हम किसी को भी नहीं है।

- रेखा राजेश लखोटिया
गोरेपेठ, नागपुर

मूल स्वरूप को बचाना जरूरी

परिवर्तन संसार का नियम है और आधुनिकता विकास का पर्याय, बशर्ते यह समाज, संस्कृति एवं परंपराओं के अनुकूल हो तथा इन्हें संरक्षण प्रदान करे। हाल के कुछ वर्षों में सामूहिक रूप से होने वाले आयोजनों व त्योहारों पर आधुनिकता का जो रंग चढ़ा है, वो उचित नहीं है। नई पीढ़ी इन्हें मना तो रही है, पर प्रारूप बदलना चाहती है, जिसमें आडंबर व फिजूलखर्ची तो है ही, साथ ही इनके पीछे कथा कहानियों, विधि-विधान, लोक नृत्य-गीतों से अधिक महत्व डीजे, शोर, धूम-धड़ाके और तड़क-भड़क को दिया जा रहा है। माहेश्वरी की पहचान ही हमारी उच्च कोटि की संस्कृति, परम्परा और तीज त्यौहार हैं, तो क्या हम अपनी पहचान खो देंगे? ये ही हमारी धरोहर है और विरासत भी।जिसे हमें नयी पीढ़ी को सौंपना है वो भी अपने मूल स्वरूप के साथ और इसके लिए किसी एक व्यक्ति विशेष को नहीं सबको आगे आना है।

- रेखा मंत्री,
गूंटूर, आंध्रप्रदेश

पर्वों की भावना पर हो आधुनिकता का आवरण

हमारी परंपरा और तीज त्योहारों के उत्सव हमारे जीवन एवं संस्कृति को जिंदादिल रखते हैं। पर्व त्योहारों के पीछे संदेशों की महत्ता स्पष्ट होती है। हां, बदलते समय के साथ त्योहारों को मनाने के तौर-तरीकों में काफी बदलाव आया है। बतौर उदाहरण हम दीपावली को ही लें। इसमें निहित स्वच्छता, आपस में मेलजोल, मिट्टी के दीये जो घी या तेल से जलाये जाते हैं, ऐसा माना जाता है इससे हमारे घर का ही नहीं मोहल्ले, समाज यहां तक कि संपूर्ण पृथ्वी का शुद्धिकरण होता है। इन त्योहारों से पारिवारिक रिश्तों के स्नेह में वृद्धि होती है, घर की साज-सज्जा का नवीनीकरण देखने को मिलता है। पहले दीवाली पर कार्ड, पत्र आदि जाते थे, आज फेसबुक, व्हाटसअप, ईमेल आदि-आदि द्वारा संदेशों का आदान-प्रदान होता है। आज पटाखों की आतिशबाजी, प्रदूषण एवं फिजूलखर्ची में त्योहार सिमट गया है। मिट्टी के दीयों की जगह चाइनीज उत्पादानों ने ले ली है बेशक ये उत्पादन सस्ते टिकाऊ हैं लेकिन इससे देश में कुम्हार जाति का परम्परागत रोजगार खत्म होने के कगार पर आ गया है। जो दीये बनाता था उसी के दीये बुझ गये हैं। आधुनिकता की चकाचौंध में सभ्यता और संस्कृति के मूलस्वर को दरकिनार न करें। पहले हम बांटने के परमभाव से भरे थे, आज छीनने के। परिवेदनाओं का आगाज यहीं से हुआ है। हर त्योहार के मूल अस्तित्व में छिपे सारगर्भित संदेशों पर, लोक-मान्यताओं पर आधुनिकता का पूर्ण आवरण न डालें। त्योहारों को परंपरा एवं आधुनिकता का पावन संगम बनाये, जहां परंपराए मूल-स्वरूप में सुरक्षित हो एवं आधुनिकता का ऐसा पुट हो कि त्योहार नीरस एवं उबाऊ न लगे। सम्यक, सहज व्यावहारिक दृष्टिकोण ही सर्वसुखदायी हो सकेगा। - **स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया**, जोधपुर

परंपरा व नई सोच का सामंजस्य हो

हमारे परंपरागत तीज त्योहार हमारी संस्कृति की पहचान है। ये संस्कृति जो हमें हमारे बुजुर्गों से मिली और हमारे द्वारा नई पीढ़ी को अवगत कराई जाएगी। यही संस्कृति के हस्तांतरण की प्रक्रिया अनादिकाल से चली आ रही है। आधुनिक पीढ़ी इन्हें मनाने को तो तैयार हैं लेकिन अपने तरीके से। यानी की तीज त्योहार तो नई पीढ़ी द्वारा मनाए जाते हैं लेकिन उनका मूलस्वरूप कहीं खोता जा रहा है। इस प्रकार संस्कृति की उपेक्षा करना मेरी नजर में सर्वथा अनुचित है। परिवर्तन संसार का नियम है इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता, लेकिन परिवर्तन की बुनियाद पर संस्कृति को हाशिये पर मत चढ़ाइये। अभी हाल ही में गणगौर (जो कि राजस्थान का प्रमुख त्योहार है) मनाया गया। जिसमें हमने संस्कृति को उसके मौलिक स्वरूप में ही रखते हुए नई पीढ़ी के हिसाब से गीतों व कार्यक्रमों का संचालन किया। ऐसा करने से नई पीढ़ी ने भी उनका पूरा लुत्फ उठाया। अंत में निष्कर्ष है कि परंपराओं व नई सोच का परस्पर सामंजस्य हो, तो ही संस्कृति का बचाव संभव है।

- **स्वाति मानधना**, बाड़मेर

परंपरा बचाने के लिये परिवर्तन जरूरी

कहते हैं परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हस्तनांतरण की एक सूचक, बिंदु या यूं कहें की क्रमवद्ध चलती आ रही प्रक्रिया का स्वरूप होती है। कोई भी परंपरा एक अंतराल अनुसार, बदलाव को ओढ़ के अपने अंदर इतिहास को समाहित करके वर्तमान में भविष्य को दर्शन देते हुए आगे बढ़ती है। परंपराओं का विकास पिछली सदी तक बहुत धीमे हुआ, परंतु आज के परिपेक्ष्य में टेक्नोलॉजी से लेकर बाहरी आवरण और दिखावे में बहुत से परिवर्तन को समाहित किया है। आज अपने तीज त्योहार मनाने में जो सांस्कृतिक और वैचारिक बदलाव आए हैं वह निरंतर चलते आ रहे बदलावों के ही स्वरूप है। नई पीढ़ी के लिए आधुनिकता के साथ हमारी परंपराओं का समावेश करके उनको मनाना गलत नहीं है, बल्कि उस विरासत को बचाये रखने का एक साधन भी है। हमको बहुत से बदलावों के लिए जो कि परंपरा की मूल भावना को बरकार रखते हुए किए जाएं तो निःसंकोच उनको अपनाना भी चाहिए और आज की पीढ़ी को बढ़ावा भी देना चाहिए। हमने अपने समाज, परिवारों में कई बदलावों को सहज रूप से अपनाया है, परंपरा में आधुनिकता के समावेश को परंपरा को बचाने के लिए ही करना चाहिए।

- **अमित डागा**, नईदिल्ली

परिवर्तन हों पर बेहूदगी नहीं

आज के आधुनिक बच्चे अत्यधिक जिज्ञासु स्वभाव के हैं। हर तीज-त्योहार को मनाने के पीछे का कारण जानने के लिए अपने घरवालों से प्रश्नों की झड़ियां लगा देते हैं। जब तक उन्हें इसका तर्कसंगत उत्तर नहीं मिलता असंतुष्ट रहते हैं और त्योहार मनाने के लिए उत्साही भी नहीं दिखते। कुछ त्योहारों की कुछ रीतियां सचमुच रूढ़िवादी लगती हैं। जब भी हमने अपने बड़ों से इसका प्रश्न किया वो निरुत्तर लगे। सदा उत्तर मिलता है कि बस यही हमारा त्योहार है, रीति-रिवाज है और उसको जैसे बताया जाय वैसे ही मनाना है। हम सदियों से ऐसे ही इसे मनाते आ रहे हैं। इन पर प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। हमारी तीज-त्योहार के व्रत की कहानियों की किताबें देखें और पढ़ें तो वो कहानियां भी अपने पीछे अनगिनत प्रश्न छोड़ जाती हैं। जिसका उत्तर आज तक कोई बड़ा-बुजुर्ग नहीं दे पाया है। ऐसे में अगर आज की पीढ़ी त्योहारों में कुछ परिवर्तन कर उनको सजीव रखे तो मेरी नजर में कुछ गलत नहीं। बस उसमें फिजूलखर्ची और फूहड़ता का वास नहीं होना चाहिए। आज लड़के और लड़कियां दोनों ही कार्यक्षेत्र पर जाते हैं। उनके पास पारंपरिक तरीके से त्योहार मनाने के लिए समयाभाव रहता है। व्यस्त जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए नवपीढ़ी को चाहिए कि त्योहारों को संस्कारों और संस्कृति के साथ जोड़कर ही उसमें परिवर्तन करे ना कि त्योहार के बहाने पार्टी व बेहूदगी का प्रदर्शन।

- **सरोज श्यामसुंदर लढ़ा** कोलकाता

त्योहारों की आत्मा के साथ खिलवाड़ अनुचित

सामाजिक, संस्कृति के वाहक एवं संरक्षक हैं, हमारे तीज-त्योहार। पहले त्योहार घर-परिवार में उत्साह, आपसी स्नेह के साथ पारंपरिक व्यंजनों की महक एवं बुजुर्गों के आशीष की छत्रछाया में मनाए जाते थे। पूरा परिवार एक साथ एकत्र होकर आत्मीयता के साथ बिना दिखावे के परंपराओं का निर्वाह खुशी से करते थे। यद्यपि आधुनिक पीढ़ी भी त्योहारों को उत्साह से मनाती है किंतु आधुनिकता के मिश्रण के साथ। सच है समय

परिवर्तनशील है, लेकिन परिवर्तन सकारात्मक हों तो स्वीकारे भी जाने चाहिए किंतु यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि कहीं आधुनिकता संस्कृति के मूल स्वरूप को आहत तो नहीं कर रही। त्योहार सिर्फ मौज मस्ती एवं सजने-संवरने का माध्यम न बन जाएं। आधुनिक समय में त्योहारों को होटल, क्लब, किटी में वैभव प्रदर्शन, फूहड़ नृत्यों एवं तंबोला पर त्योहारों के चित्र चिपका कर मनाया जाने लगा है। मनोरंजन एवं दिखावा त्योहारों का उद्देश्य बन गया है, यह भटकाव हर जगह दिखाई दे रहा है। त्योहारों की आत्मा के साथ खिलवाड़ कहां तक जायज है? इसका विचार अवश्य गंभीरता के साथ किया जाना चाहिए। हम अगली पीढ़ी के हाथों क्या सौंपना चाहते हैं विचार मंथन आवश्यक है। **- पूजा नबीरा,** काटोल

परिवर्तन सृष्टि का नैसर्गिक नियम

उपरोक्त सत्य के अनुसार हमारे रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान, वेशभूषा आदि में भी निरंतर बदलाव होता रहता है। इस बात के अनेक दृष्टांत उपलब्ध हैं कि रूढ़ियों पर अडिग रहने वाले, समयानुकूल परिवर्तन को स्वीकार न करने वाले कालांतर में अप्रासंगिक हो गए। लेकिन परिवर्तन का तात्पर्य यह नहीं कि हम अपने शाश्वत सनातन मूल्यों को परिवर्तित कर दे। यदि ऐसा परिवर्तन किया तब तो संस्कृति के अस्तित्व का संकट उपस्थित हो जाएगा। हमारे तीज त्योहार हमारी संस्कृति के वाहक हैं। एक युग से दूसरे युग में, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हमारी गौरवशाली परंपराओं को विरासत रूप में हस्तांतरित करते हैं। तीज-त्योहारों के पार्श्व की भावना, संदेश अपरिवर्तित रहना चाहिए। इन्हें मनाने की प्रेरणा अपरिवर्तित रहनी चाहिए। आधुनिकता के फेर में यदि त्योहारों की मूल भावना ही बदल दी गई तो यह सांस्कृतिक विनाश को निमंत्रण है। तीज त्योहारों की मूल शुद्धता, भावना को अक्षुण्ण रखते हुए इन्हें मनाने की विधि में यदि युगानुकूल परिवर्तन होता है तो यह संस्कृतिवर्धन का स्वस्थ कारण हो सकता है। परंपरागत तीज त्योहारों की संपूर्ण जानकारी आने वाली पीढ़ी को मिले यह वर्तमान पीढ़ी की जवाबदारी है, जिसे मूलतः परंपरागत व आधुनिकता में सामंजस्य बनाकर नई पीढ़ी को मनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। ताकि हमारे तीज त्योहार मनाने की परंपरा निरंतर चलती रहे।

- मदनमोहन पेड़ीवाल, सूरत

इनसे हो रहा परंपराओं का पतन

हमारी वर्षों से चली आई सहपरिवार तीज त्योहार मनाने की परंपरा संस्कृति इसके साथ धर्म और विज्ञान के मिलन की डोर से बंधी हुई है। अगर कहा जाय कि ये एक ही सिक्के की दो बाजू हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पर आज आधुनिकता के नाम पर हम इसकी पवित्रता खत्म करने की ओर अपना कदम बढ़ा रहे हैं। परंपरा तो चलती आ रही है किंतु इनके मूल ज्ञान और मूल आधार से हम अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। प्रतिस्पर्धा के इस युग में, हम किसी से कम नहीं यह साबित कर दिखा रहा है। तीज त्योहारों को आधुनिकता में मोड़कर उसके महत्व का पतन करना है। क्या ये उचित है..? जी नहीं, बस इसी के कारण हमारे खून के रिश्तों के साथ समायोजन न करते हुए, रिश्तों की कड़ियां कमजोर करके, प्रेम के मुंह बोले रिश्तों को बढ़ावा दे रहे हैं। आधुनिकता का आवरण परंपरागत चले आए पारिवारिक रीति रिवाज एवं एक दूसरे के प्रति आत्मीय भावनाओं का खंडन कर, नैतिक मूल्यों का समापन कर रहे हैं। **- सरोज गट्टाणी** परभणी

गणगौर गीत

आयो रे, आयो रे गणगौर त्योहार
आयो रे, आयो रे, आयो रे...
बुराई को अंतकर
रंग गुलाल उछालकर
मैं स्वागत करां गणगौर रो ।।1।। आयो रे....

छोया सजधज कर
सोला दिन पूजे ईसर गोरा दे ने
छोया सजधज कर मैं करा
गौरा की पूजा ।।2।। आयो रे....

आंख में काजल तिखी, नथनी, नौसर हार
चूड़ा चुंदड़ ओढ़कर, चूड़ चुंदड पैरकर
मैं तन मनसु करां गौर की पूजा।।3।। आयो रे....

सवारा भाग अमर कर ज्यो
मन चाहे वर दिज्यो
मैं सवागण राख्या करा गौर की पूजा।।4।। आयो रे...

चार मनकी चार लायज्यो, आठ मनकी गाठ
सोला मनकी गुदड़या, कई बत्तीस मनका आप
मैं करा गौर की पूजा ।।5।। आयो रे....

बाया बेगी आयज्यो फल लायज्यो, चार पिंडोली साथ
बाया बेगी आयज्यो, हलवो पुरी लायज्यो, चार पिंडोली साथ
ईसर गोरा देने भोग लगावा
मैं करा गौर की पूजा।।6।। आयो रे.....

- श्वेता काबरा, इचलकरंजी

प्रबुद्ध नागरिक होने का परिचय दें

एक विनम्र अपील

- सभ्य होने के नाते सभ्यता का अनुसरण करते रहते सभ्यता का परिचय दें।
- दुकान या घर में कहीं भी पॉलीथिन का उपयोग ना करें।
- दुकान, घर में कहीं कचरा बाहर सड़क अथवा नालियों में ना फेंकें। इन्हें डस्टबिन में जमा कर नगरनिकाय की कचरा गाड़ी में ही डालें।
- बाजार में से कोई भी चीज खाद्य उत्पादन या अन्य चीज लाना हो तो कपड़े की थैली लेकर जाएं।
- फल या सब्जी की कतरन (वेस्टेज) सड़क या नाली में ना फेंकें। गाय माता को खिला दें। पॉलीथिन में भरकर ना फेंके जिससे मूक प्राणियों के खाने से तकलीफ हो।
- प्लास्टिक से बने कप गिलास का भी उपयोग नहीं करें।
- गुटखा पाउचों का उपयोग भी बंद करना चाहिए। यह सेहत के लिए बहुत ही खतरनाक है। सड़कों पर भी गंदगी होती है। पाउचों के खाली रेपर सड़कों पर फेंके जाते हैं जिससे गंदगी दिखती है। मन चाही जगहों पर पाउच खाने के बाद थूका जाता है, वह भी गंदगी करता है।
- फेंकी गई पॉलीथिन का बड़ा ढेर लगता है, तो उसमे मूक प्राणी खाने को तलाशता है। खाने के चक्कर में पॉलीथिन सहित खा जाने पर बात उसकी जान पर बन आती है और दुर्गंध भी फैलती है।

- राजेंद्र माहेश्वरी, हरदा

जो तुम हंसोगे तो दुनिया हंसेगी

चंद्रमोहन शारदा, जयपुर

हंसी की फुलझड़ियां बिखेरने वाला न सिर्फ दूसरों के चेहरे पर भी हंसी बिखेर देते हैं, बल्कि देखा जाए तो स्वयं भी अधिक स्वस्थ रहता है, बनिस्बत गुमशुम रहने वालों से। वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि यह अपने आप में एक रामबाण औषधि से कम नहीं है। आईये जानें ऐसा क्यों?

'जो तुम हंसोगे तो दुनिया हंसेगी, रोओगे तुम तो न रोएगी दुनिया।' एक प्रसिद्ध फिल्मी गीत की इन पंक्तियों में जीवन का सार छिपा हुआ है कि हंसी में सब शामिल हो जाएंगे, जबकि रोते समय सब आपसे किनारा करने की कोशिश करेंगे, तो क्यों न जिंदगी हंसते-हंसते काटी जाए। जिंदगी के इस मूलमंत्र को जिसने पहचान लिया, वह कभी दुःखी नहीं रह सकता, वह स्वयं तो सुखी रहेगा ही, अपने आसपास वालों को भी सुखी रखेगा। तो क्यों न हमें भी हंसने वालों में शामिल जो जाना चाहिए।

वैसे तो हमें वर्ष में पूरे 365 दिन हंसना चाहिए, फिर भी यदि हम ऐसा न कर सकें तो कम से कम अंतरराष्ट्रीय हास्य दिवस पर तो अवश्य हंसें। हास्य दिवस पर विश्वभर के लोग हंसते हैं और इतना हंसते हैं कि उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं। इस दिन वह हंसते हुए अपने सारे तनावों को भुला देते हैं।

आखिर हास्य दिवस मनाने की जरूरत क्यों पड़ी हम रोने का या क्रोधित होने का दिवस तो नहीं मनाते? वास्तव में यह चीजें हमारे जीवन पर इतनी हावी हो गई है कि हम हंसना भूल गए हैं। उसी की याद दिलाने के लिए हमें हास्य दिवस मनाना पड़ रहा है। हास्य दिवस पर दुनियाभर के हंसोड़ इकट्ठा होकर हमें बताते हैं, सिखाते हैं कि हंसना क्या है, हंसी का महत्त्व क्या है। प्राणी जगत में केवल मनुष्य को ही अलौलिक शक्ति प्राप्त है कि वह मुस्कुरा सके, हंस सके। अन्यथा वह पशु के समान माना जाएगा, अब आप ही सोचिए कि आप किस श्रेणी में आना चाहेंगे?

साहित्यकार बर्नार्ड शॉ ने एक स्थान पर क्या खूब लिखा है कि हंसी की पृष्ठभूमि पर ही स्वास्थ्य एवं यौवन के प्रसून खिलते हैं। यौवन को तरोताजा बनाए रखने के लिए आप भी खूब हंसिए।

हंसने के इस महत्त्व को भली भांति देश में सर्वप्रथम सन् 1970 में जयपुर में पहचाना आरडी बाहेती ने। उन्होंने लोगों को हंसाने का एक आंदोलन ही चला दिया। हर वर्ष वे मई के प्रथम रविवार को हास्यम् संस्था की ओर से हास्य दिवस मनाने लगे। इसमें वह अब तक अनेक लोगों को जोड़ चुके हैं।

हास्य को सदा से ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य का प्रमुख साधन माना गया है। विद्वान हजरत सुलेमान ने तो इसे रामबाण औषधि की संज्ञा दी है। उनके शब्दों में यदि मुख पर हास्य और हृदय में उल्लास है, तो स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव रामबाण औषधि की तरह पड़ता है। इसी बात की पुष्टि में डॉ. होलिवर बैंडल होम्ज कहते हैं कि हास्य या उल्लास प्राकृतिक औषधियों का महासागर है। अंग्रेजी में कहावत है कि प्रतिदिन केवल तीन बार खिलखिलाकर हंसने से मनुष्य न तो रोगी होता है और न ही उसे किसी डॉक्टर की जरूरत पड़ती है। आयुर्वेद व मनोविज्ञान का स्वर्ण सिद्धांत है कि चिंता, क्रोध, ईष्या, द्वेष आदि विषाक्त मनोभावों से हमारे शरीर में विष की उत्पत्ति होती रहती है, हास्य उसका परिशोधक है। सही मायने में हास्य से बढ़कर बलवर्द्धक और उत्साहप्रद कोई अन्य रसायन हो ही नहीं सकता।

जोरों से हंसने पर वक्षस्थल पर एक के बाद एक कई झटके लगते हैं। प्रत्येक झटके के साथ रक्तवाहिनी नलिकाओं का रक्त हृदय तक पहुंचने के

पहले मार्ग में कई जगह रुकता है। यही कारण है कि देर तक हंसते रहने से मनुष्य का चेहरा थोड़ा बहुत लाल हो जाता है। हास्य प्रक्रिया के बीच-बीच जो श्वासोच्छवास प्रक्रिया होती है, उसके कारण फेफड़ों के अन्दर साफ हवा पहुंचती है और दूषित वायु बाहर निकलती है।

हंसने से भोजन शीघ्र पचता है। जो व्यक्ति भोजन करते समय रोता है उसकी भूख कम हो जाती है और पाचन क्रिया निष्क्रिय हो जाती है। हंसते हुए भोजन करने से जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा रस, रक्त, मांस, मज्जा, चर्बी, अस्थि एवं वीर्य की वृद्धि होती है।

हास्य की चिकित्सकीय उपयोगिता पर वैज्ञानिक दृष्टि की कहानी मात्र तीन दशक पुरानी है। साइकोलॉजी टुडे में निकले शोधपत्र के अनुसार 80 के दशक में हास्य के स्वाथ्यवर्द्धक प्रभाव की ओर वैज्ञानिकों की नजर गई और 90 के दशक में इसकी चिकित्सकीय उपयोगिता असंदिग्ध रूप से स्पष्ट हो सकी। लाफिंग थैरेपी के आविष्कार का श्रेय एक अमेरिकन पत्रकार नारमन काजिन को जाता है। हंसने से स्वास्थ्य में सुधार होता है, यह विचार उन्होंने अपनी पुस्तक 'एनॉटमी ऑफ इलनेस' में प्रतिपादित किया। उनकी स्वयं की रीढ़ की हड्डी में ऐसी बीमारी थी, जिससे ध्यान बांटने के लिए वे टीवी पर हास्य कार्यक्रम देखते और ठहाके लगाते। कुछ दिनों में वे यह देखकर चकित थे कि दर्द पूर्णतया गायब हो गया है। इस प्रकार उन्होंने चिकित्सा जगत को अपने आविष्कार का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि जोर-जोर से हंसने पर शरीर में एंडोर्फिन नामक रसायन का स्तर बढ़ जाता है, जो सबसे अच्छे दर्द निवारकों में है। यही नहीं इससे मस्तिष्क में पर्याप्त मात्रा में रक्त संचार होता है, जिससे न्यूरोट्रांसमीटर की मात्रा बढ़ती है। इससे मन प्रसन्न रहता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है। यही नहीं मधुमेह, रक्तचाप, दमा व चर्मरोग आदि बीमारियां दूर हो जाती हैं।

विभिन्न अनुसंधानों के बाद वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि हंसने से मस्तिष्क को उत्प्रेरणा मिलती है, जिससे वहां एपीनेफ्रेन, नोरेपाइनफ्रीन और डोपामाइन जैसे हार्मोन पैदा होते हैं। ये हार्मोन शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक हैं और दर्द को कम करके वात रोगों व एलर्जी जैसे रोगों से मुक्ति दिलाते हैं। चिकित्सकों का कहना है कि हंसना एक उत्तम व्यायाम है। प्रतिदिन चार-पांच किमी दौड़ने से जो व्यायाम होता है और इससे जो शारीरिक क्षमता बढ़ती है, उतनी ही हंसने से बढ़ती है। हंसने से स्नायुओं को स्वतः व्यायाम करने का अवसर मिलता है, जिससे शारीरिक व मानसिक तनाव दूर होता है। यूरोपियन वेल्यूज ग्रुप द्वारा बीस यूरोपीय देशों के लिए किए गए सर्वेक्षण के अनुसार ब्रिटेन के निवासी सर्वाधिक स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं। उनके उत्तम स्वास्थ्य का यही राज है कि वे हंसने-हंसाने में औरों की अपेक्षा अधिक समय लगाते हैं। ब्रिटिश चिकित्सा विभाग के शोध संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार मनुष्य के स्वभाव और भावनाओं का सर्दी-जुकाम से गहरा रिश्ता है। मानसिक तनाव की स्थिति में शरीर में स्टेराइड नामक तत्व बनने लगता है, जिससे जीवन शक्ति नष्ट होने लगती है और शरीर पर रोगाणु आसानी से हावी होने लगते हैं। संस्थान के विशेषज्ञों का परामर्श है कि जो व्यक्ति नजला, सर्दी, जुकाम व दमा से बचना चाहते हैं, वे तनाव से बचें। अभिव्यक्ति के लिए जी खोलकर हंसें। हंसी से रोगों से बच सकते हैं और स्वस्थ रह सकते हैं।

स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिसिन स्कूल के डॉ. विलियम का मत है कि जो लोग हंसते-हंसाते नहीं हैं, वे अपेक्षाकृत कहीं जल्दी और गंभीर रूप से बीमार पड़ते हैं। डॉ. के.के. अनुसार, हंसने से शरीर के अंदर समूचे तंत्र में ऐसी हलचल होती है, जो एंडोक्राइन प्रक्रिया को सुचारु कर देती है। न्यूयार्क बेबी हॉस्पिटल के बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. स्टाव औषधि उपचार के साथ जोकर बनाकर बच्चों को हंसाने का भी काम कर सकते, तो उसे हंसाकर व खुश रखकर उसके जीवन की अवधि तो कुछ बढ़ा ही सकते हैं। डॉ. ब्रेक द्वारा हास्य चिकित्सा के बीच रोगियों के रक्त की जांच की गई, जिसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन पाए गए। रोगियों में रोग के कीटाणुओं से लड़ने वाली सफेद रक्त कणिकाओं की संख्या बढ़ी हुई मिली। इसके अतिरिक्त कोलेस्ट्रोल की मात्रा में कमी पाई गई।

कैलिफोर्निया स्टेट विवि के नर्सिंग विभाग के डॉ.राबिंसन पिछले 20 वर्षों से हास्य चिकित्सा पर काम कर रहे हैं। वह कहते हैं कि जब हम हंसते हैं तो हमारा तनाव, गुस्सा व संकोच सब दूर हो जाते हैं। स्वास्थ्य संस्था हार्टकेयर फाउंडेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. कर्नल केएल चौपड़ा अपनी पुस्तक योर लाइफ इज इन योर हैंड में अपने विचार प्रस्तुत करते हैं कि हंसी से हमारे सकारात्मक भाव और विचार जन्म लेते हैं।

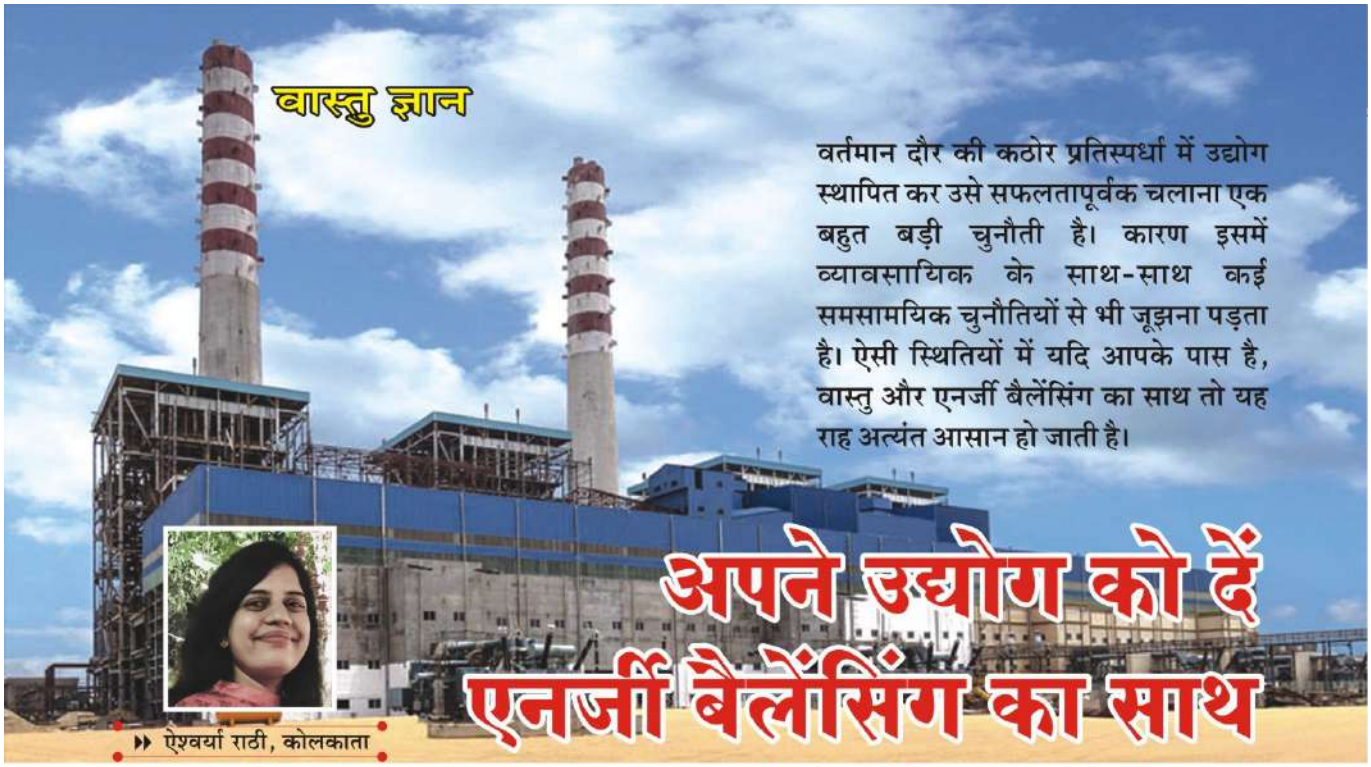

वास्तु ज्ञान

वर्तमान दौर की कठोर प्रतिस्पर्धा में उद्योग स्थापित कर उसे सफलतापूर्वक चलाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। कारण इसमें व्यावसायिक के साथ-साथ कई समसामयिक चुनौतियों से भी जूझना पड़ता है। ऐसी स्थितियों में यदि आपके पास है, वास्तु और एनर्जी बैलेंसिंग का साथ तो यह राह अत्यंत आसान हो जाती है।

अपने उद्योग को दें एनर्जी बैलेंसिंग का साथ

ऐश्वर्या राठी, कोलकाता

वास्तु एवं एनर्जी बैलेंसिंग के सिद्धांतों का पालन करना फैक्ट्री अर्थात कलकारखानों की प्रगति एवं उन्नति के लिए बहुत जरूरी एवं आवश्यक है। आज के दौर में फैक्ट्री चलाना कोई आसान काम नहीं है। बहुत से फैक्टर को इसमें ध्यान में रखना पड़ता है। बहुत बार यह समस्या हमारे सामने आई कि आपने फैक्ट्री तो लगा दी परंतु वह किसी कारण वश चल नहीं रही।

कारण कोई भी हो सकता है

फैक्ट्री न चल पाने का कारण कोई भी हो सकता है। मजदूरों की हड़ताल, मजदूरों की समस्या, समय पर और सही प्रकार से उत्पादन नहीं हो पाना, समय पर माल नहीं पहुंच पाना, मशीन में बार-बार समस्या आना, माल या गुड्स का चोरी हो जाना, गुड्स सेल्स में दिक्कतें आना आदि। आप इनमें से किसी भी समस्या के शिकार हैं, तो जान लें कि आपके कलकारखानों में बहुत बड़ा वास्तु दोष है और एनर्जी बैलेंसिंग भी सही तरीके से नहीं हुई है।

सर्वप्रथम फैक्ट्री की भूमि देखें

इसमें सबसे महत्वपूर्ण है, आपके कल कारखाने की जमीन। अतः आप देखें जमीन किस प्रकार की है? जमीन पथरीली है, क्या? मिट्टी का रंग काला है या लाल या ग्रे है? यह जानना भी अतिआवश्यक है। भूमि की मिट्टी के अनुसार ही आपकी फैक्ट्री की जमीन का एनर्जी बैलेंसिंग होगा। आज के युग में फैक्ट्री को प्रॉफिट में चलाना आसान काम नहीं, इसमें आपको वास्तु एवं एनर्जी बैलेंसिंग करने से आपकी दिक्कतें और आपकी समस्याएं काफी कम हो सकती हैं। इससे आपका फैक्ट्री का वातावरण अनुकूल बन सकता है, जिससे आप टेंशन फ्री हो सकते हैं।

यह भी जरूर देखें

भूमि के बाद देखें फैक्ट्री की बाउंड्रीवॉल किस प्रकार से बनी हुई है? फैक्ट्री के सामने कोई इलेक्ट्रिक पोल या बड़ा सा पेड़ तो नहीं है? फैक्ट्री के आगे कोई गंदा नाला तो नहीं बह रहा है? फैक्ट्री के मुख्य द्वार की दिशा कौन सी है? फैक्ट्री के अंदर जो मशीनरी स्थापित कर रहे हैं वह किस दिशा में कर रहे हैं? कौन सी मशीनरी कहां स्थापित हो इसका भी बहुत महत्वपूर्ण रोल है। कोई भी मशीन कहीं पर भी बीना सोचे समझे न लगा दें, इससे बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। कच्चा माल, उत्पादन, भंडारण आदि कहां और कैसे रखना है इसका अवश्य ध्यान रखें। फैक्ट्री की छत किस प्रकार से है व किस तरफ छत की ढलान है, जरूर देखें। ध्यान रखें फैक्ट्री का कोई हिस्सा कटा हुआ तो नहीं है। इसके बाद भी किसी उचित विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य लें।

काल के प्रवर्तक और नियंत्रक महाकाल की नगरी उज्जयिनी से

सूक्ष्म एवं शुद्ध धर्मशास्त्र सम्मत दृश्यगणितानुसार निर्मित तथा देश के प्रमुख विद्वानों द्वारा सम्पादित एवं प्रमाणित

श्री अवन्तिका पञ्चाङ्ग

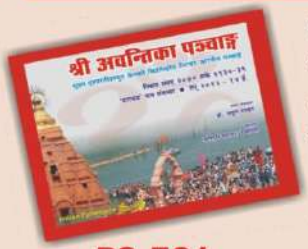

व्रत-पर्व को सही समय पर मनाकर शास्त्रोक्त फल प्राप्त करके सुख-समृद्धि, आरोग्यता तथा जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सफलता अर्जित करें।

RS. 50/-

आज ही अपनी प्रति मंगावे-
(डाक खर्च सहित)

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्या नगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष : 0734-2559389,
मोबाइल : 094250-91161

Maheshwari College of Commerce and Arts

Governed by The Education Committee of The Maheshwari Samaj (Society), Jaipur
Affiliated to The University of Rajasthan

Courses Offered:

UG Courses:
B.A, B.Com, BBA

PG Courses:
MA (Geog, Socio, Eco, Eng. Lit)
MHRM
M.Com (BADM, ABST, EAFM)

- ✓Best Results in All Streams and Placement Assistance
- ✓World Class Infrastructure & Secured Wi-Fi Campus
- ✓Highly Qualified Faculty
- ✓Transport Facility all Across the City
- ✓Centre of Cambridge English Language Assessment Cell, UK

Ranked 4th in Rajasthan as per India Today
Best College Ranking Listed in top 100 colleges of India

Admission Open for Session 2019-20

Maheshwari Girls Hostel

Managed by Maheshwari College of Commerce and Arts

- Three-Tier Secured Campus
- Well Furnished AC Rooms
- Gymnasium & Sports Facilities
- Mess with a Centralized Modern Kitchen
- Affordable Fee Structure
- Power Backup
- Wi-Fi Enabled Campus
- Pantry Facility at all wings
- Reading Room for Group Study

Sector 5 (Extn.), Pratap Nagar, Jaipur
Mob. : 9649418880, 9649318880
Email : maheshwaricollegejpr@gmail.com
Web : www.maheshwaricollege.ac.in

पाठक मंच

'आपकी आवाज'

माहेश्वरी महासभा का जोधपुर अधिवेशन एक सामाजिक अवलोकन

जोधपुर में सम्पन्न माहेश्वरी महाधिवेशन वास्तव में एक ऐसा वृहदा व महत्वपूर्ण आयोजन था जो समाज की स्थिति परिस्थिति में परिवर्तन लाने में समर्थ था। इस आयोजन ने क्या किया और क्या किया जा सकता था, आईये जाने समाजसेवी सत्यनारायण तोषनीवाल इचलकरंजी की नजर से।

बड़ी सुखद अनुभूति थी कि माहेश्वरी समाज का अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के 4 से 7 जनवरी 2019 तक आयोजन के लिये राजस्थान के जोधपुर शहर को मैजबानी का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 40 हजार समाज भाइयों का समागम 3 लाख वर्गफुट की भोजन शाला 100 हलवाई व 1500 कर्मठ कार्यकर्ताओं की 'अनुकरणीय -...' व 11 व्यंजन (इतना ही लें थाली में, व्यर्थन में जाये नाली में) के 'रसास्वादन' से 'सरोकार' 'सामाजिक-समरसता' का आयोजन हुआ। खुशी हुई मगर समाज के करोड़ों रुपये खर्च कर "मौज-मजे का मेला" कहावत भी चरितार्थ हुई।

▶▶ महासम्मेलन की खास बात यह रही कि- अपने स्वागत योग्य प्रस्ताव में घोषणाएँ की गई-

▶▶ हर समाज भाई को किराये के मकान से मुक्ति

▶▶ कन्या जन्म पर सत्कार व उत्सव मनाने की परिपाटी

▶▶ बच्चों की उच्च शिक्षा- कौशल व विकास

▶▶ आर्थिक रूप से पिछड़े समाज भाइयों की हर संभव मदद

▶▶ माहेश्वरी समाज के अस्तित्व का खतरा हम दो- हमारे तीन के बजाय 7 क्यों नहीं?

▶▶ कन्या की शादी उम्र 21 वर्ष व लड़के की शादी 25 वर्ष तक करने का आग्रह

परजाति-विवाह पर अंकुश हेतु कर्णधारों द्वारा आत्मलोचन एवं विवाह पश्चात लड़की द्वारा भावी शिक्षा पर ससुराल पक्ष की जिम्मेदारी पर "मुंगेरीलाल के हसीन सपनें" दिखाकर "लॉलीपोप के अधिष्ठाता" यह भूल रहे हैं कि पंच- सितारा होटलों के 'रसिया' माहेश्वरी समाज के तीन मुख्य उद्देश्य- 'सेवा-त्याग-सदाचार' की भावनाएं 'त्याग' चुके हैं। समाज के कर्णधारों की कथनी व करनी से समाज उद्वेलित है। समाज का आम सदस्य 'असहाय' की स्थिति में हैं। पदों का आवंटन कर्मठ व योग्य कार्यकर्ताओं से कोसों दूर है। हर जगह पैसे वालों का बोलबाला है। मगर समाज के 'हित-चिंतकों' के पास कुछ प्रमुख बातों पर विचार का समय नहीं था- सामाजिक-कुरीतियाँ मुंह बायें खड़ी हैं, दहेज, बहुहत्या, उत्पीड़न, पर जाति विवाह, संगीत संध्या व नया रोग प्री-वेंडिंग फोटो शूट।

समाज की पत्र-पत्रिकाएँ बनाम मीडिया

अपनी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के 'पुरोधा' मीडिया को गले लगाना तो अपना स्वाधिकार समझते हैं। मगर सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं को 'सम्मान' देना इनकी कार्यशैली में नहीं है। इनको डर है कि पत्र-पत्रिकाएँ जी-हुजुरी नहीं कर, आयोजन का कबाड़ा न कर दें। जबकि सामाजिक पत्र-पत्रिकाएँ ही घर-घर पहुंचकर आपके यश को बढ़ाती हैं यही हकीकत है।

सम्मेलन का राजनीतिकरण

महासम्मेलन का ध्रुवीकरण राजनीतिक मंच में तब्दील हुआ दिखा। लोकसभाध्यक्षा, परिवहन मंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यमंत्री की उपस्थित (प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति) सदस्यों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे, मगर राजनेताओं को बुलाकर भी समाज का हित नहीं हो सका तथा महेश नवमी की सार्वजनिक छुट्टी का ब्यावर के श्री चैनसुख हेड़ा द्वारा प्रस्ताव, माहेश्वरी समाज को अल्पसंख्यक समाज का दर्जा आदि अभी भी कई प्रसंग अछूते हैं, समाज के कर्णधार आत्मालोक इस ओर ध्यान दें।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

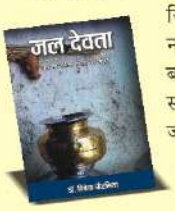

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

आपसे कहा जाता है -

▶▶ संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।

▶▶ सांप दिखे तो काम टालें।

▶▶ नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

a i s a k y o n

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

90, विद्यानगर, सांवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

कल आज और कल

कल अर्थात लगभग 30-40 वर्ष पूर्व का दौर। उसका चिंतन करें तो आज तक में बहुत कुछ बदल गया है, जो सैकड़ों सालों में नहीं बदला था। इस बदलाव की स्थिति में विचारणीय है कि यदि यही रफ्तार रही तो आने वाला 'कल' कैसा होगा? इन सबका प्रभाव सबसे अधिक बच्चों और उनके बचपन पर पड़ा है।

अंबिका हेड़ा, अजमेर

आज से 30-40 साल पहले का बचपन देखें तो हर शाम गली में बच्चों का शोर सुनाई देता था। गर्मी में मोहल्ले की गलियों में बच्चे खेलते नजर आते थे। सितोलिया, रस्सी कूद, पहल दूज, बैडमिंटन, क्रिकेट, पोसमबा भाई पोसमबा, रात को गलियों में छुपन-छुपाई और न जाने क्या-क्या? घर में एक टीवी हॉल हुआ करता था। वहीं सब की दिनभर के कार्यों पर बातें हो जाती थी। घर के टीवी ने हर कमरे तक जगह बनाई। टीवी के बाद कम्प्यूटर, कम्प्यूटर के बाद लैपटॉप, लैपटॉप के बाद मोबाइल सबके हाथों में ही पहुंच गया। हॉल में ही एक महत्वपूर्ण सदस्य और हुआ करता था टेलीफोन और क्या सदस्य ही तो था, जो अकेला रिश्तों के तार जोड़े रखता था। समय बदलता गया। हम उन्नति करते गए ना जाने बचपन कहां खो गया।

परेशानी का सबब बनता मोबाइल

विकास की ओर बढ़ते इस युग में अभिभावकों की परेशानी बना, बच्चों का मोबाइल और टेबलेट की ओर बढ़ता रुझान। परेशानी का जन्मदाता कौन? क्या बच्चों ने जन्म लेते ही मोबाइल क्या है, जान लिया था? कहीं अभिभावक स्वयं ही तो परेशानी का कारण? क्षमा चाहूंगी, लेकिन ये एक कटु सत्य है। हम अभिभावक स्वयं ही रुचि जागृत कर रहे हैं, बच्चों को इन सब गैजेज की ओर आकर्षित हम ही कर रहे हैं। छोटे बच्चे को खाना खिलाने के लिए मोबाइल प्रलोभन। मकसद बस कॉर्टून देखते-देखते जल्दी खाना खत्म हो जाए। मम्मी को कुछ काम करना है या मेहमान घर पर आएं तो बस बच्चे को मोबाइल दे देना। 'बेटा गेम खेल मैं ये काम कर लूं'। पार्टी में बच्चे साथ जा रहे तो बस फोन हाथ में पकड़ा देते हैं। पार्टियों में भी देखें तो बच्चे फोन पर गेम खेलते दिख जाएंगे। बंद कमरे में घंटों फोन के साथ बंद रह सकते हैं। साथ ही हेडफोन भी मिल जाएं तो सोने पर सुहागा। इसलिए हर अभिभावक शिकायत करता दिखेगा कि दिनभर फोन पर लगा रहता है या लगी रहती है। बिल गेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया था। एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स ने अपने एक इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने अपने बच्चों को आइपैड इस्तेमाल नहीं करने दिया था। विदेशों में 8-10 साल तक के बच्चों को मोबाइल और टीवी से दूर रखा जाता है। और हम हैं कि कभी-कभी स्टेटस सिंबल बना देते हैं।

शोधकर्ताओं के शोध पर नजर डालें

स्मार्टफोन का किसी भी रूप में इस्तेमाल करने वाले बच्चे अन्य बच्चों की तुलना में देर से बोलना शुरू करते हैं। बच्चों में चिड़चिड़ापना का बढ़ना इसका कारण है। मोबाइल का इस्तेमाल करने से ब्रेन ट्यूमर का खतरा बढ़जाता है। मोबाइल से निकलने वाली रेडिया तरंगें दिमाग पर गहरा असर डालती है और इससे सुनने की क्षमता भी कमजोर होती है। 12 साल से कम उम्र के बच्चों के जीवन में टेक्नोलॉजी का दखल उनके निवास व शैक्षणिक प्रगति के लिए दुष्प्रभावी होता है। डिप्रेशन, एंजाइटी, अटैचमेंट डिसऑडर, ध्यान नहीं लगना, ऑटिज्म, बाइपोलर डिसऑर्डर, उन्माद और प्रॉब्लम चाइल्ड बिहेवियर जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। डिजिटल स्मृतिलोप में हाईस्पीड मीडिया कंटेंट से बच्चों के फोकस करने की क्षमता बुरी तरह से प्रभावित होती है, जिससे वे किसी एक चीज पर ध्यान नहीं लगा पाते। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से सुकून जा सकता है और याददाश्त कम होने लगती है। या कह दें कि याद रखने की क्षमता कम हो जाती है।

हमसे दूर जा रहे हैं बच्चे

शोधकर्ताओं की बातों को भी अगर हम ना मानें तो क्या हम ये नहीं मानते डिजिटल उपकरणों का प्रयोग हमारे बच्चों के जीवन में इतना बढ़ रहा है कि बच्चे हम से भी दूर जा रहे हैं। इससे पारिवारिक वार्तालाप समाप्त हो रहा है। अभिभावकों के साथ कहीं जाने से बच्चे जी चुरा रहे हैं। शारीरिक श्रम कम होता जा रहा है। वे बातों को नजरअंदाज कर रहे हैं। छोटे बच्चों को चश्मा जल्द लग रहा है। आउटडोर एक्टीविटी कम हो रही है। सोचने की क्षमता कम हो रही है क्योंकि सबकुछ इंटरनेट पर मिल जाता है आदि। याद रखें बच्चे हमारा भविष्य हैं, हमारा कल हैं, जब तक हो सके मोबाइल टीवी से बच्चों को दूर रखें। मोबाइल से दूर रखने के लिए बच्चों में अतिरिक्त गतिविधियों की ओर रुचि पैदा कीजिए। बच्चों को उनकी पसंदीदा गतिविधि में व्यस्त रखिए। चाहे वो बागवानी हो, चित्रकला हो, संगीत हो या कुकिंग हो। बच्चें आउटडोर गेम्स खेलें उस पर जोर दीजिए।

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

करत करत अभ्यास ते..

खम्मा घणी सा हुक्म ज़णे भी काम आपरे मन रो नहीं हुवे तो आपाणे भीतर एक नकारात्मक सोच आ जावे ...आपा सोचण लाग जावां कि म्हारे साथे ही ऐड़ो क्यों हुयों ...म्हारी तो किस्मत ही बुरी है ... इण सोच सूं कई बार तनाव आपाणे माथे में डेरो बणा लेवे, यूँ हुवते ही मन सूं खुशियां निकळ जावै। आपां समस्या रो समाधान करण री बजाय समस्या ने और पेचीदी बणा देवा...

हुक्म सकारात्मक जीवन जीणो कोई मुश्किल काम नहीं। आपाणी सोच पर निर्भर करें कि आपा मन में कांई सोच रिया हां... हुक्म याद राखजो समय एक समान नहीं हुवे। जो चीज़ आज मुश्किल दिख रही है वा भी आपाणी मेहनत सूं आसान हूँ जावे ...इने साथे-साथे आपाने आपरे भीतर रो बचपन कदैई खत्म नहीं करणों जो आपाणे भीतर री सरलता और उम्मीदों ने जगा ने राखे। अगर आपा इतिहास उठा ने देखा एड़ा कई उदाहरण है जो बार बार असफल हुने भी उम्मीद नहीं छोड़ी और वे कामयाब लोगा में अव्वल दर्जे में शामिल हूँ ग्या।

दुनियां में सबसूं अमीर इंसान बिलगेट्स हारवर्ड कॉलेज रे बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी और कारोबार शरू कियो जिणमें बुरी तरह असफलता मिली पर हार नहीं मानी। मेहनत, लगन, आत्म-विश्वास सूं दुनिया रा सबसूं अमीर लोगों में आपरो नाम दर्ज करवा दियो।

दुनिया में जीनियस लोगों में आपरी पहचान बणावन वाला वैज्ञानिक आइंस्टीन चार साल तक बोल नहीं पाया और सात साल री उमर तक पढ़ नहीं पाया इण कारण वाणा माँ पिताजी और शिक्षक आइंस्टीन ने एक सुस्त और गैर सामाजिक छात्र ज्यूँ देखता और वाणे स्कूल सूं भी निकाल दियो, ज्यूँ त्युं वे स्कूल री पढ़ाई पूरी की। आगे वाणे पॉलीटेक्निक कॉलेज में कम मार्क्स री वजह सूं दाखिलो नहीं मिल्यो। इने बावजूद भौतिक विज्ञान री दुनिया में वाणो सबसूं बड़ो नाम साबित हुयो।

नोबल पुरस्कार और दो बार इंग्लैंड रा प्रधानमंत्री पद पर रैवण वाला विंस्टन चर्चिल छठी क्लास में फेल हुया, प्रधानमंत्री बनण सू पेला हर चुनाव में भी असफल हुआ लेकिन मेहनत करनी नहीं छोड़ी और दुनिया में कामयाबी री एक मिसाल पेश की।

भारत री और सूं एकला नोबेल पुरस्कार जीतण वाला महान कवि और साहित्यकार रवीन्द्रनाथ टैगोर स्कूल री पढ़ाई तक में ही फेल हूँ ग्या। वे स्कूल में कमज़ोर टाबरों री गिणती में आवता, बाद में वे देश रा गर्व साबित हुया। वाणा शब्द 'हर ओक का पेड़ पहले ज़मीन पर गिरा एक छोटा बीज होता है'।

एक सच सदा याद राखणो हज़ूर दुनिया री खास शख्सीयतें शरुआत में अक्सर असफल हुई पर आखिर में आपरी मेहनत, सूझबूझ, धैर्य एवं निष्ठा सूं जगत भर में एक विशिष्ट पहचान बणायी। अंत में एक दोहो याद आयो हुकम

'करत करत अभ्यास ते जड़मति होत सुजान, रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान।'

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

ख़्वाईशो के बोझ में बशीर..तू क्या क्या कर रहा है..
इतना तो जीना भी नहीं...जितना तू मर रहा है...

तूँ भी खामख्वाह, बढ रही है, ए धूप;
इस शहर में पिघलने वाले, दिल ही नहीं हैं।

हर हाल में हंसने का हुनर पास था जिनके
वो रोने लगे हैं तो कोई बात तो होगी।

मयखाने से पूछा आज इतना सन्नाटा क्यों है,
बोला साहब लू का दौर है शराब कौन पीता है।

तेरे हर अंदाज अच्छे लगते हैं,
सिवाय नजर अंदाज़ करने के।

बात तेरी जुबा से हमे सुनना है
शायरी का मतलब लोग अनेक निकालते हैं।

तुम सोचते होगे की आज याद नहीं किया,
कभी भूले ही नहीं तो याद क्या करें।

फ़र्क़ लिखती है हर एक की किस्मत को ज़िन्दगी
न जाने कई बार इश्क़ एक जैसा क्यों लिख देती है..

बड़ी नर्म सी ज़मी बनाई है खुदा ने..मेरे ईमान-ए-दिल की..
मेरे ज़हन में..सबकुछ पत्थर की लकीरों सा दर्ज़ होता है।

खुश रहें... खुश रखें...

पीड़ा को विस्मृत करें, सृजन के संकल्प को स्मृति में रखें

दुर्घटनाएँ सभी की जिंदगी में होती रहती है। आदमी बड़ा हो या छोटा, जीवन में कभी न कभी हादसों से गुजरना ही पड़ता है। सभी महान व्यक्ति जीवन में विपरीत हालात का सामना कर चुके हैं लेकिन यदि दृष्टि आध्यात्मिक हो तो हादसे से हुए विनाश में भी सृजन किया जा सकता है। सृजन की यही वृत्ति हमें दुख, पीड़ा, कष्ट, परेशानी और निराशा से उबार लेगी।

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

श्रीराम ने सीता अपहरण जैसे विपरीत हालात देखे थे तो श्रीकृष्ण ने अपने बचपन में दुर्घटनाओं की लंबी शृंखला देखी थी। वृंदावन के वन में आग लग जाना, पिता नंदबाबा पर राक्षसों के आक्रमण आदि। महावीर ने अपनो से दुर्घटनाएं झेलीं तो मोहम्मद ने इस्लाम को हादसों के बीच गुजारकर सलामत स्थापित किया था। कौन बचा है कुदरत की मार से।

हादसे तो होते ही हैं, सवाल है कि उनका सामना कैसे किया जाए। भागवत में कहा है याद करने पर बीता हुआ सुख भी दुख देता है तो फिर दुख तो दुख देगा ही। जीवन में हुई दुर्घटनाओं के बाद उसकी पीड़ा को जितनी जल्दी विस्मृत कर देंगे उतनी ही शीघ्रता से नया सृजन कर पाएंगे। इसलिए पीड़ा को विस्मृत करें और सृजन के संकल्प को स्मृति में रखें।

राम-कृष्ण से लेकर अब तक जितने भी महान लोग हुए हैं उन्होंने जीवन के विपरीत हालात में पीड़ा को भी सुख में बदलने की कला सिखाई। अध्यात्म ने कहा है अपने साक्षी हो जाओ। राम-कृष्ण से लेकर अब तक जितने भी महान लोग हुए हैं उन्होंने जीवन के विपरीत हालात में पीड़ा को भी सुख में बदलने की कला सिखाई। अध्यात्म ने कहा है अपने साक्षी हो जाओ। इसी साक्षी भाव को जागरण, ध्यान, मुक्ति कहा गया है, जो भीरू होते हैं वे भगवान को उपलब्ध नहीं होते। भगवान ने कहा, "मैंने जो जीवन दिया है उसे विपरीत परिस्थितियों में आपने कैसे गुजारा, मैं उसका भी हिसाब रखता हूँ।"

इसलिए जब संकट आए तो बाहर की व्यवस्थाएँ तो हमें अपने कर्म से जुटानी हैं लेकिन अंतरमन की व्यवस्थाओं को अध्यात्म से सुनियोजित करना है। परिणामतः भीतर से हम शांत होंगे और बाहर बेहतर नवसृजन कर पाएंगे।

टेंटी का अचार

टेंटी राजस्थान और उत्तरप्रदेश में पाया जाने वाला फल है। इसके पेड़ को करील कहा जाता है। टेंटी का अचार बहुत ही स्वादिष्ट होता है। इसका अचार दो तरीके से बना सकते हैं। आइये हम जानते हैं कैसे बनाते हैं टेंटी का अचार।

आवश्यक सामग्री-टेंटी-250 ग्राम, नमक - 2 छोटी चम्मच, हल्दी पाउडर - 1 छोटी चम्मच, लाल मिर्च-1/4 छोटी चम्मच, राई (पीली सरसों)-2 टेबल स्पून, हींग-2-3 पिंच, सरसों का तेल-आधा कप, सिरका - 1 टेबल स्पून

विधि-टेंटी के डंठल तोड़कर साफ पानी से धो लीजिए। इनको एक बर्तन (यह चीनी मिट्टी या प्लास्टिक का) में भरकर इतना पानी भर दें कि टेंटी डूब जाएं और अब बर्तन को ढंककर धूप में रख दीजिए। टेंटी का पानी 2 दिन बाद बदलते रहें। 5-6 दिनों कें टेंटी का हरा रंग, पीले रंग में बदल जाता है। अब इनको 2 बार साफ पानी से धोकर छलनी में रखकर धूप में रख दीजिए। 2-3 घंटों में जब पानी सूख जाय तो अब हम इनका अचार बनाएंगे। सरसों के तेल को पैन में डालकर अच्छा गर्म कीजिए। कढ़ाई को गैस से उतार कर नीचे रख लीजिए और तेल को हल्का ठंडा कर लीजिए। हल्के गरम तेल में हल्दी पाउडर और हींग डाल दीजिए। टेंटी, नमक और लाल मिर्च भी डालकर अच्छी तरह मिला दीजिए। अचार में सिरका डालकर भी मिक्स कर दीजिए। टेंटी का अचार तैयार है। अचार को पूरी तरह ठंडा होने के बाद, कांच या प्लास्टिक के कंटेनर में भरकर रख लीजिए। हर 2-3 दिन में अचार को चमचे से चलाते रहिए। 8-10 दिन में अचार खट्टा और स्वादिष्ट होने लगता है। अब यह अचार आप खाने के लिए तैयार हैं।

▸▸ पुनम राठी, नागपुर
9970057423

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

माह में आपको धन लाभ होगा। संतान की उन्नति से मन प्रसन्न होगा। वाहन का क्रय -विक्रय, मनोरंजन में खर्च होगा। व्यापारिक उन्नति, कारोबार में सुधार, उन्नति यश व मान सम्मान बढ़ेगा। रुके कार्य पूर्ण होंगे। शुभाशुभ फल मिलेंगे। किन्तु भौतिक सुख-साधनों में कमी आयेगी। मानसिक तनाव के कारण स्वास्थ्य नरम-गरम बना रहेगा। यात्रा से लाभ पुराने मित्रों से मिलेंगे। घर में वाद-विवाद बना रहेगा। संतान भी कहना नहीं मानेगी। अचल-संपत्ति के विवाद से दूर रहें। राजकीय कार्यों में परेशानी बनी रहेगी।

वृषभ

यह माह पराक्रम-यश में वृद्धि पारिवारिक सुख संतान से सुख मिलेगा। नये अवसर उत्साह एवं मित्रों का सहयोग मिलेगा। समय प्रसन्नता में व्यतीत होगा। परिवार संग यात्रा करेंगे। परीक्षा में सफलता मिलेगी। नौकरी के लिये शुभ समय जल्दबाजी से कार्य बिगाड़ लेंगे। अनावश्यक व्यय होगा। भागदौड़ और व्यस्तता अधिक रहेगी। निर्णय सोच समझकर ले नहीं तो परेशानी उठना पड़ सकती है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। भविष्य के प्रति सचेत बने रहे। पद व अधिकार में बढ़ोत्तरी होगी। स्वजन से भेंट होने पर नये अवसर मिलेंगे। शुभसमाचार प्राप्त होगा।

मिथुन

इस माह आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भागदौड़ से थकावट होगी। परिवार का भरपूर सहयोग मिलेगा। जीवन साथी और पिता से वैचारिक मतान्तर बने रहेंगे। चोर आदि से भय, तबादला खर्च की अधिकता, शत्रु से परेशानी माता के स्वास्थ्य की चिंता। बच्चों के कार्यों से गर्व महसुस करेंगे। बौद्धिक क्षमता से मान-सम्मान व यश मिलेगा। भाई बंधु का सहयोग मिलेगा। मुकदमें से लाभ धर्म में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव बना रहेगा। जीवन साथी का पूरा सहयोग रहेगा।

कर्क

यह माह आपको विशिष्ट लोगों से संपर्क बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। अचानक लाभ, मनोकांक्षा पूर्ण होगी। रुका धन मिल जाने से खर्च अधिक होगा। परिवार में सुख बढ़ेगा। पुरस्कार उपहार प्राप्त होंगे। जीवन साथी और भाई से परेशानी बनी रहेगी। अपनी सुझबुझ से कार्य बना लेंगे। क्रोध से दूर रहें नहीं तो मान-सम्मान को ठेंस पहुचेगी।यात्रा के सुअवसर प्राप्त होंगे। मित्रों से सहयोग कुटुम्ब में वृद्धि होगी। न्यायालयिन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। अचानक शुभ समाचार मिलेंगे।

सिंह

इस माह सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। विरोधी परास्त होंगे। महिला के सहयोग से लाभ होगा। रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। व्यापार में लाभ परिवार का पूरा सहयोग मिलेगा। संतान के कार्यों से मन प्रसन्न, सुख-समृद्धि, यश बढेगा। जोखिम पूर्ण कार्यों में रुचि बढ़ेगी। लॉटरी, सट्टे व शेयर्स में धन हानि होगी। खर्च की अधिकता, रुका धन मिलेगा। गृहक्लेश से मन परेशान रहेगा। राजकीय कार्यों में परेशानी उठना पड़ेगी। नये विकार की समस्या बनी रहेगी।

कन्या

इस माह आपके सरकारी रुके कार्य पूर्ण होंगे। नई योजनाएँ बनायेंगे। आय में वृद्धि मान-सम्मान दाम्पत्य सुख बढ़ेगा। सश्रम सफलता मिलेगी। शत्रु से परेशानी उठना पड़ेगी। परिवार का सहयोग राज कार्य व शासन से सहयोग मिलेगा। पिता के स्वास्थ्य की चिंता जीवन साथी से वैचारिक मतान्तर, कार्य क्षेत्र में बढ़ोत्तरी और अधिका बढ़जाने से व्यस्तता भी बढ़ेगी। मनोविनोद व मनोरंजन खर्च, परिवार के साथ हास -परिहास में समय व्यतीत करेंगे। संतान की नाराजगी दूर होगी।

तुला

यह माह आपके लिये सामान्य रहेगा। परेशानियां बढ़ेगी। अपनो से हानि मानसिक अस्थिरता वाद-विवाद से परेशान व्यय की अधिकता बनी रहेगी। किन्तु कार्य क्षेत्र विस्तार से मन प्रसन्न, प्रियजनों से भेंट, शुभसमाचार मिलने की खुशी, धार्मिक कार्यों एवं सामाजिक उत्सवों में भाग लेंगे। जीवन साथी का पूरा सहयोग आलस्य छोड़े। पारिवारिक सुख बढ़ेगा। हास परिहास में समय बीतेगा। विरोधी परास्त होगे संतान के कार्य पूरे होंगे।

वृश्चिक

यह माह नई योजनाएं बनेगी। उत्साह बढ़ेगा। बुद्धि चातुर्य से लाभ कार्य क्षमता बढ़ने से लाभ ज्यादा होगा। रुका धन मिलेगा। धार्मिक कार्य होंगे। उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। राजकीय कार्य में लाभ, स्थान परिवर्तन, प्रियजनों की अभिलाषा पूर्ण होगी। संतान के कार्यों के लिये भागदौड़ बनी रहेगी। स्वजनों से मिलना लाभकारी रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। शारीरिक कष्ट से मन परेशान रहेगा। मित्रों से अचानक भेंट होगी। यात्रा के सुअवसर आयेंगे।

धनु

यह माह आपके लिये मन चाही सफलता देने वाला होगा। धन लाभ मनोकामना पूरी होगी। स्थान परिवर्तन मांगलिक कार्य पर खर्च होगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। धार्मिक, सामाजिक उत्सव में भाग लेंगे। बंधुओं से मिलन होगा। अचानक यात्रा के योग बनेंगे। विपरित योनी की ओर झुकाव रहने के कारण परेशानी उठना पड़ेगी। विद्यार्थी वर्ग को परीक्षा में सफलता मिलेगी। माता के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। जीवन साथी से मन मुटाव रहेगा। भागदौड़ अधिक रहेगी। व्यस्तता बढ़ेगी। किन्तु कार्य हो जाने के कारण मन प्रसन्न रहेगा।

मकर

यह माह आपके लिये अनुकूल समय है। आय में वृद्धि, संतान के कार्यों में सफलता, आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। सभी का सहयोग प्राप्त होगा। मन की इच्छा पूर्ण होगी। उत्साह शुभ समाचार पुराने मित्रों से भेंट होगी। परीक्षा में सफलता एवं बौद्धि कार्यों में लाभ होगा। मनोरंजन मनोविनोद का वातावरण बनेगा। लॉटरी-सट्टा शेयर आदि से दूर रहें। स्थान परिवर्तन होगा। व्यापारिक स्थिति में सुधार होगा। आलस्य को त्यागे। शत्रु परास्त होंगे। मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा। जीवन साथी को कष्ट, स्वास्थ्य से परेशानी संतान सुख मिलेगा।

कुम्भ

यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। नये अवसर प्राप्त होंगे। मन में उत्साह सामाजिक यश बढ़ेग। धन लाभ कार्य क्षमता बढ़ेगी। शुभ कार्यों में रुचि, मित्रों का सहयोग मिलेगा। किन्तु संतान के कार्यों में अड़चन आएगी। खर्च की अधिकता रहेगी। मन अशान्त, क्रोध के कारण बनते कार्य बिगाड़ लेंगे। शारीरिक रूप से अस्वस्थ महसूस करेंगे। जिम्मेदारियाँ बढ़ेगी। मानहानि का भय रहेगा। विपरित परिस्थितियों से जुझेंगे। चोट लगने का भय प्रिय वस्तु गुम हो जाने से दुःख होगा।

मीन

यह माह स्थान परिवर्तन अभीष्ट की प्राप्ति होने से मन प्रसन्न होगा। भूमि-भवन खरीदने की सोचेंगे। स्वयं के प्रयास से सफल होंगे। शिक्षा में आगे बढ़ेगें। बुजुर्गों की सहायता से कार्य बना लेंगे। मित्रों से लाभ होगा। मांगलिक कार्यों पर खर्च जीवन, साथी का सहयोग, राजकीय लाभ, यश बढ़ेगा। भाई से विवाद होगा। संतान की ओर से खुशी मिलेगी। स्वास्थ्य गड़बड़ बना रहेगा। धैर्य व सहनशीलता बनाएं रखें। पास की यात्रा करेंगे। क्रोध से कार्य को बिगाड़ लेंगे। मानसिक तनाव बना रहेगा।

श्रद्धांजलि

श्री कन्हैयालाल राठी

खामगांव . प्रतिष्ठित व्यावसायी श्री कन्हैयालाल मदनलाल राठी का हाल में उम्र 55 वर्ष की अवस्था में दुःखद निधन हो गया। आप अपने पीछे 2 बड़े भाई, 4 बहनों तथा 1 पुत्र व पुत्री एवं पत्नी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती शिवप्यारी देवी

नागपुर. समाज सदस्य विश्वम्भरलाला, संपतकुमार और मनोहरलाल झंवर की माता श्रीमती शिवप्यारी देवी श्रीवल्लभ झंवर का 91 वर्ष की उम्र में गत 16 मार्च 2019 को निधन हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती पुष्पादेवी धुप्पड़

उदयपुर. समाज की वरिष्ठ श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी श्री अर्जुनलाल धुप्पड़ का गत 13 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पुत्र जमनेश व अनिल धुप्पड़ सहित पौत्र-पौत्री, जेठ-जेठानी आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती कांतादेवी लड्ढा

धामनोद. समाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती कांतादेवी लड्ढा का गत दिनों निधन हो गया। आप स्व. श्री रामचंद्र लड्ढा की धर्मपत्नी एवं महेश लड्ढा की माताजी एवं उज्जैन निवासी गोविन्द चितलांग्या की सासू मां थी। निधन पश्चात परिजनों ने नेत्रदान करवाए।

श्री सत्यनारायण तोषनीवाल

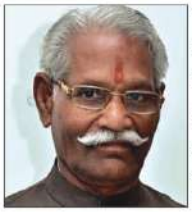

भीलवाड़ा. समाज सदस्य राधेश्याम, रमेशचंद्र, सुरेश तोषनीवाल के अग्रज व नवीन, मनोज, हितेश तोषनीवाल व संगीता लड्ढा के पिता श्री सत्यनारायण तोषनीवाल का आकस्मिक देवलोक गमन गत 7 अप्रैल 2019 को हो गया। तोषनीवाल साखड़ा ग्राम के पूर्व सरपंच एवं भवन प्रमुख व पूर्व अध्यक्ष संजय कॉलोनी क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा थे।

श्री रमेशचंद्र नामधरानी

भीलवाड़ा. समाज सदस्य अरविंद के पिता व राघव नामधरानी के दादाजी श्री रमेशचंद्र नामधरानी का आकस्मिक निधन गत 13 अप्रैल को हो गया। श्री नामधरानी भोपालगंज क्षेत्रीय माहेश्वरी समाज अध्यक्ष व माहेश्वरी समाज संपत्ति ट्रस्ट उपाध्यक्ष थे। अन्य कई धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े थे। दिवंगत श्री नामधरानी का परिजनों व स्नेहीजनों ने नेत्रदान करवा कर मानवता की सेवा की गई।

श्रीमती अयोध्याबाई सोनी

भीलवाड़ा. समाज सदस्य प्रहलादराय सोनी की माता श्रीमती अयोध्या बाई सोनी का 90 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास गत 22 मार्च 2019 को हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती कांतादेवी मोदी

भीलवाड़ा. समाज सदस्य प्रेमकिशन मोदी की धर्मपत्नी एवं मनोज व मनीष मोदी की माता श्रीमती कांतादेवी मोदी का स्वर्गवास गत 17 अप्रैल को हो गया। आप अपने पीछे शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्री कन्हैयालाल सोनी

इंदौर. वरिष्ठ समाज सदस्य, समाजसेवी, कुष्ठ सेवा संस्था व श्री महेश वाचनालय तथा माहेश्वरी समाज अध्यक्ष श्रीनिवास सोनी के एकमात्र पुत्र श्री कन्हैयालाल सोनी का अल्प बीमारी के बाद असामकिय निधन हो गया। वे रामगोपाल, किशनलाल सोमानी के भानेज तथा बदनावर वाले रामेश्वर प्रकाशजी माहेश्वरी के दामाद थे। श्री सोनी अपने पीछे माता-पिता, पत्नी, बहन व बच्चों से भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

हिंदी माह में जाने अंग्रेजी माह

जनवरी	-	पौष-माघ	जुलाई	-	आषाढ़-श्रावण
फरवरी	-	माघ-फाल्गुन	अगस्त	-	श्रावण-भाद्रपद
मार्च	-	फाल्गुन-चैत्र	सितंबर	-	भाद्रपद्र-आश्विन
अप्रैल	-	चैत्र-वैशाख	अक्टूबर	-	आश्विन-कार्तिक
मई	-	वैशाख-ज्येष्ठ	नवंबर	-	कार्तिक मार्गशीर्ष
जून	-	ज्येष्ठ-आषाढ़	दिसंबर	-	मार्गशीर्ष-पौष।

श्रीमती अयोध्यादेवी काकाणी

अजमेर. समाज सदस्य जसराज काकाणी की धर्मपत्नी श्रीमती अयोध्यादेवी काकाणी का 83 वर्ष की अवस्था में गत 15 अप्रैल को स्वर्गवास हो गया। आप अपने पीछे दो पुत्र जगदीश व कमल सहित पौत्र-प्रपौत्र आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्री माहेश्वरी टाईम्स

का आगामी विशेषांक होगा
समाज का गौरवशाली संस्कृति को समर्पित

महेश नवमी विशेषांक

इसमें ऐसे संग्रहणीय आलेख होंगे जो बनाऐंगे इसे अनमोल

अपनों को दे अपनी बधाई

क्या आप चाहते है कि इस पावन पर्व पर सभी बन्धुओं तक आपकी शुभकामनाएं पहुंचे। तो हम भेजेंगे आपकी शुभकामनाऐं, आपके अपने भाई बन्धुओं तक मात्र **2500/-** में। इसमें पहुंचाना होगा आपका फोटो, परिचय एवं पता

व्यवसाय को भी दे सकते है ख्याति

यदि आप चाहते है देना अपनों को इस पावन पर्व की बधाई तो आप इस विशेषांक में प्रकाशित करवा सकते है, अपने प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान के विज्ञापन के साथ

शुभकामना संदेश

श्री माहेश्वरी टाईम्स पहुंचाऐगी
चार लाख से भी अधिक पाठको के दिलो तक

विज्ञापन दर

कव्हर अन्तिम पृष्ठ	रु.	31,000/-
कव्हर पृष्ठ 2 / 3	रु.	25,000/-
पूर्ण पृष्ठ	रु.	15,000/-
आधा पृष्ठ	रु.	10,000/-
स्ट्रीप	रु.	5,000/-

SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • F : +91 - 22 - 2491 2586 • E : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • F : +91 - 265 - 2321 894 • E : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 MAY 2019

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/Srimaheshwaritimesmagazine
http://srimaheshwaritimes.blogspot.in